छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—दिसम्बर, 2012

कक्षा—10वीं

विषय—हिन्दी

सेट—1

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—(i) प्रश्न क्रमांक 1 में 22 प्रश्न हैं। प्रत्येक में 1 अंक है। प्रश्न बहुविकल्पीय/अतिलघु उत्तरीय हैं। इसमें अ, ब, स, एवं द चार खण्ड हैं।

(ii) प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 4 अंक हैं। शब्द सीमा 75 शब्द।

(iii) प्रश्न क्रमांक 10 से 15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 6 अंक हैं। शब्द सीमा 150 शब्द।

(iv) प्रश्न क्रमांक 16 निबन्धात्मक प्रश्न है। इसमें 10 अंक हैं। शब्द सीमा 250 शब्द।

(खण्ड—अ)

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— **6**

(i) राम को ..... वर्ष का वनवास मिला।

उत्तर—चौदह।

(ii) कबीर ने आँगन में कुटी छबाकर ..... को बसाने के लिए कहा है।

उत्तर—निंदक।

(iii) पुराना का पर्यायवाची ..... है।

उत्तर—प्राचीन।

(iv) शब्द शक्ति ..... प्रकार होती है।

उत्तर—तीन।

(v) रौद्र रस का स्थाई भाव ..... है।

उत्तर—क्रोध।

(vi) 'पीपर-पात सरिस मन डोला' में ..... अलंकार है।

उत्तर—उपमा।

(खण्ड—ब)

सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए— **5**

(i) रहीम ने धागों की तुलना किससे की है ?

(क) गरीबी (ख) प्रेम (ग) सुख (घ) क्रोध

उत्तर—(ख) प्रेम।

(ii) दोहा छंद में कितनी पंक्तियाँ होती हैं ?

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार

उत्तर—(घ) चार।

(iii) बयार कब चली ?

(क) मेघ आने से पहले (ख) मेघ के साथ

(ग) चली ही नहीं (घ) मेघ जाने के बाद

उत्तर—(क) मेघ आने से पहले।

(iv) मनुष्य का शरीर है—

(क) प्रव पिंड (ख) जड़ पिंड (ग) गैस पिंड (घ) चेतन पिंड

उत्तर—(घ) चेतन पिंड।

(v) 'नयन' शब्द का संधि विच्छेद है—

(क) ने + अन (ख) नय + न

(ग) न + अन: (घ) नय + अन्

उत्तर—(क) ने + अन।

(खण्ड—स)

उचित सम्बन्ध जोड़िये— **5**

(i)	कुरुक्षेत्र	—	राम-रावण युद्ध
(ii)	लंका	—	कौरव-पाण्डव युद्ध
(iii)	वीरांगना	—	एवरेस्ट चढ़ाई
(iv)	कर्ण	—	केदारनाथ
(v)	बछेन्द्रीपाल	—	कान

उत्तर—

(i) कुरुक्षेत्र	—	कौरव-पाण्डव युद्ध
(ii) लंका	—	राम-रावण युद्ध
(iii) वीरांगना	—	केदारनाथ
(iv) कर्ण	—	कान
(v) बछेन्प्रीपाल	—	एवरेस्ट चढ़ाई

(खण्ड—द)

एक वाक्य में उत्तर दीजिए— **6**

(i) एलर्जी किसे कहते हैं ?

उत्तर—खाद्य पदार्थ या दवा का माफिक (अनुकूल) न होना विज्ञान की भाषा में एलर्जी कहा जाता है।

(ii) 'मेघ आए' कविता में किसका वर्णन किया गया है ?

उत्तर—वर्षा ऋतु का।

(iii) कौसानी की तुलना किससे की गई है ?

उत्तर—स्विट्जरलैण्ड से।

(iv) मीरा के पदों में कौन-सी भावना है ?

उत्तर—समर्पण की भावना।

(v) कबीर ने गुरु और शिष्य के सम्बन्ध को किस रूप में बताया है ?

उत्तर—कबीर ने गुरु और शिष्य को कुम्हार व घड़ा जैसा सम्बन्ध बताया है, क्योंकि कुम्हार घड़ा बनाता है, उसी ध्कार गुरु शिष्य को तैयार करता है। कुम्हार और घड़े के रूप में ।

(vi) जड़मति व्यक्ति भी सुजान किस तरह बन जाता है ?

उत्तर—जड़मति व्यक्ति भी निरन्तर अभ्यास करके ज्ञानवान व चतुर बन सकता है।

प्रश्न 2. कबीर ने गुरु को कुम्हार क्यों माना है ? **4**

उत्तर—कबीर ने गुरु को इसलिए कुम्हार माना है क्योंकि कुम्हार जैसा घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्यों को तैयार करता है। गुरु भी कुम्हार की तरह अपने शिष्यों को अन्दर से सहायता देता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें धेत्साहित करता है। जिस ध्कार कुम्हार घड़े को बाहर से थपकी से चोट करता जाता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को बाहर से डाँटता-डपटता है, उनकी कमजोरियों को बताता है और उन्हें सुधारने का निर्देश देता है।

अथवा

प्रश्न—रहीम ने पानी के क्या-क्या अर्थ बताए हैं ?

उत्तर—रहीम ने पानी के अर्थ चमक, प्रतिष्ठा और जल बताये हैं। जैसे मोती का पानी (चमक) उतर जाने पर उसकी कान्ति नष्ट हो जाती है वैसे ही मनुष्य का पानी अर्थात् प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने पर वह समाज की नजरों में गिर जाता है। चूने का पानी निकल जाने पर उसका कोई महत्व नहीं रहता है।

प्रश्न 3. रस किसे कहते हैं ? रस के कितने अंग हैं ? नाम लिखिए। **4**

उत्तर—रस का अर्थ—किसी काव्य या साहित्य को पढ़ने या सुनने, देखने से पाठक, श्रोता या दर्शक को जिस आनन्द की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं।

रस के अंग—रस के चार अंग होते हैं—

(i) स्थायी भाव, (ii) विभाव, (iii) अनुभाव, (iv) संचारी भाव।

अथवा

प्रश्न—स्थायी भाव व संचारी भाव में अन्तर लिखिए।

उत्तर—(i) स्थायी भाव उत्पन्न होकर नष्ट नहीं होते हैं, संचारी भाव क्षण-प्रतिक्षण बनते-बिगड़ते रहते हैं। (ii) प्रत्येक रस का स्थायी भाव होता है किन्तु एक रस के अनेक संचारी भाव हो सकते हैं। (iii) स्थायी भावों की संख्या दस है, संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गयी है।

प्रश्न 4. लक्षणा शब्द-शक्ति को उदाहरण सहित समझाइए। **4**

उत्तर—मुख्य अर्थ के बाधा होने पर प्रयोजन के आधार पर जिस शक्ति के द्वारा अभिधेयार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ का बोध होता है उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं।

उदाहरण—(i) सुरेश तो गधा है, (ii) वह शेर है।

अथवा

प्रश्न—व्यंजना शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—जहाँ किसी कथन के सामान्य अर्थ से भिन्न कोई अन्य अर्थ व्यक्त होता है वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण—लो सूरज डूब गया।

प्रश्न 5. छंद के अंग कौन-कौन से होते हैं ? किसी एक अंग का वर्णन कीजिए। **4**

उत्तर—छंद के विभिन्न अंग होते हैं—

(1) पाद या चरण, (2) वर्ण, (3) मात्रा, (4) यति, (5) गति, (6) तुक आदि।

चरण—छंद की प्रत्येक पंक्ति अथवा पंक्ति के अंग-अंग को चरण की संज्ञा दी जाती है। चरण को पद या पाद भी कहते हैं। छंद दो, चार, छः चरणों वाले होते हैं।

चरण दो प्रकार के होते हैं—(1) सम चरण, (2) विषम चरण।

प्रथम व तृतीय चरण को विषम और दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं।

अथवा

प्रश्न—"जानवर हैं, फर्क करना नहीं जानते" कहकर जानवर और मनुष्य में क्या अन्तर बताया गया है ?

उत्तर—"जानवर हैं, फर्क करना नहीं जानते", कहकर जानवर और मनुष्य में यह अन्तर बताया गया है कि परस्पर घृणा, द्वेष और भेदभव की कथित दुष्प्रवृत्ति मनुष्य के भीतर ही होती है, जानवरों में नहीं। जानवर एक-दूसरे की गम्भीर क्षति और हत्या जैसे अपराध नहीं करते।

प्रश्न 6. नारी की तुलना लोहे से क्यों की गई है ? **4**

उत्तर—नारी की तुलना लोहे से की गई है, क्योंकि जैसे लोहा बर्तन, औजार, हथियार आदि अनेक रूपों में ढलता है, वैसे ही नारी भी दुःख, तकलीफ और पीड़ा सहकर अनेक रूपों में ढलती है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए, अपने सम्मान के लिए लक्ष्मीबाई की तरह वीरांगना बन जाती है, तो कभी दीन-दुःखियों के दुःख कम करने के लिए मदर टेरेसा बन जाती है।

अथवा

दोहा छंद को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—लक्षण—इसके प्रत्येक चार चरण होते हैं। इसके विषम (प्रथम व तृतीय) चरण में 13–13 मात्राएँ तथा सम (द्वितीय एवं चतुर्थ) चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं, इसके विषम चरणों के अन्त में गुरु-लघु (ऽ, ।) नहीं होना चाहिए।

भूमि जीव संकुल रहे, गए सरद रितु पाई।
सदगुरु मिले जाहिं, संसय भ्रम समुदाई॥

प्रश्न 7. शहरी भाग-दौड़ की जिंदगी की तुलना ग्राम्य जीवन से किस प्रकार की गई है ? **4**

उत्तर—शहरी भाग-दौड़ से भरी जिन्दगी की तुलना ग्राम्य जीवन के शान्त और अ त्रिम सौन्दर्य से की गई है। गाँव का वातावरण बहुत ही स्वच्छ और निर्मल होता है। शहर के भीड़-भाड़ भरे वातावरण में कई प्रकार की अशुद्धियाँ घुली रहती हैं। शहर के लोग जब गाँव आते हैं तो गाँव की हर चीज आनन्ददायक लगती है। गाँव की सादगी, सरलता, शुद्धता सुखद अनुभूति प्रदान करती है।

अथवा

प्रश्न—मानव जीवन के लिए अधिक पानी पीना लाभकारी क्यों है ?

उत्तर—मुँह से बनने वाली लार भोजन को सुपाच्य बनाने के साथ-साथ रोगाणुओं को समाप्त करती है। शेष बचे रोगाणुओं को आमाशय में स्थित अम्ल नष्ट करता है। इसके पश्चात् अवशिष्ट रोगाणुओं को हमारे पेट में मौजूद पानी, पसीने तथा मूत्र के द्वारा बाहर कर देता है। अतः हमें अधि ाक पानी पीने की सलाह दी जाती है। अधिक पानी पीकर हम अपने शरीर रूपी किले से रोगाणुओं को बिना नुकसान पहुँचाए ही शरीर के बाहर का रास्ता दिखा देते हैं।

प्रश्न 8. बहादुर की पारिवारिक स्थिति का उल्लेख कीजिए। **4**

उत्तर—बहादुर का गाँव बिहार और नेपाल की सीमा पर था। उसके "ता युद्ध में मारे गये थे। उसकी माँ ही सारे परिवार का भरण-पोषण करती थी। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसकी माँ चाहती थी कि बहादुर काम में हाथ बँटाए।

अथवा

प्रश्न—बस और सरकार तन्त्र की किन्हीं तीन समानताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—रोडवेज की बस अपनी शान में, चाल में सरकार के समान थी। बिल्कुल सरकारी स्वभाव। पहले लेट हुई फिर ओवरलोड।

एक आदमी को बस से उतारना,

सरकार में सूबाई मन्त्री की कैबिनेट से ड्रॉप करना,

बस का इंजन किसी अफसर के दिमाग की तरह गर्म हो गया था। उसे शान्त करने के लिए ठण्डा पानी डाला गया, जैसे—किसी नब्बे वर्ष के मन्त्री को ऑक्सीजन दी जा रही हो।

प्रश्न 9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए— **4**

(i) गाय बोल रही है।

शुद्ध वाक्य—गाय रम्भा रही है।

(ii) लता मंगेशकर एक प्रसिद्ध गायक है।

शुद्ध वाक्य—लता मंगेशकर एक प्रसिद्ध गायिका है।

(iii) वृक्षों पर पक्षी बैठा है।

शुद्ध वाक्य—वृक्षों पर पक्षी बैठे हैं।

(iv) मेरे को पुस्तक खरीदना है।

शुद्ध वाक्य—मुझे पुस्तक खरीदनी है।

अथवा

प्रश्न—निम्नांकित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—

(i) वट	तद्भव—बड़	(ii) मयूर	तद्भव—मोर
(iii) चित्रकार	तद्भव—चितेरा	(iv) अश्रु	तद्भव—आँसू

प्रश्न 10. लेखक धर्मवीर भारती की दो रचनाएँ भाषा एवं शैली के आधार पर दीजिए। **6**

उत्तर— **धर्मवीर भारती**

दो रचनाएँ—(1) गुनाहों का देवता, (2) अंधायुग।

भाषा-शैली—लेखक ने अपनी भाषा में ध्तीकों एवं बिम्बों का ध्योग बहुत ही सार्थक रूप में किया है। गद्य में भी वे बिम्बों और ध्तीकों की काव्य भाषा का ध्योग सुन्दरतापूर्ण करते हैं। भाषा ध्तीकों के कारण कहीं-कहीं दुरूह लगती है किन्तु भाषा में लयात्मकता दिखाई देती है। इनकी आकर्षण भाषा-शैली आत्मीयता और स्वच्छंदता को स्पष्ट करती है।

अथवा

प्रश्न—जयशंकर प्रसाद की दो रचनाएँ, भावपक्ष एवं कलापक्ष लिखिए।

उत्तर— **जयशंकर प्रसाद**

दो रचनाएँ—तितली, कंकाल।

भावपक्ष—ध्साद जी छायावाद के आधार स्तम्भ हैं। आपने ध ति का बहुत ही सुन्दर मानवीकरण किया है। ध्साद के साहित्य में भारत के अतीत के दर्शन होते हैं। आपके काव्य में रहस्यमयी सत्ता का आभास मिलता है।

कलापक्ष—जयशंकर ध्साद खड़ी बोली के बहुत ही समर्थ कवि थे। भाषा व्याकरणसम्मत है, किन्तु सरल एवं सुगम है। संस् त के शब्दों का अत्यधिक ध्योग होने पर भी भाषा क्लिष्ट नहीं हुई है। ध्साद जी ने मानवीकरण, उपमा, उत्ध्ेक्षा एवं रूपक आदि अलंकारों का ध्योग अधिक किया है।

प्रश्न 11. समाचार कितने प्रकार के होते हैं ? हिन्दी के किन्हीं चार अखबारों के नाम लिखिए। **6**

उत्तर—समाचार के प्रकार—

(1) राजनीतिक समाचार, (2) सामाजिक समाचार,

(3) व्यापार, अर्थ, जगत समाचार, (4) खेल जगत समाचार,

(5) विविध समाचार।

अखबारों के नाम—(1) राजनीतिक—राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय

(2) सामाजिक—राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय

(3) व्यापार जगत

(4) हिन्दी के अखबार—(i) नवभारत,

(ii) दैनिक भास्कर।

अथवा

प्रश्न—लोकोक्तियाँ और मुहावरे में सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिए।

लोकोक्तियाँ—इसको जनोक्ति, कहावत तथा जनश्रुति भी कहते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है लोक + उक्ति अर्थात् लोगों के कहने योग्य अथवा लोगों द्वारा कहा हुआ अनोखा वाक्य। इसका प्रयोग बातचीत के समय बात को प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।

उदाहरण—कंगाली में आटा गीला = मुसीबतों में और मुसीबत।

मुहावरा—जिस वक्यांश का शाब्दिक अर्थ न लेकर लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है, वह मुहावरा कहलाता है।

उदाहरण—अंधे की लाठी = एकमात्र सहारा।

प्रश्न 12. प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला आरंग को स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु आवेदन पत्र लिखिए। **6**

श्रीमान् धचार्य महोदय

शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला

आरंग (रायपुर)

विषय—शाला स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु।

महोदय,

मान्यवर महोदय, विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 9वीं का नियमित छात्र हूँ। मेरे "ता का स्थानान्तरण यहाँ से भिलाई हो गया है। इस कारण मैं अपना अध्ययन इस विद्यालय में निरन्तर नहीं कर सकता हूँ। अत: मुझे विद्यालय छोड़ने का ध्माण-पत्र ध्दान करने की पा करें। मैंने विद्यालय का शुल्क, पुस्तकें आदि सभी वस्तुएँ जमा कर दी हैं।

18, नवम्बर, 2013

आपका आज्ञाकारी शिष्य

यशवंत

अथवा

प्रश्न—अपने मित्र को जन्मदिन पर एक बधाई पत्र लिखिए।

प्रिय मित्र रवि, रायपुर, 15 अगस्त, 2013

अनेकानेक हार्दिक बधाइयाँ

तुम्हारी 16वीं वर्षगाँठ में मैं किसी कारणवश अनुपस्थित रहा, इसका मुझे खेद है, परन्तु मैंने पूरे हृदय से ईश्वर से तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य एवं लम्बी उम्र की कामना की है। मुझे विश्वास है

कि तुमने अपना जन्मदिन हमेशा की तरह पूरे हर्षोल्लास से मनाया होगा। तुमने भविष्य के लिये नई योजनाएँ भी बनाई होंगी, साथ ही कोई एक बुरी आदत भी छोड़ी होगी, जैसा हम दोनों हर जन्मदिन पर करते आ रहे हैं। मुझे पत्र में जरूर बताना। ईश्वर तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करे। इसी के साथ मैं अपने कलम को विराम देता हूँ। पत्र जरूर लिखना। माता-"ता को ध्णाम कहना तथा छोटों को स्नेह।

तुम्हारा शुभेच्छु

विकास

प्रश्न 13. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सन्दर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 6

बनवारी की चिट्ठी आई तो सुमित्रा के साथ लाजो भी खिल उठी। उसने सुना कि सुमित्रा लोगों को सुना-सुनाकर कह रही थी, मेरा अफसर बेटा मुझे लेने आ रहा है। मैं कहती थी न वह किसी लाचारी में फँसा होगा। आज लोगों को परतीति हुई कि नहीं ? और अपने बेटे को माँ ही पहचान सकती है। दूसरे लोग क्या पहचानेंगे।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के कहानी 'सरकारी मकान' से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. रामदरश मिश्रजी हैं।

प्रसंग—शहर से अपने बेटे की चिट्ठी आने पर सुमित्रा की प्रतिक्रिया।

व्याख्या—सुमित्रा, लाजो की पक्की सहेली है। सुमित्रा का बेटा शहर में रहता है। वह शहर में नौकरी करता है, बड़ा अफसर है, वह शहर से लाजो को ले जाने के लिए आता है, जिससे सुमित्रा के साथ-साथ लाजो भी बहुत खुश होती है, सुमित्रा लोगों को बताती है कि वह मेरा बेटा है। वह अपने आपको नहीं जानता है कि वह सुमित्रा का बेटा है।

अथवा

पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबकुछ छिन गया हो या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अन्दर ही सहेजने में सब आत्मलीन हों।

व्याख्या—पर्वतीय प्रदेश के सौन्दर्य का अवलोकन करने लेखक अपने मित्र के साथ गए। उस नैसर्गिक सुन्दरता को देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये। सूर्यास्त हो गया। संध्याकाल होने पर धीरे-धीरे अन्धकार होने लगा। अँधेरे की कालिमा ने नेत्रों से ओझल होते सौन्दर्य को जाते देखकर सभी चुपचाप हो गए। उनकी चुप्पी से ऐसा अनुभव होने लगा मानो उनका सबकुछ छिन गया हो। वे सौन्दर्य के रस को अपनी आत्मा में केन्द्रित करने में लगे हुए हैं अर्थात् वे सौन्दर्य को अपनी आत्मा में समा लेना चाहते हैं।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—6

(1) आवत है वन ते मन मोहन, गाइन संग लसै ब्रज-ग्वाला।
बेनु बजावत गावत गीत, अभीत इतै करिगौ कछु ख्याला।
हेरत हेरि चकै चहुँ ओर ते झाँकी झरोखन तै ब्रजबाला।
देखि सुआनन को रसखानि तज्यौ सब द्योंस को ताप कसाला।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य पाठ्य-पुस्तक के 'सवैया' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता रसखान है।

प्रसंग—श्री ष्ण के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। साथ-साथ बछड़े और ब्रज के ग्वाल-बाल भी सुशोभित हो रहे हैं। वे अपनी वंशी बजाते गाते हुए निर्भीक भाव से अपनी गायों के साथ गाँव में प्रवेश करते हैं। जैसे ही उनकी वंशी की सुरीली मन भावन ध्वनि गो"यों के कानों में पड़ती हैं, वे चकित होकर चारों ओर देखने लगती हैं। अपने मन भावन के दर्शन के लिये वे व्याकुलता से घर के झरोखों से झाँकती हैं। रसखान कवि कहते हैं कि जैसे ही ष्ण के सुन्दर रूप

के दर्शन गो"यों को होते हैं, उनके दैहिक, भौतिक ताप का हरण हो जाता है अत: उन्हें अलौकिक आनन्द की ध्प्ति हो जाती है। दिनभर की परेशानियाँ, कष्ट दूर हो जाते हैं और वे ष्ण के सुन्दर मुख को देखकर प्रसन्न हो जाती हैं।

विशेष—(1) सवैया छंद है।

(2) 'हेरत हेरि ..... कुछ ख्याला' में वृत्यानुप्रास एवं छेकानुप्रास अलंकार है।

(3) श्रृंगार रस है।

अथवा

बीती विभावरी जाग री
अंबर-पनघट में डुबो रही
तारा घट उषा नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा॥

सन्दर्भ—यह पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'बीती विभावरी जाग री' कविता से ली गई हैं।

प्रसंग—सुबह-सबेरे के दृश्य का क्रियाकलापों के माध्यम से चित्रण किया गया है।

व्याख्या—एक सखी दूसरी से कह रही है कि हे सखी! उठ अब रात बीत चुकी है। उषा रूपी स्त्री, आकाश रूपी पनघट में, तारों रूपी घड़ों को डुबो रही है। पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा है। धीमी-धीमी हवा चलने से कोपलें थिरकने लगी हैं।

विशेष—ध ति का मानवीकरण।

अलंकार—अंबर-पनघट, रूपक अलंकार, तत्सम शब्दों का ध्योग।

प्रश्न 15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 6

उत्तर—"साहित्यकार को सृजन की प्रेरणा अपने समाज से ही प्राप्त होती है। उसके समाज की परिस्थितियों और समस्याएँ उसके सृजन का आधार बनती हैं। समाज के आधार पर साहित्य का प्रासाद खड़ा होता है, साहित्य समाज की प्रतिध्वनि है। उसमें जो प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वह समाज का प्रतिबिम्ब होता है। इसी कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।"

(अ) साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि क्यों कहा गया है ?

(ब) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

(स) इस गद्यांश का सारांश तीस शब्दों में लिखिए।

(द) साहित्यकार को सृजन की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त होती है ?

उत्तर—(अ) समाज में जो भी घटनाएँ घटती हैं, उन्हीं का वर्णन साहित्य में किया जाता है, इसलिए साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि कहा जाता है।

(ब) **शीर्षक**—(1) साहित्य-समाज का दर्पण,

(2) साहित्य-समाज का प्रतिबिम्ब।

(स) सारांश—साहित्यकार समाज में घटित होने वाली घटनाओं और समस्याओं से प्रेरित होकर साहित्य की रचना करता है। इसलिए साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि एवं दर्पण कहा जाता है। किसी समाज के विषय में यदि जानना हो तो समाज का साहित्य पढ़ना चाहिए।

(द) साहित्यकार को सृजन की प्रेरणा अपने समाज से ही प्राप्त होती है।

प्रश्न 16. किसी एक विषय पर 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए— 10

(1) जीवन में खेलों का महत्व
(2) वन महोत्सव
(3) अनुशासन की महत्ता
(4) समाचार-पत्र

उत्तर— **(1) जीवन में खेलों का महत्व**

रूपरेखा—1. प्रस्तावना, 2. खेलों का महत्व, 3. खेलों से लाभ, 4. उपसंहार।

प्रस्तावना—जीवन में खेलों का महत्व है। पुस्तकों के अध्ययन से हमारी मानसिक क्षुधा शान्त होती है, परन्तु खेलों से मानव के आर्थिक, मानसिक, स्वास्थ्यगत विकास में बड़ी सहायता मिलती है। छात्र दिन भर के अभ्यास के बाद शाम को त्र ीड़ा-भूमि में आ जाता है तो उसका शरीर पुष्ट होता है और शाम को विद्याध्ययन में भी उसका मन लगता है, इसलिए पढ़ाई के साथ छात्र जीवन में खेलों का भी अत्यधिक मह व है। इसलिए विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ खेलों की भी व्यवस्था होती है।

खेलों का महत्व—खेल स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। खेल हमें शक्ति, सजगता एवं अच्छा स्वास्थ्य ध्दान करते हैं। वे हमें कार्यशक्ति एवं स्फूर्ति से परिपूर्ण करते हैं। वे हमारे आलस्य एवं नीरसता दूर कर मन और आत्मा में ताजगी भरते हैं। जो खेल नहीं जानते वे जीना नहीं जानते। क्योंकि स्वास्थ्य के बिना स्फूर्ति नहीं, स्फूर्ति के बिना कार्य नहीं, इसलिए खेल मानव जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण जाने जाते हैं।

खेलना बालकों को सबसे अधिक प्रिय लगता है, कितनी ही भूख लगी हो, कितना ही आवश्यक कार्य हो, बालक खेल को कभी नहीं छोड़ेगा। खेल में लीन बालक को माता-"ता पुकारते-पुकारते थक जाते हैं, पर बालक घर आने का नाम तक नहीं लेता।

कुछ विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक खेल को पढ़ाई में बाधक समझते हैं, परन्तु यह उनकी भूल है। खेल से बिल्कुल विमुख रहने वाले एवं पुस्तकों के कीड़े बने विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य से हाथ ो बैठते हैं, किन्तु हर समय खेलों में ही व्यस्त रहना भी अच्छा नहीं। मगर शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिए तथा मस्तिष्क को ताजा रखने के लिए नियमपूर्वक थोड़ा-सा खेलना भी बहुत आवश्यक है।

जो लोग खेल की महत्ता को समझते हैं और नियमपूर्वक खेलते हैं, वे पुरुषार्थी होते हैं। वे दिनभर काम करते हुए थकते नहीं। उनकी आयु भी अधिक होती है, क्योंकि वे प्रतिदिन खेल-कूदकर ताजे हो जाते हैं। यूरोप के लोग खेलना आवश्यक समझकर प्रतिदिन खेलते हैं, यही कारण है कि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से वे अपेक्षा त अधिक स्वस्थ और उन्नत हैं । कभी भारतवासी भी बड़े माने हुए खिलाड़ी हुआ करते थे, पर एक समय ऐसा आया, जब वे खेलना केवल बच्चों की जरूरत समझकर स्वयं दिन-रात व्यापार-धन्धों आदि में फँस गये, इसलिए इस क्षेत्र में उनकी उन्नति हो गयी। पर वे अब इस दिशा में फिर से सचेत हुए हैं और खेलों में पूरा योग देने लगे हैं। हॉकी, त्ति केट, कबड्डी, मल्ल-युद्ध और तैरना आदि खेलों में भारत के खिलाड़ी संसार के अच्छे खिलाड़ियों में गिने जाते हैं। अन्य खेलों में भी वे अब प्रगति कर रहे हैं।

खेलों से लाभ—खेलों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनसे लोगों में बाँकापन, उदारता और सहनशीलता आदि गुण बढ़ते हैं। ये गुण नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक उन्नति के लिए बहुत आवश्यक हैं। बाँके, उदार और सहनशील नेताओं, सैनिकों और कार्यकर्ताओं से ही देश आगे बढ़ता है। खेलों से मनुष्य का ओछापन और संकुचित वृत्ति नष्ट हो जाती है।

वैसे तो ध्तिद्वन्द्विता अर्थात् मुकाबले में बढ़ने-चढ़ने का भाव, खेलों का एक आवश्यक गुण है, पर कभी-कभी खेल में ही संघर्ष या लड़ाई-झगड़े भी हो जाते हैं, परन्तु यह 'खेल' का अपराध नहीं, लड़ने वालों का दोष है। हमें इस दोष को दूर करने का ध्यास करना चाहिए।

उपसंहार—चौपड़, ताश, शतरंज आदि कई खेल घर के भीतर ही होते हैं। इनसे मनोरंजन

होता है, व्यायाम नहीं होता। अत: ये उतने लाभदायक नहीं हैं। खेलों का वास्तविक उ`श्य ही यह है कि सारा दिन काम करते रहने या बैठे रहने के बाद लोग दौड़ें, उछलें-कूदें, शरीर को ठीक करें और साथ-ही-साथ मनोरंजन भी होता रहे।

(2) वृक्षारोपण या वन-संरक्षण

या

वन महोत्सव और प्रदूषण की समस्या

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) वन महोत्सव से लाभ, (3) कटाई से उत्पन्न भयावह समस्याएँ, (4) वृक्षारोपण का महत्व, (5) उपसंहार।

वृक्ष का अर्थ है पानी। पानी से रोटी मिलती है, जो जीवन देती है।

प्रस्तावना—वनों या वृक्षों का भारतीय संस् ति में बड़ा महत्व रहा है। हमारे यहाँ लोग धचीन काल से लेकर आज तक वृक्षों की पूजा करते आ रहे हैं। अश्वत्थ (पीपल) का वृक्ष तो वासुदेव भगवान का प्रतीक माना जाता है।

वृक्षारोपण से लाभ—लाभालाभ दृष्टिकोण से भी 'वन' एक महत्वपूर्ण ध तिक साधन हैं। किसी भी देश के आर्थिक विकास में वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वन षि, उद्योग, यातायात में सहायक तो हैं ही इनसे अन्य महत्वपूर्ण लाभ भी हैं। वनों से लाभ दो प्रकार से प्राप्त होते हैं—प्रत्यक्ष लाभ और अप्रत्यक्ष लाभ।

प्रत्यक्ष लाभ—(1) वनों से अनेक उद्योगों को आश्रय मिलता है, जैसे—सवाई घास और बाँस से कागज बनाया जाता है। वनों से रबर, शहद, गोंद, चन्दन आदि प्राप्त किया जाता है।

(2) वनों से बहुत कीमती लकड़ियाँ धाप्त की जाती हैं जिनसे जहाज, रेल के डिब्बे, दरवाजे, खिड़कियाँ आदि अनेक ध्कार की वस्तुएँ बनायी जाती हैं।

(3) पशुओं के लिये उत्तम चरागाह हैं।

(4) वन क्षेत्रों में ध तिक सौन्दर्य पर्यटकों के आकर्षक केन्द्र होते हैं।

(5) वन वन्य-प्राणियों के आवास व सुरक्षा स्थल हैं।

(6) वनों के कन्द, मूल, फूल और फलों से अनेकानेक औषधियों का निर्माण होता है।

(7) वनों से खाद प्राप्त होती है।

(8) वनों से भारत सरकार को करोड़ों रुपये का लाभ होता है।

अप्रत्यक्ष लाभ—(1) वनों से ही वर्षा होती है।

(2) वनों से रेगिस्तान बनने की सम्भावना नहीं रहती।

(3) वन बाढ़ पर, तापत्त म पर नियन्त्रण रखते हैं।

(4) ये नदी के निरन्तर बहाव को सम्भव बनाते हैं।

(5) वन क्षेत्रों में कुओं के पानी का जल-स्तर ऊँचा रहता है।

(6) वन, प्रदूषण को रोकते और पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

निर्दय कटाई से उत्पन्न भयावह समस्याएँ—मानव ने अपने व्यक्तिगत क्षणिक लोभ के कारण पेड़ों पर जो अन्धाधुन्ध कुल्हाड़ी चलाई है उसके अति भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं। जहाँ-जहाँ जंगल कटे हैं, वहाँ-वहाँ भूमि क्षरण के कारण भूमि की उर्वराशक्ति कम हो गई है। खारों का निर्माण हुआ है। वन क्षेत्र के कम होने से वर्षा पर भी ध्भाव पड़ा है, परिणामस्वरूप उपजाऊ इलाके रेगिस्तानी भूमि में बदल रहे हैं। इस प्रकार जैसे-जैसे वन क्षेत्र कम हो रहे हैं, वैसे-वैसे प्रदूषण,

भूमिक्षरण, कम या अवर्षा, बाढ़ आदि भयंकर समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

वृक्षारोपण या वन महोत्सव—वनों के महत्व को ध्यान में रखकर ही सन् 1950 से देश में वन महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। संजय गाँधी ने पाँच सूत्रीय कार्यक्रम और इन्दिरा गाँधी ने बीस सूत्रीय कार्यक्रम में वृक्षारोपण को एक विशिष्ट कार्यक्रम घोषित किया। तब से आज तक इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता मिल रही है। हमारी सरकार इस सम्बन्ध में सजग है वह त्वरित कदम उठा रही है।

उपसंहार—हमारा भी क व्य है कि हम वृक्षारोपण को एक धार्मिक या राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनायें। हर भारतीय के मन में यह भावना जाग्रत होनी चाहिये कि निष्ध्योजन वृक्ष की डालियों तक को न काटें। वृक्ष लगायें, लगवायें और लगवाने के लिये प्रोत्साहित करें। वृक्षों की महत्ता के सम्बन्ध में **पं. जवाहरलाल नेहरू** ने कहा था, "उगता हुआ वृक्ष उभरते हुए राष्ट्र का प्रतीक होता है।"

(3) विद्यार्थी जीवन का महत्व

या

अनुशासन की महत्ता

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन का महत्व, (3) उपसंहार।

प्रस्तावना—अनुशासन व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र सबको महान् बनाता है। विशेषकर छात्र जीवन तो अनुशासन प्रधान होता है। इसके बिना छात्रों में अच्छे संस्कार नहीं डाले जा सकते। अध्यापन कार्य ठीक से नहीं किया जा सकता। अच्छी पढ़ाई, अच्छे संस्कार एवं गुणों के विकास के लिए अनुशासन आधारशिला का काम करता है।

विद्यार्थी जीवन का महत्व—विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा "ण्ड है, जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह, सौहार्द, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करता था। जहाँ उसे विद्या अध्ययन के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग-तपस्या, धर्म-कर्म, सत्य-निष्ठा, शुद्ध आचार-विचार आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमारे धर्म ग्रन्थों में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पंच लक्षमणम्॥

अर्थात् विद्या-धन चाहने वाले के पास कौए जैसी लगन, बगुले जैसा एकाग्र ध्यान, कु ो जैसी अल्प एवं सचेत निद्रा, घर से दूर रह सकने वाला स्वभाव, आवश्यकता से कम भोजन करने जैसा संयम रहना चाहिए। ये पाँच गुण विद्यार्थी को विद्या अर्जन करने में तो सहायता करते ही हैं बल्कि आगामी स्वर्णिम जीवन के भी आधार हैं। उक्त पाँच लक्षणों से युक्त विद्यार्थी प्राचीनकाल में राजा तक से उचित मान-सम्मान प्राप्त करता था। वह सदाचार का प्रतीक माना जाता था।

जो छात्र अपने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ता, उसका सम्पूण र्ा जीवन अन्धकारमय हो जाता है। छात्र जिस गम्भीर ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय में आते हैं, उसे पाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार—जिस ध्कार किसी भवन या इमारत की चिरस्थिरता और दृढ़ता उसकी नींव की मजबूती पर अवलम्बित है, उसी ध्कार किसी व्यक्ति के जीवन की सुख-समृद्धि, शक्ति और सफलता उसकी अनुशासित छात्रावस्था पर निर्भर है। **गाँधी जी** ने कहा— अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही कार्य करता है, जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज।"

(4) समाचार-पत्र

या

समाचार-पत्र की उपयोगिता

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) समाचार-पत्र का विकास, (3) समाचार-पत्र के प्रकार, (4) समाचार-पत्र का महत्व, (5) उपसंहार।

प्रस्तावना—आज जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं में समाचार-पत्र भी एक है। समाचार-पत्र के माध्यम से हम घर बैठे संसार के प्रत्येक देश की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। समाचार-पत्रों ने संचार को एक परिवार के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

समाचार-पत्र का विकास—संसार में सर्वप्रथम समाचार-पत्र का जन्म सोलहवीं शताब्दी, में इटली के वेनिस नामक नगर में हुआ और धीरे-धीरे मुद्रण और यन्त्रों के आविष्कार और विकास के द्वारा समाचार-पत्र का प्रचार संसार में हो गया। आज संसार में ऐसा कोई देश नहीं है, जिसके प्रत्येक नगर में दो-चार समाचार-पत्र प्रकाशित नहीं होते हों। हमारे देश में लगभग सभी भाषाओं में समाचार-पत्र निकलते हैं। इसके द्वारा लाखों व्यक्ति ध्तिदिन अपनी जीविका चला रहे हैं। हमारे देश की स्वतन्त्रता और नव-जागरण में समाचार-पत्रों का बड़ा सहयोग रहा है।

समाचार-पत्र के प्रकार—प्रसार की दृष्टि से समाचार-पत्र कई भागों में बाँटे जा सकते हैं, जैसे—दैनिक, साप्ताहिक और मासिक। कुछ पत्र पाक्षिक और त्रैमासिक भी होते हैं। दैनिक और मासिक-पत्रों में लेख, कविता और कहानी तथा अन्य विचारध्धान-साहित्यिक सामग्री ध्काशित होती है। आजकल बाल और महिला वर्ग के विकास के लिए अलग-अलग पत्र छपने लगे हैं। इसके अतिरिक्त ाार्मिक, व्यावसायिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, चित्रपट सम्बन्धी पत्र भी छपने लगे हैं।

समाचार-पत्र का महत्व—आज के युग में हमारी ज्ञान वृद्धि के सर्वोत्तम साधन समाचार-पत्र ही हैं। ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ समाचार-पत्र मनोरंजन के भी साधन हैं, लेकिन समाचार-पत्रों से कुछ हानि भी है। बहुत से समाचार-पत्र धन के प्रलोभन में समाज की मर्यादाओं को त्यागकर ऐसे भ्रामक और असत्य समाचार छाप देते हैं, जिससे पाठकों के मस्तिष्क पर कभी-कभी बुरा ध्भाव पड़ता है। आज समाचार-पत्र जनता के बीच सहयोग पैदा करने वाला एकमात्र साधन है। समाचार-पत्र राष्ट्र के सच्चे निर्माता और पथ-ध्दर्शक हैं। समाचार-पत्र मानव सभ्यता और संस् ति के व्यापक रक्षक हैं। सहानुभूति, सद्विचार और सहयोग की भावना फैला सकते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि समाचार-पत्र मानव कल्याण और संसार के हित के ससे बड़े साधन हैं।

अच्छे समाचार-पत्र निष्पक्ष रहते हैं तथा स्वस्थ पत्रकारिता पर आधारित होते हैं। ये जनता और सरकार को सही दिशा और सलाह देते हैं। वे किसी के हाथ बिके नहीं होते। वे समाज हित और राष्ट्र हित को ध्यान में रखकर ही समाचार छापते हैं। वे पीत पत्रकारिता से बचते हैं। वे किसी की चरित्र हत्या नहीं करते हैं।

उपसंहार—विचारकर देखा जाए तो समाचार-पत्र मात्र घटनाओं का लेखा-जोखा नहीं है, वे राजनैतिक, साहित्यिक आदि विभिन्न ध्कार की समीक्षा भी हैं। वे लोकमत को बनाते-बिगाड़ते हैं तथा लोक जीवन को प्रभावित करते हैं अतएव समाचार-पत्र के सम्पादकों के सदैव लोकहित एवं देश हित को ध्यान में रखकर समाचारों का संपादन करना चाहिए।

❑

सॉल्व्ड पेपर—मई-जून, 2012

कक्षा—10वीं

विषय—हिन्दी

सेट—2

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—(i) प्रश्न क्रमांक 1 में 22 प्रश्न हैं। प्रत्येक में 1 अंक है। प्रश्न बहुविकल्पीय/ अतिलघु उत्तरीय हैं। इसमें अ, ब, स तीन खण्ड हैं।

(ii) प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 4 अंक हैं। शब्द सीमा 75 शब्द।

(iii) प्रश्न क्रमांक 10 से 15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 6 अंक हैं। (शब्द सीमा 150 शब्द)।

(iv) प्रश्न क्रमांक 16 निबन्धात्मक प्रश्न है। इसमें 10 अंक हैं। (शब्द सीमा 250 शब्द)।

(खण्ड—अ)

(1) सही विकल्प चुनकर लिखिए— **1 × 10 = 10**

(क) साधू किसका भूखा होता है ?

(i) धन (ii) भाव (iii) पद (iv) भोजन

उत्तर—(ii) भाव।

(ख) दादुर किसे कहते हैं ?

(i) मेढ़क (ii) साँप (iii) नेवला (iv) मोर

उत्तर—(i) मेढ़क।

(ग) "आज मैं बीज हूँ" कविता में कवि किसके बारे में कह रहे हैं ?

(i) पेड़ के बारे में (ii) स्वयं के बारे में

(iii) बीज के बारे में (iv) अंकुर के बारे में

उत्तर—(iii) बीज के बारे में।

(घ) वीरांगना कविता में 'उसको' किसे कहा गया है ?

(i) पत्नी को (ii) पति को (iii) नारी को (iv) पुरुष को

उत्तर—(iii) नारी को।

(ङ) "मेघ आए" कविता में किसका वर्णन किया गया है ?

(i) पाहुन का (ii) वर्षा-ऋतु का

(iii) आँधी का (iv) नदी का

उत्तर—(ii) वर्षा ऋतु का।

(च) कृष्ण के मुख पर लिपटा है—

(i) धूल (ii) दही (iii) मक्खन (iv) घी

उत्तर—(iii) मक्खन।

(छ) मीरा ने किसको अपना पति माना ?

(i) राम को (ii) शिव को
(iii) ष्ण को iv) हनुमान को
उत्तर—(iii) ष्ण को।

(ज) परियोजना लिखी जाती है—
(i) सीमित समय में (ii) अध्ययन केन्द्र पर
(iii) परीक्षा भवन पर (iv) पर्याप्त समय में
उत्तर—(iv) पर्याप्त समय में।

(झ) आँखों के चौंधियाने का कारण क्या है ?
(i) चन्द्रमा (ii) चाँदी (iii) चाँदनी (iv) धन
उत्तर—(iii) चाँदनी।

(ञ) बस के इंजन के गर्म होने की तुलना किससे की गई है ?
(i) जलते तवे से (ii) आपस में लड़ती सवारियों से
(iii) अफसर के दिमाग से (iv) गुस्सैल कंडक्टर से
उत्तर—(iv) गुस्सैल कंडक्टर से।

(खण्ड—ब)

सत्य अथवा असत्य लिखिए— **1 × 6 = 6**

(क) हल्दी घाटी के पत्थर राणाप्रताप की याद दिलाते हैं।
उत्तर—सत्य।

(ख) बांग्ला सबसे प्राचीन भाषा है।
उत्तर—असत्य।

(ग) कौसानी की तुलना आइसलैंड से की गयी है।
उत्तर—असत्य।

(घ) बाजार भाव से ग्राहकों को कोई लाभ नहीं होता।
उत्तर—असत्य।

(ङ) 'बीती विभावरी जागरी' के लेखक कवि जयशंकर प्रसाद हैं।
उत्तर—सत्य।

(च) 'चारु चन्द्र की चंचल किरणें 'पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
उत्तर—असत्य।

(खण्ड—स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— **1 × 6 = 6**

(क) देने से बढ़कर लेने वाले की ..... है।
उत्तर—पात्रता।

(ख) गो"काएँ ..... के दर्शन के लिए लालायित हैं।
उत्तर— ष्ण।

(ग) कल्पना चावला ने ..... सन् में इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की।
उत्तर—1982.

(घ) शहरी परिवेश मनुष्य को ..... बना देता है।
उत्तर—आत्मकेन्द्रित।

(ङ) किसलय का अंचल ..... रहा।

उत्तर—डोल।

(च) हास्य रस का स्थायी भाव ..... है।

उत्तर—हास।

प्रश्न 2. कबीर ने गुरु को कुम्हार क्यों माना है ? **4**

उत्तर—कबीर ने गुरु को इसलिए कुम्हार माना है क्योंकि कुम्हार जैसे घड़ा बनाता है उसी प्रकार गुरु शिष्यों को तैयार करता है। गुरु भी कुम्हार की तरह अपने शिष्यों को अन्दर से सहायता देता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें धेत्साहित करता है। जिस ध्कार कुम्हार घड़े को बाहर से थपकी से चोट करता जाता है उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को बाहर से डाँटता-डपटता है, उनकी कमजोरियों को बताता है और उन्हें सुधारने का निर्देश देता है।

अथवा

प्रश्न—उपकारी के साथ रहने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर—जिस ध्कार मेंहदी पीसने वाले के हाथों में स्वयं ही मेंहदी का रंग चढ़ जाता है उसी प्रकार उपकारी के साथ रहने से उसके गुणों का लाभ मिलता है।

प्रश्न 3. छऊ नृत्य की चार विशेषताएँ लिखिए। **4**

उत्तर—(1) छऊ नृत्य का प्रदर्शन देश-विदेश में प्रमुखता से होता है।

(2) इसमें पौराणिक कथाओं को आधार मानकर नृत्य किया जाता है।

(3) नर्तकों के मुँह पर कथा पात्रों के अनुरूप मुखौटे लगे होते हैं।

(4) झारखण्ड के अंगद महतों का नाम छऊ नर्तकों में गिना जाता है।

अथवा

प्रश्न—वृंद ने अपने दोहों में कौन-कौन से भाव प्रस्तुत किये हैं ?

उत्तर—वृंद ने अपने दोहों में जीवन के अनुभवों को शब्दों में "रोकर प्रस्तुत किया है। छोटे-छोटे दोहों में गम्भीर अर्थ को प्रस्तुत कर किए हैं व नीति, उपदेश एवं भक्ति के भावों के माध्यम से उन्होंने समाज को दिशा-निर्देश किया।

प्रश्न 4. वक्त पर जागने और बेवक्त जागने में क्या फर्क बताया गया है ? **4**

उत्तर—बेवक्त जागने का परिणाम यह होता है कि "छड़ जाने वाला व्यक्ति ध्गतिशील व्यक्ति की बराबरी करने की नियत से उसके पीछे घबराकर भागता है। हड़बड़ाहट में कुछ करना चाहता है किन्तु नहीं कर पाता।

अथवा

प्रश्न—'इसे जगाओ' कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—कवि ने अपनी कल्पना और जीवन-जगत के गहरे अनुभव का प्रयोग करते हुए सोए हुए या समय की गति न पहचानने वाले आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश दिया है। दिशाहीन भटकन की अपेक्षा सोच-समझकर ध्यास करने तथा आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।

प्रश्न 5. नारी के सन्दर्भ में लोहे जैसा तपना क्या है ? **4**

उत्तर—प्रस्तुत कविता में नारी को लोहे जैसा तपना इसलिए कहा गया है, क्योंकि लोहा तपकर हथियार बन जाता है, उसी तरह नारी का "घलना दया, करुणा, सहानुभूति का परिचायक है। सशक्त, कठोर, तपने और जलने वाली नारी परिस्थिति अनुसार जब आवश्यकता पड़ती है तो

हथियार भी उठा लेती है।

अथवा

प्रश्न—"फर्क" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—"फर्क" कथा से निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य, मनुष्य में फर्क करता है, जानवर नहीं। जानवर सब मिल-जुलकर रहते हैं। जानवर रंगभेद, जाति भेद, धर्म भेद भी नहीं जानते। हमें जानवरों से 'फर्क' न करने का गुण सीखना चाहिए।

प्रश्न 6. गीतिका छंद की परिभाषा देते हुए उदाहरण दीजिए। **4**

उत्तर—यह एक मात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 एवं 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। अन्त में क्रमशः लघु-गुरु (15) होता है।

उदाहरण—हे प्रभो आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।

अथवा

प्रश्न—"अच्छा कौन" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'अच्छा कौन' का निष्कर्ष है कि सभी भाषाएँ अच्छी हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। भारत में जब दो या अधिक भाषा-भाषी मिलते हैं तो हिन्दी में बात करते हैं।

हिन्दी राष्ट्र भाषा के साथ-साथ सम्पर्क भाषा भी है। हिन्दी को भारत का हर भाषा-भाषी रूप समझ सकता है। हिन्दी लगभग भारत के सभी भागों में बोली जाती है।

प्रश्न 7. "बहुत दिनों बाद" कविता में ग्राम्य जीवन की झाँकी किस प्रकार प्रस्तुत की गई है ? **4**

उत्तर—'बहुत दिनों के बाद' कविता में ग्राम की बहुत मनोहर झाँकी ध्स्तुत की गई है। खेतों में सुनहरी फसल पकी खड़ी है। कोकिल कंठी किशोरियाँ धान कूट रही हैं। मौलसिरी से ताजे खिले सुगन्धित फूल झड़ रहे हैं। तालाबों में तालमखाने के पौधे और खेतों में गन्ने के पौ ो बड़े हो गये हैं। गाँव की पगडंडी की चंदनवर्णी धूल सुखदायी है। चंदनवर्णी से तात्पर्य है गाँव की धूल प्रदूषण मुक्त है। इस ध्कार गाँव की निर्मल, अ त्रिम, आलौकिक और अद्वितीय सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

अथवा

प्रश्न—हैजा होने के कारण एवं उससे बचने के उपाय लिखिए।

उत्तर—हैजा होने के निम्न कारण हैं—गंदे-दूषित पानी से, मक्खियों से। इससे बचने के उपाय—गंदे व दूषित पानी व भोजन से दूर रहें, भोजन को मक्खियों से दूर रखें, उसमें बैठने न दें।

प्रश्न 8. तत्सम एवं तद्भव शब्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए। **4**

उत्तर—तत्सम शब्द—किसी भाषा के मूल शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। तत् + सम = तत्सम।

उदाहरण—चक्र, चन्द्र, कर्पूर, कोटि आदि।

तद्भव शब्द—ऐसे शब्द जो संस् त और ध त से वि त होकर हिन्दी भाषा में आये हैं उन शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं। तत् + भव = तद्भव।

उदाहरण—कपूत, ईंट, गाँठ, चोंच आदि।

अथवा

प्रश्न—तत्सम शब्द को परिभाषित करते हुए तत्सम रूप लिखो।

उत्तर—किसी भाषा के मूल शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं—

(क) कान — कर्ण (ग) गहरा — गम्भीर (ख) आधा — अर्ध (घ) चाँद — चन्द्र

प्रश्न 9. "चन्द्र गहना से लौटती बेर" के माध्यम से कवि जनमानस को क्या संदेश देना

चाहते हैं ? लिखिए। **4**

उत्तर—'चन्द्र गहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने यह सन्देश दिया है कि ग्राम्य अंचल में ध ति और संस ति का उत्सव मनोहर है। वहाँ व्याप्त निर्मल ध्म व्यवहार ने सम्पूर्ण वातावरण में अमृत घोल दिया है, किन्तु कुछ थोड़े से लोग स्वार्थ में अंधे होकर ध ति और संस ति के इस ताने-बाने को लगातार नुकसान पहुँचा रहे हैं जिससे पीड़ित लोगों का लगातार शहरों की ओर पलायन हो रहा है। जहाँ इनका और भी ज्यादा शोषण हो रहा है।

अथवा

प्रश्न—"बहादुर" पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—बहादुर एक गोरा, ठिंगना, गरीब नेपाली लड़का है। वह एक बहादुर बालक है। उसमें बचपन का भोलापन और संवेदनशीलता भी है। वह ईमानदार है। बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। वह स्वाभिमानी व क व्यिनिष्ठ बालक है।

प्रश्न 10. सचिव, माध्यमिक शिक्षामंडल, रायपुर छत्तीसगढ़ को दसवीं बोर्ड परीक्षा की अंक सूची की द्वितीय प्रति प्राप्त करने हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए। **6**

प्रति,

सचिव

माध्यमिक शिक्षा मंडल, रायपुर (छ. ग.)

विषय—अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि कक्षा दसवीं बोर्ड की परीक्षा की मेरी अंक सूची खो गई है। मैंने यह परीक्षा सन् 2009 में दी थी। मुझे अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क ₹ 50 का बैंक ड्राप्ट नं. 37701 आपके नाम से भेज रहा हूँ।

मुझसे सम्बन्धित जानकारी निम्नानुसार है—

1. नाम	—	देवेश वर्मा
2. "ता का नाम	—	श्री. सी. पी. वर्मा
3. परीक्षा	—	दसवीं बोर्ड 2009
4. परीक्षा केन्द्र का नाम	—	7173
5. परीक्षा केन्द्र क्रमांक	—	शा. उ. मा. वि. देवादा
6. अनुक्रमांक	—	251225
7. नियमित/स्वा	—	नियमित
8. पूरा पता	—	देवेश वर्मा C/o. श्री सी. वी. वर्मा पोष्ट-देवादा जिला-दुर्ग (छ. ग.)
संलग्न बैंक ड्राप्ट	—	₹ 50.00

अथवा

प्रश्न—स्वास्थ्य अधिकारी नगरपालिका महासमुंद को एक पत्र लिखिए, जिसमें गंदगी की समस्या की ओर ध्यान दिलाया जाये।

22/B निहारिका

महासमुंद 16 मार्च, 2013

प्रति

स्वास्थ्य अधिकारी

नगरपालिका निगम महासमुंद (छ. ग.)

विनम्र निवेदन है कि निहारिका नगर में सफाई की व्यवस्था न होने के कारण मच्छरों व

मक्खियों का ध्कोप बढ़ गया है। इससे अनेक रोग होने की संभावना है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप कॉलोनी की नालियों की सफाई एवं कूड़े के ढेरों में D. D. T. या अन्य कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव कराएँ, जिससे मक्खी एवं मच्छर समाप्त हो सकें व चारों ओर स्वच्छता हो।

धन्यवाद

भवदीव

रजत ठाकुर

प्रश्न 11. कवि जयशंकर प्रसाद अथवा कवि रसखान की दो रचनाएँ, भावपक्ष एवं कलापक्ष लिखिए। **6**

उत्तर— **जयशंकर प्रसाद**

दो रचनाएँ—कामायनी, आँसू।

भावपक्ष—ध्साद जी छायावाद के आधार स्तम्भ हैं। आपने ध ति का बहुत ही सुन्दर मानवीकरण किया है। ध्साद के साहित्य में भारत के अतीत के दर्शन होते हैं। आपके काव्य में रहस्यमयी सत्ता का आभास मिलता है।

कलापक्ष—जयशंकर ध्साद खड़ी बोली के बहुत ही समर्थ कवि थे। भाषा व्याकरणसम्मत है, किन्तु सरल एवं सुगम है। संस् त के शब्दों का अत्यधिक ध्योग होने पर भी भाषा क्लिष्ट नहीं हुई है। ध्साद जी ने मानवीकरण, उपमा, उत्ध्ेक्षा एवं रूपक आदि अलंकारों का ध्योग अधिक किया है।

अथवा

रसखान

दो रचनाएँ—सुजान रसखान, प्रेमवाटिका।

कलापक्ष—रसखान की कविताओं का मुख्य विषय ष्ण और ब्रज ध्म ही है। ष्ण के ध्ति अनन्य भक्ति और तीव्र अनुभूति रसखान की विशेषताएँ हैं।

भावपक्ष—रसखान की भाषा रस की खान है। सरल एवं सरस, ब्रजभाषा में काव्य रचना करने वाले रसखान के काव्य में दोहा, सवैया, कवि ा आदि छंदों एवं उपमा, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों की अद्भुत छटा देखी जा सकती है।

प्रश्न 12. लेखक धर्मवीर भारती अथवा अमरकांत जी की रचनाएँ, भाषा एवं शैली के आधार पर दीजिए। **6**

उत्तर— **धर्मवीर भारती**

रचनाएँ—गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, अंधायुग, कनुध्या, ठंडा लोहा।

भावपक्ष—प्रयोगवादी कविता के शीर्षस्थ कवि रहे हैं। अज्ञेय के प्रयोगवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। 'ठेले पर हिमालय' यात्रा वृतान्त में बहुत ही रोचक शब्दों में आत्मीय से लेखन कार्य किया है जिसे पढ़कर सहसा ही नैनीताल की वादियों में खो जाने की कल्पना हो सकती है।

भाषा-शैली—लेखक ने अपनी भाषा में ध्तीकों एवं बिम्बों का ध्योग बहुत ही सार्थक रूप में किया है। गद्य में भी वे बिम्बों और ध्तीकों की काव्य भाषा का ध्योग सुन्दरतापूर्ण करते हैं। भाषा ध्तीकों के कारण कहीं-कहीं दुरूह लगती है, किन्तु भाषा में लयात्मकता दिखाई देती है। इनकी आकर्षक भाषा-शैली आत्मीयता और स्वच्छन्दता को स्पष्ट करती है।

अथवा

अमरकान्त

रचनाएँ—कहानी—दोपहर का भोजन, उपन्यास—'सूखा पत्ता'।

भावपक्ष—इनके पात्र कहीं भी निराशा और हताशा से ग्रस्त दिखाई नहीं देते। उनके पात्रों में बड़ी-से-बड़ी समस्याओं को झेलने की क्षमता होती है। मानवीय संवेदना बहुत गहरी दिखाई देती है। साथ ही मानवीय रिश्तों और सम्बन्धों की सघनता दिखाई देती है। नारी पात्रों के प्रति सामाजिक संवेदना स्पष्ट दिखाई देती है।

भाषा शैली—कहानी की भाषा बोलचाल की है। एक तरह से इनकी भाषा विचारों के संवाहक भाषा के रूप में दिखाई देती है। मुहावरों और तत्सम, तद्भव क्षेत्रीय भाषा और उर्दू के शब्दों का आवश्यकता के अनुरूप ध्योग किया गया है। कहानी की भाषा पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है।

प्रश्न 13. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश का सन्दर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— **6**

मोरपंखा मुरली बनमाल लख्यौ हिय में हियरा उमह्यौरी।
ता दिन तें इन बैरिन कों हम कौन न बोल कुबोल सह्यौरी॥
तौ रसखानि सनेह लग्यौ कोउ एक कह्यौ कोउ लाख कह्यौरी।
और तो रंग रह्यौ न रह्यौ इक रंग रंगी सोई रंग रह्यौरी॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक के 'सवैया' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता रसखान हैं।

प्रसंग—श्री ष्ण के रूप सौन्दर्य का सखी पर ध्भाव का वर्णन है।

व्याख्या—श्री ष्ण के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध एक सखी दूसरी से कहती है कि श्री ष्ण के सिर पर मोर पंख, हाथों में मुरली और गले में बनमाल देखकर मेरे ह्रदय में ध्रेम उमड़ आया। उसी दिन से मैं इन बैरिन सखियों के ताने ध्त्येक भले-बुरे वचन के रूप में सुन और सह रही हूँ तो श्री ष्ण के ध्ति मेरा ध्रेम भाव बना हुआ है, चाहे कोई एक कहे या लाख और कोई रंग रहे न रहे, इसलिए मैं इसी एक रंग में रँगी हूँ और इसी में रंग में रहना चाहती हूँ।

विशेष—श्री ष्ण के ध्ति सखी का उत्कट ध्रेम व्यक्त हुआ है। 'रंग-रंगी, 'रंग रह्योरी'—अनुप्रास अलंकार।

अथवा

मोरपंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पीतंबर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी॥
भावतो ओहि मेरो रसखानि, सो तेरे किये सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—एक सखी श्री ष्ण से ध्रेम के कारण सारे स्वांग करने को तत्पर है सिर्फ एक को छोड़कर उनकी मुरली होठों पर नहीं रखना चाहती।

व्याख्या—सखी कहती है कि मैं मोरपंख अपने सिर पर रखूँगी। घुंघची की माला गले में पहनूँगी। पीताम्बर ओढ़कर लकड़ी लेकर वन में, गायों के पीछे ग्वालों के साथ फिरूँगी। श्री ष्ण के रूप में जो कुछ मुझे अच्छा लगता है वह सब स्वांग करूँगी किन्तु जिस मुरली को ष्ण ने होठों पर रखा है उसे होठों पर नहीं रखूँगी।

विशेष—'या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी—यमक अलंकार।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश का सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—6

आदमी का मन भी क्या चीज है। सुमित्रा कल तक मुझसे अपने बेटे और बहू की निर्दयता की कहानी कहते-कहते रो पड़ती थी। आज बेटे ने तनिक प्रेम से छू दिया तो माँ के भीतर जमा

हुआ सारा गिला-शिकवा गलकर बह गया और उसका झुका हुआ सिर तन कर ऊँचा हो गया।

सन्दर्भ—ये गद्य पंक्तियाँ डॉ. रामदरश मिश्र द्वारा लिखित कहानी 'सरकारी मकान' से ली गई हैं।

व्याख्या—इन पंक्तियों में सुमित्रा की सखी लाजो मानव मन की ध ति का वर्णन करती है। सुमित्रा अपने अफसर बेटे के पत्र को पाकर, बेटे-बहू द्वारा दिए गए संताप और उपेक्षा को भूल जाती है। आदमी का मन है ही ऐसा। जहँ उसे स्नेह और प्रेम मिला "छला सब कुछ भूल जाता है। सुमित्रा का मन भी इसका अपवाद नहीं है। बेटे द्वारा शहर ले जाने का पत्र पाकर वह पुराने सब दुखों को भूल जाती है और फूली नहीं समाती।

अथवा

यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है ? इसी हिमालय को देखकर किस-किसने क्या-क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कवित तो दूर, एक पंक्ति, एक शब्द भी तो नहीं जानता। पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है, इस हिम सम्राट के समक्ष।

सन्दर्भ—ये गद्य पंक्तियाँ धर्मवीर भारती द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत 'ठेले पर हिमालय' से ली गई हैं।

प्रसंग—हिमालय के आंचलिक क्षेत्र कौसानी के ध तिक सौन्दर्य का वर्णन रोचक शब्दों में आत्मीयता के साथ किया गया है।

व्याख्या—लेखक हिमालय के ध तिक दृश्य को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठा है और उससे लेखक के मन को कुछ सूझ नहीं रहा। हिमालय के ऊपर साहित्यकारों ने बहुत कुछ लिखा है पर लेखक का मन वहाँ के सौंदर्य को देखकर अपनी सारी कल्पनाएँ भूल चुका है। हिम सम्राट के सामने सब कुछ बड़ा तुच्छ लग रहा था।

प्रश्न 15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 6

"साहित्यकार की सृजन की प्रेरणा अपने समाज से ही प्राप्त होती है। उसके समाज की परिस्थितियों और समस्याएँ उसके सृजन का आधार बनाती हैं। समाज के आधार पर साहित्य का प्रासाद खड़ा होता है। साहित्य समाज की प्रतिध्वनि है। उसमें जो प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वह समाज का प्रतिबिम्ब होता है। इसी कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।"

(अ) साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि क्यों कहा गया है ?

उत्तर—समाज में जो भी घटनाएँ घटती हैं, उन्हीं का वर्णन साहित्य में किया जाता है, इसलिए साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि कहा जाता है।

(ब) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

उत्तर—शीर्षक—साहित्य-समाज का दर्पण, साहित्य-समाज का प्रतिबिम्ब।

(स) इस गद्यांश का सारांश तीस शब्दों में लिखिए।

उत्तर—साहित्यकार समाज में घटित होने वाली घटनाओं और समस्याओं से प्रेरित होकर साहित्य की रचना करता है। इसलिए साहित्य को समाज की प्रतिध्वनि एवं दर्पण कहा जाता है। किसी समाज के विषय में यदि जानना हो तो समाज का साहित्य पढ़ना चाहिए।

अथवा

साहित्यकार को सृजन की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त होती है ?

उत्तर—साहित्यकार को सृजन की प्रेरणा अपने समाज से ही प्राप्त होती है।

प्रश्न 16. किसी एक विषय पर 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए— 10

(क) जीवन में खेलों का महत्व

(ख) वन महोत्सव

(ग) समाचार-पत्र

(घ) अनुशासन की महत्ता।

उत्तर– (क) जीवन में खेलों का महत्व

रूपरेखा–1. प्रस्तावना, 2. खेलों का महत्त्व, 3. खेलों से लाभ, 4. उपसंहार।

प्रस्तावना–जीवन में खेलों का महत्त्व है। पुस्तकों के अध्ययन से हमारी मानसिक क्षुधा शान्त होती है, परन्तु खेलों से मानव के आर्थिक, मानसिक, स्वास्थ्यगत विकास में बड़ी सहायता मिलती है। छात्र दिन भर के अभ्यास के बाद शाम को त्रीड़ा-भूमि में आ जाता है तो उसका शरीर पुष्ट होता है और शाम को विद्याध्ययन में भी उसका मन लगता है, इसलिए पढ़ाई के साथ छात्र जीवन में खेलों का भी अत्यधिक मह व है। इसलिए विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ खेलों की भी व्यवस्था होती है।

खेलों का महत्व–खेल स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। खेल हमें शक्ति, सजगता एवं अच्छा स्वास्थ्य ध्दान करते हैं। वे हमें कार्यशक्ति एवं स्फूर्ति से परिपूर्ण करते हैं। वे हमारे आलस्य एवं नीरसता दूर कर मन और आत्मा में ताजगी भरते हैं। जो खेल नहीं जानते वे जीना नहीं जानते। क्योंकि स्वास्थ्य के बिना स्फूर्ति नहीं, स्फूर्ति के बिना कार्य नहीं, इसलिए खेल मानव जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण जाने जाते हैं।

खेलना बालकों को सबसे अधिक प्रिय लगता है, कितनी ही भूख लगी हो, कितना ही आवश्यक कार्य हो, बालक खेल को कभी नहीं छोड़ेगा। खेल में लीन बालक को माता-"ता पुकारते-पुकारते थक जाते हैं, पर बालक घर आने का नाम तक नहीं लेता।

कुछ विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक खेल को पढ़ाई में बाधक समझते हैं, परन्तु यह उनकी भूल है। खेल से बिल्कुल विमुख रहने वाले एवं पुस्तकों के कीड़े बने विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य से हाथ ो बैठते हैं, किन्तु हर समय खेलों में ही व्यस्त रहना भी अच्छा नहीं। मगर शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिए तथा मस्तिष्क को ताजा रखने के लिए नियमपूर्वक थोड़ा-सा खेलना भी बहुत आवश्यक है।

जो लोग खेल की महत्ता को समझते हैं और नियमपूर्वक खेलते हैं, वे पुरुषार्थी होते हैं। वे दिनभर काम करते हुए थकते नहीं। उनकी आयु भी अधिक होती है, क्योंकि वे प्रतिदिन खेल-कूदकर ताजे हो जाते हैं। यूरोप के लोग खेलना आवश्यक समझकर प्रतिदिन खेलते हैं, यही कारण है कि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से वे अपेक्षा त अधिक स्वस्थ और उन्नत हैं । कभी भारतवासी भी बड़े माने हुए खिलाड़ी हुआ करते थे, पर एक समय ऐसा आया, जब वे खेलना केवल बच्चों की जरूरत समझकर स्वयं दिन-रात व्यापार-धन्धों आदि में फँस गये, इसलिए इस क्षेत्र में उनकी उन्नति हो गयी। पर वे अब इस दिशा में फिर से सचेत हुए हैं और खेलों में पूरा योग देने लगे हैं। हॉकी, त्रि केट, कबड्डी, मल्ल-युद्ध और तैरना आदि खेलों में भारत के खिलाड़ी संसार के अच्छे खिलाड़ियों में गिने जाते हैं। अन्य खेलों में भी वे अब प्रगति कर रहे हैं।

खेलों से लाभ–खेलों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनसे लोगों में बाँकापन, उदारता और सहनशीलता आदि गुण बढ़ते हैं। ये गुण नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक उन्नति के लिए बहुत आवश्यक हैं। बाँके, उदार और सहनशील नेताओं, सैनिकों और कार्यकर्ताओं से ही देश आगे बढ़ता है। खेलों से मनुष्य का ओछापन और संकुचित वृत्ति नष्ट हो जाती है।

वैसे तो ध्तिद्वन्द्विता अर्थात् मुकाबले में बढ़ने-चढ़ने का भाव, खेलों का एक आवश्यक गुण है, पर कभी-कभी खेल में ही संघर्ष या लड़ाई-झगड़े भी हो जाते हैं, परन्तु यह 'खेल' का अपराध नहीं, लड़ने वालों का दोष है। हमें इस दोष को दूर करने का ध्यास करना चाहिए।

उपसंहार–चौपड़, ताश, शतरंज आदि कई खेल घर के भीतर ही होते हैं। इनसे मनोरंजन

होता है, व्यायाम नहीं होता। अत: ये उतने लाभदायक नहीं हैं। खेलों का वास्तविक उ`श्य ही यह है कि सारा दिन काम करते रहने या बैठे रहने के बाद लोग दौड़ें, उछलें-कूदें, शरीर को ठीक करें और साथ-ही-साथ मनोरंजन भी होता रहे।

(ख) वन महोत्सव

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) वन महोत्सव से लाभ, (3) कटाई से उत्पन्न भयावह समस्याएँ, (4) वृक्षारोपण का महत्व, (5) उपसंहार।

वृक्ष का अर्थ है पानी। पानी से रोटी मिलती है, जो जीवन देती है।

प्रस्तावना—वनों या वृक्षों का भारतीय संस् ति में बड़ा महत्व रहा है। हमारे यहाँ लोग धचीन काल से लेकर आज तक वृक्षों की पूजा करते आ रहे हैं। अश्वत्थ (पीपल) का वृक्ष तो वासुदेव भगवान का प्रतीक माना जाता है।

वृक्षारोपण से लाभ—लाभालाभ दृष्टिकोण से भी 'वन' एक महत्वपूर्ण ध तिक साधन हैं। किसी भी देश के आर्थिक विकास में वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वन षि, उद्योग, यातायात में सहायक तो हैं ही इनसे अन्य महत्वपूर्ण लाभ भी हैं। वनों से लाभ दो प्रकार से प्राप्त होते हैं—प्रत्यक्ष लाभ और अप्रत्यक्ष लाभ।

प्रत्यक्ष लाभ—(1) वनों से अनेक उद्योगों को आश्रय मिलता है, जैसे—सवाई घास और बाँस से कागज बनाया जाता है। वनों से रबर, शहद, गोंद, चन्दन आदि प्राप्त किया जाता है।

(2) वनों से बहुत कीमती लकड़ियाँ धप्त की जाती हैं जिनसे जहाज, रेल के डिब्बे, दरवाजे, खिड़कियाँ आदि अनेक ध्कार की वस्तुएँ बनायी जाती हैं।

(3) पशुओं के लिये उत्तम चरागाह हैं।

(4) वन क्षेत्रों में ध तिक सौन्दर्य पर्यटकों के आकर्षक केन्प्र होते हैं।

(5) वन वन्य-प्राणियों के आवास व सुरक्षा स्थल हैं।

(6) वनों के कन्द, मूल, फूल और फलों से अनेकानेक औषधियों का निर्माण होता है।

(7) वनों से खाद प्राप्त होती है।

(8) वनों से भारत सरकार को करोड़ों रुपये का लाभ होता है।

अप्रत्यक्ष लाभ—(1) वनों से ही वर्षा होती है।

(2) वनों से रेगिस्तान बनने की सम्भावना नहीं रहती।

(3) वन बाढ़ पर, तापत्त म पर नियन्त्रण रखते हैं।

(4) ये नदी के निरन्तर बहाव को सम्भव बनाते हैं।

(5) वन क्षेत्रों में कुओं के पानी का जल-स्तर ऊँचा रहता है।

(6) वन, प्रदूषण को रोकते और पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

निर्दय कटाई से उत्पन्न भयावह समस्याएँ—मानव ने अपने व्यक्तिगत क्षणिक लोभ के कारण पेड़ों पर जो अन्धाधुन्ध कुल्हाड़ी चलाई है उसके अति भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं। जहाँ-जहाँ जंगल कटे हैं, वहाँ-वहाँ भूमि क्षरण के कारण भूमि की उर्वराशक्ति कम हो गई है। खारों का निर्माण हुआ है। वन क्षेत्र के कम होने से वर्षा पर भी ध्भाव पड़ा है, परिणामस्वरूप उपजाऊ इलाके रेगिस्तानी भूमि में बदल रहे हैं। इस प्रकार जैसे-जैसे वन क्षेत्र कम हो रहे हैं, वैसे-वैसे प्रदूषण, भूमिक्षरण, कम या अवर्षा, बाढ़ आदि भयंकर समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

वृक्षारोपण या वन महोत्सव—वनों के महत्व को ध्यान में रखकर ही सन् 1950 से देश

में वन महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। संजय गाँधी ने पाँच सूत्रीय कार्यक्रम और इन्दिरा गाँधी ने बीस सूत्रीय कार्यक्रम में वृक्षारोपण को एक विशिष्ट कार्यक्रम घोषित किया। तब से आज तक इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता मिल रही है। हमारी सरकार इस सम्बन्ध में सजग है वह त्वरित कदम उठा रही है।

उपसंहार—हमारा भी क र्व्य है कि हम वृक्षारोपण को एक धार्मिक या राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनायें। हर भारतीय के मन में यह भावना जाग्रत होनी चाहिये कि निष्ध्योजन वृक्ष की डालियों तक को न काटें। वृक्ष लगायें, लगवायें और लगवाने के लिये प्रोत्साहित करें। वृक्षों की महत्ता के सम्बन्ध में **पं. जवाहरलाल नेहरू** ने कहा था, "उगता हुआ वृक्ष उभरते हुए राष्ट्र का प्रतीक होता है।"

(ग) समाचार-पत्र

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) समाचार-पत्र का विकास, (3) समाचार-पत्र के प्रकार, (4) समाचार-पत्र का महत्व, (5) उपसंहार।

प्रस्तावना—आज जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं में समाचार-पत्र भी एक है। समाचार-पत्र के माध्यम से हम घर बैठे संसार के प्रत्येक देश की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। समाचार-पत्रों ने संचार को एक परिवार के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

समाचार-पत्र का विकास—संसार में सर्वप्रथम समाचार-पत्र का जन्म सोलहवीं शताब्दी, में इटली के वेनिस नामक नगर में हुआ और धीरे-धीरे मुद्रण और यन्त्रों के आविष्कार और विकास के द्वारा समाचार-पत्र का प्रचार संसार में हो गया। आज संसार में ऐसा कोई देश नहीं है, जिसके प्रत्येक नगर में दो-चार समाचार-पत्र प्रकाशित नहीं होते हों। हमारे देश में लगभग सभी भाषाओं में समाचार-पत्र निकलते हैं। इसके द्वारा लाखों व्यक्ति ध्तिदिन अपनी जीविका चला रहे हैं। हमारे देश की स्वतन्त्रता और नव-जागरण में समाचार-पत्रों का बड़ा सहयोग रहा है।

समाचार-पत्र के प्रकार—प्रसार की दृष्टि से समाचार-पत्र कई भागों में बाँटे जा सकते हैं, जैसे—दैनिक, साप्ताहिक और मासिक। कुछ पत्र पाक्षिक और त्रैमासिक भी होते हैं। दैनिक और मासिक-पत्रों में लेख, कविता और कहानी तथा अन्य विचारध्धान-साहित्यिक सामग्री ध्काशित होती है। आजकल बाल और महिला वर्ग के विकास के लिए अलग-अलग पत्र छपने लगे हैं। इसके अतिरिक्त ाार्मिक, व्यावसायिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, चित्रपट सम्बन्धी पत्र भी छपने लगे हैं।

समाचार-पत्र का महत्व—आज के युग में हमारी ज्ञान वृद्धि के सर्वोत्तम साधन समाचार-पत्र ही हैं। ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ समाचार-पत्र मनोरंजन के भी साधन हैं, लेकिन समाचार-पत्रों से कुछ हानि भी है। बहुत से समाचार-पत्र धन के प्रलोभन में समाज की मर्यादाओं को त्यागकर ऐसे भ्रामक और असत्य समाचार छाप देते हैं, जिससे पाठकों के मस्तिष्क पर कभी-कभी बुरा ध्भाव पड़ता है। आज समाचार-पत्र जनता के बीच सहयोग पैदा करने वाला एकमात्र साधन है। समाचार-पत्र राष्ट्र के सच्चे निर्माता और पथ-ध्दर्शक हैं। समाचार-पत्र मानव सभ्यता और संस्ति के व्यापक रक्षक हैं। सहानुभूति, सद्विचार और सहयोगी की भावना फैला सकते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि समाचार-पत्र मानव कल्याण और संचार के हित के सबसे बड़े सा ान हैं।

अच्छे समाचार-पत्र निष्पक्ष रहते हैं तथा स्वस्थ पत्रकारिता पर आधारित होते हैं। ये जनता और सरकार को सही दिशा और सलाह देते हैं। वे किसी के हाथ बिके नहीं होते। वे समाज हित और राष्ट्र हित को ध्यान में रखकर ही समाचार छापते हैं। वे पीत पत्रकारिता से बचते हैं। वे किसी की चरित्र हत्या नहीं करते हैं।

उपसंहार—विचारकर देखा जाए तो समाचार-पत्र मात्र घटनाओं का लेखा-जोखा नहीं है, वे राजनैतिक, साहित्यिक आदि विभिन्न ध्कार की समीक्षा भी हैं। वे लोकमत को बनाते-बिगाड़ते हैं

तथा लोक जीवन को प्रभावित करते हैं अतएव समाचार-पत्र के सम्पादकों के सदैव लोकहित एवं देश हित को ध्यान में रखकर समाचारों का संपादन करना चाहिए।

(घ) अनुशासन की महत्ता

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन का महत्व, (3) उपसंहार।

प्रस्तावना—अनुशासन व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र सबको महान् बनाता है। विशेषकर छात्र जीवन तो अनुशासन प्रधान होता है। इसके बिना छात्रों में अच्छे संस्कार नहीं डाले जा सकते। अध्यापन कार्य ठीक से नहीं किया जा सकता। अच्छी पढ़ाई, अच्छे संस्कार एवं गुणों के विकास के लिए अनुशासन आधारशिला का काम करता है।

विद्यार्थी जीवन का महत्व—विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा "ण्ड है, जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह, सौहार्द, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करता था। जहाँ उसे विद्या अध्ययन के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग-तपस्या, धर्म-कर्म, सत्य-निष्ठा, शुद्ध आचार-विचार आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमारे धर्म ग्रन्थों में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पंच लक्षमणम्॥

अर्थात् विद्या-धन चाहने वाले के पास कौए जैसी लगन, बगुले जैसा एकाग्र ध्यान, कु ो जैसी अल्प एवं सचेत निद्रा, घर से दूर रह सकने वाला स्वभाव, आवश्यकता से कम भोजन करने जैसा संयम रहना चाहिए। ये पाँच गुण विद्यार्थी को विद्या अर्जन करने में तो सहायता करते ही हैं बल्कि आगामी स्वर्णिम जीवन के भी आधार हैं। उक्त पाँच लक्षणों से युक्त विद्यार्थी प्राचीनकाल में राजा तक से उचित मान-सम्मान प्राप्त करता था। वह सदाचार का प्रतीक माना जाता था।

जो छात्र अपने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ता, उसका सम्पूण ा जीवन अन्धकारमय हो जाता है। छात्र जिस गम्भीर ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय में आते हैं, उसे पाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार—जिस ध्कार किसी भवन या इमारत की चिरस्थिरता और दृढ़ता उसकी नींव की मजबूती पर अवलम्बित है, उसी ध्कार किसी व्यक्ति के जीवन की सुख-समृद्धि, शक्ति और सफलता उसकी अनुशासित छात्रावस्था पर निर्भर है। **गाँधी जी** ने कहा— अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही कार्य करता है, जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज।"

❑

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—दिसम्बर, 2011

कक्षा—10वीं

विषय—हिन्दी

सेट—3

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

नोट—सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(1) प्रश्न त्त मांक 1 के चार खण्ड (अ, ब, स, द) हैं। कुल अंक 22 हैं।

(2) प्रश्न त्त मांक 2 से 9 तक लघु उ ारीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के 4 अंक आबंटित हैं। शब्द सीमा अधिकतम 75 शब्द।

(3) प्रश्न त्त मांक 10 से 15 तक दीर्घ उ ारीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के 6 अंक आबंटित हैं। शब्द सीमा अधिकतम 120 शब्द।

(4) प्रश्न त्त मांक 16 निबन्ध लेखन है। आबंटित अंक 10 अंक, शब्द सीमा 250 शब्द।

प्रश्न 1. (अ) खाली स्थान भरिए— **5**

(1) कबीर ने आंगन में कुटी छबाकर ..... को बसाने के लिए कहा है।

उत्तर—निंदक।

(2) .....जनजाति पुनर्जन्म में विश्वास करती है।

उत्तर—भोटिया।

(3) वीर रस का स्थायी भाव ..... है।

उत्तर—उत्साह।

(4) पुराना का पर्यायवाची ..... है।

उत्तर—प्राचीन।

(5) मर्मस्पर्शी का अर्थ ..... है।

उत्तर—मन को छूना।

(ब) सही विकल्प चुनकर लिखिए— **5**

(1) बीज कहाँ छिपा है—

(क) धरती की कोख में (ख) अँखुए के नीचे

(ग) पानी में (घ) रेत में।

उत्तर—(क) धरती की कोख में।

(2) वीरांगना कविता में कवि ने नारी को निम्नलिखित में से किस रूप में नहीं दिखा—

(क) लोहा (ख) वीरांगना (ग) गोली (घ) बन्दूक।

उत्तर—(क) लोहा।

(3) 'वीरांगना' कविता के लेखक हैं—

(क) केदारनाथ अग्रवाल (ख) विष्णु प्रभाकर

(ग) चितरंजन भारती (घ) सुभद्राकुमारी चौहान।

उत्तर—(क) केदारनाथ अग्रवाल।

(4) दो देशों के बीच खाली पड़ी भूमि पर—

(क) दोनों देशों का अधिकार होता है

(ख) टैंक खड़े किए जाते हैं।
(ग) किसी भी देश के आदमी नहीं जा सकते
(घ) दोनों देशों के लोग जा सकते हैं।
उत्तर—(घ) दोनों देशों के लोग जा सकते हैं।

(5) चौपाई छन्द के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं—
(क) 28 (ख) 24 (ग) 16 (घ) 26.
उत्तर—(ग) 16.

(स) उचित सम्बन्ध जोड़िए— **6**

(क)	**(ख)**
1. मनुष्य का शरीर	विवाह होना
2. कर्ण	प्रथम भारतीय महिला IPS
3. किरण बेदी	कान
4. बछेन्द्री पाल	अतिथि
5. हाथ पीले करना	चेतन "ण्ड
6. पाहुन	एवरेस्ट की चढ़ाई

उत्तर—

1. मनुष्य का शरीर	चेतन "ण्ड
2. कर्ण	कान
3. किरण बेदी	प्रथम भारतीय महिला IPS
4. बछेन्द्री पाल	एवरेस्ट की चढ़ाई
5. हाथ पीले करना	विवाह होना
6. पाहुन	अतिथि

(द) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए— **6**

1. 'मेघ आए' कविता में किसका वर्णन किया गया है ?
उत्तर—मेघ आए कविता में वर्षा ऋतु का वर्णन किया गया है।

2. कौसानी की तुलना किससे की गई है ?
उत्तर—कौसानी की तुलना स्विट्जरलैण्ड से की गई है।

3. सूरदास का जन्म कहाँ हुआ था ?
उत्तर—सूरदास का जन्म साही ग्राम में हुआ था।

4. राम को कितने वर्षों का वनवास हुआ था ?
उत्तर—राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ था।

5. मीरा के पदों में कौन-सी भावना है ?
उत्तर—मीरा के पदों में समर्पण की भावना है।

6. 'बीती विभावरी जाग री' कविता में कवि नागरी कहकर किसे सम्बोधित करना चाहता है?
उत्तर—सुन्दर स्त्री को नागरी कहकर सम्बोधित करना चाहता है।

प्रश्न 2. कबीर ने गुरु को कुम्हार क्यों माना है ? **4**

उत्तर—कबीर ने गुरु को इसलिए कुम्हार माना है क्योंकि कुम्हार जैसा घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्यों को तैयार करता है। गुरु भी कुम्हार की तरह अपने शिष्यों को अन्दर से सहायता देता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें धोत्साहित करता है। जिस ध्कार कुम्हार घड़े को बाहर से थपकी से चोट करता जाता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को बाहर से डाँटता-डपटता है, उनकी कमजोरियों को बताता है और उन्हें सुधारने का निर्देश देता है।

अथवा

प्रश्न—रहीम ने पानी के क्या-क्या अर्थ बताए हैं ?

उत्तर—रहीम ने पानी के अर्थ चमक, प्रतिष्ठा और जल बताये हैं। जैसे मोती का पानी (चमक) उतर जाने पर उसकी कान्ति नष्ट हो जाती है वैसे ही मनुष्य का पानी अर्थात् प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने पर वह समाज की नजरों में गिर जाता है। चूने का पानी निकल जाने पर उसका कोई महत्व नहीं रहता है।

प्रश्न 3. रस किसे कहते हैं ? रस के कितने अंग हैं ? नाम लिखिए। **4**

उत्तर—रस का अर्थ—किसी काव्य या साहित्य को पढ़ने या सुनने, देखने से पाठक, श्रोता या दर्शक को जिस आनन्द की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं।

रस के अंग—रस के चार अंग होते हैं—

(i) स्थायी भाव, (ii) विभाव, (iii) अनुभाव, (iv) संचारी भाव।

अथवा

प्रश्न—हास्य रस को उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर—हास्य रस—सहृदय के हृदय में स्थित हास्य नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से संयोग होता है, तब हास्य रस होता है।

उदाहरण—फादर ने बनवा दिए तीन कोट छः पेन्ट।
बेटा मेरा हो गया कॉलेज स्टूडेण्ट।।

प्रश्न 4. लक्षणा शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइए। **4**

उत्तर—मुख्य अर्थ के बाधा होने पर प्रयोजन के आधार पर जिस शक्ति के द्वारा अभिधेयार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ का बोध होता है उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं।

उदाहरण—(i) सुरेश तो गधा है, (ii) वह शेर है।

अथवा

प्रश्न—व्यंजना शब्द-शक्ति को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—जहाँ किसी कथन के सामान्य अर्थ से भिन्न कोई अन्य अर्थ व्यक्त होता है वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण—लो सूरज डूब गया।

प्रश्न 5. बहादुर कहानी का उद्देश्य क्या है ? **4**

उत्तर—बहादुर कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार में काम करने वाले नौकर के प्रति किए जाने वाले बुरे व्यवहार का चित्रण किया गया है। बहादुर पर हुए अत्याचार व बुरा बर्ताव का बुरा लगना ही इस कहानी का मुख्य उ`श्य है।

अथवा

प्रश्न—बहादुर पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—बहादुर एक गोरा, ठिंगना, गरीब नेपाली लड़का है। वह एक बहादुर बालक है। उसमें बचपन का भोलापन और संवेदनशीलता भी है। वह ईमानदार है। बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। वह स्वाभिमानी व कर्तव्यनिष्ठ बालक है।

प्रश्न 6. 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से हरे चने के सौन्दर्य का चित्रण कीजिए। **4**

उत्तर—चने में गुलाबी रंग के फूल लगे हैं, जो गुलाबी पगड़ी जैसे दिख रहे हैं। छोटा, नाटा हरा चना गुलाबी रंग की पगड़ी बाँधे सजा-सँवरा दूल्हा बन मंडप नीचे बैठा है। चने का पौधा अन्य अनाज के पौधों से छोटा होता है अतः नाटे शब्द से सम्बोधित किया गया है। यह मानवीकरण का बहुत ही सुन्दर प्रयोग है।

अथवा

प्रश्न—'चन्द्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि जनमानस को क्या सन्देश देना चाहते हैं ? लिखिए।

उत्तर—'चन्द्र गहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने यह सन्देश दिया है कि ग्राम्य अंचल में ध ति और संस् ति का उत्सव मनोहर है। वहाँ व्याप्त निर्मल ध्रेम व्यवहार ने सम्पूर्ण वातावरण में अमृत घोल दिया है, किन्तु कुछ थोड़े से लोग स्वार्थ में अंधे होकर ध ति और संस् ति के इस ताने-बाने को लगातार नुकसान पहुँचा रहे हैं जिससे पीड़ित लोगों का लगातार शहरों की ओर पलायन हो रहा है। जहाँ इनका और भी ज्यादा शोषण हो रहा है।

प्रश्न 7. 'जैसे कोई और हो' एक व्यंग्य रचना है। इस कथन की पुष्टि कीजिए। 4

उत्तर—इस व्यंग्य का आरम्भ नाटकीय ढंग से किया गया है। लेखक बताता है कि बस की चाल और शान वैसी ही थी जैसी सरकार की होती है। बस की बाहरी चमक-दमक की तरह ही सरकारें चमक-दमक बनाये रखती हैं। बस के बहाने पूरे व्यंग्य में सरकारों के बेढंगेपन का संकेत है। ड्राइवर और कंडक्टर की ऐंठ, अकड़ और आचरण के बहाने से मंत्रियों की ऐंठ-अकड़ और उनके आचरणों की पोल खोली गई है अर्थात् 'जैसे कोई और हो' पूरी एक व्यंग्यात्मक रचना है।

अथवा

प्रश्न—बस और सरकारी तन्त्र की समानताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—रोडवेज की बस अपनी शान में, चाल में सरकार के समान थी। बिल्कुल सरकारी स्वभाव। पहले लेट हुई फिर ओवरलोड।

एक आदमी को बस से उतारना,

सरकार में सूबाई मन्त्री की कैबिनेट से ड्रॉप करना,

बस का इंजन किसी अफसर के दिमाग की तरह गर्म हो गया था। उसे शान्त करने के लिए ठण्डा पानी डाला गया, जैसे—किसी नब्बे वर्ष के मन्त्री को ऑक्सीजन दी जा रही हो।

प्रश्न 8. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए (कोई चार) 4

1. श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं।

उत्तर—श्री ष्ण के अनेक नाम हैं।

2. मेरे को भूख लगी है।

उत्तर—मुझे भूख लगी है।

3. एक फूल की माला लाओ।

उत्तर—फूल की एक माला लाओ।

4. धैर्यता धारण करो।

उत्तर—धैर्य धारण करो।

5. सज्जन व्यक्ति अच्छे होते हैं।

उत्तर—सज्जन अच्छे होते हैं।

प्रश्न 9. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। 4

उत्तर—इस कविता में एक सखी दूसरी सखी को सम्बोधित करते हुए कह रही है कि प्र ति अपने समस्त सौन्दर्य और संगीत के साथ जग गई है। तब तुम्हीं क्यों अपने सौन्दर्य और माधुर्य को लेकर सो रही हो। कविता में प्रा तिक चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्‌बोधन किया गया है। यह कविता सौन्दर्य पर रचित एक कोमल रागात्मक कविता है जिसमें कवि ने प्र ति का सुन्दर मानवीकरण किया है।

अथवा

प्रश्न—जयशंकर प्रसाद के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—भावपक्ष—प्रसाद जी छायावाद के आधार स्तम्भ हैं। आपने प्र ति का बहुत ही सुन्दर मानवीकरण किया है। प्रसाद के साहित्य में भारत के अतीत के दर्शन होते हैं। आपके काव्य में रहस्यमयी सत्ता का आभास मिलता है।

कलापक्ष—जयशंकर प्रसाद खड़ी बोली के बहुत ही समर्थ कवि थे। भाषा व्याकरणसम्मत है, किन्तु सरल एवं सुगम है। संस् त के शब्दों का अत्यधिक प्रयोग होने पर भी भाषा क्लिष्ट नहीं हुई है। प्रसाद जी ने मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा एवं रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग अधिक किया है।

प्रश्न 10. प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला आरंग को स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु आवेदन-पत्र लिखिए। **6**

उत्तर—

श्रीमान् धचार्य महोदय

शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला

आरंग (रायपुर)

विषय—शाला स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु।

महोदय,

मान्यवर महोदय, विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 9वीं का नियमित छात्र हूँ। मेरे "ता का स्थानान्तरण यहाँ से भिलाई हो गया है। इस कारण मैं अपना अध्ययन इस विद्यालय में निरन्तर नहीं कर सकता हूँ। अत: मुझे विद्यालय छोड़ने का ध्माण-पत्र ध्दान करने की पा करें। मैंने विद्यालय का शुल्क, पुस्तकें आदि सभी वस्तुएँ जमा कर दी हैं।

18, नवम्बर, 2013

आपका आज्ञाकारी शिष्य

यशवंत

अथवा

प्रश्न—अपने मित्र को जन्मदिन पर एक बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर—

प्रिय मित्र रवि, रायपुर, 15 अगस्त, 2013

अनेकानेक हार्दिक बधाइयाँ

तुम्हारी 16वीं वर्षगाँठ में मैं किसी कारणवश अनुपस्थित रहा, इसका मुझे खेद है, परन्तु मैंने पूरे ह्रदय से ईश्वर से तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य एवं लम्बी उम्र की कामना की है। मुझे विश्वास है कि तुमने अपना जन्मदिन हमेशा की तरह पूरे हर्षोल्लास से मनाया होगा। तुमने भविष्य के लिये नई योजनाएँ भी बनाई होंगी, साथ ही कोई एक बुरी आदत भी छोड़ी होगी, जैसा हम दोनों हर जन्मदिन पर करते आ रहे हैं। मुझे पत्र में जरूर बताना। ईश्वर तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करे। इसी के साथ मैं अपने कलम को विराम देता हूँ। पत्र जरूर लिखना। माता-"ता को ध्णाम कहना तथा छोटों को स्नेह।

तुम्हारा शुभेच्छु

विकास

प्रश्न 11. छन्द की परिभाषा लिखिए। दोहा अथवा गीतिका छन्द को उदाहरण देकर समझाइए। **6**

उत्तर—छन्द की परिभाषा—"निश्चित वर्णों या मात्राओं की विराम, गति या यति आदि से बँधी हुई शब्द योजना को छन्द कहते हैं।"

दोहा छन्द—इसके प्रत्येक चार चरण होते हैं। इसके विषम (प्रथम व तृतीय) चरण में 13-13 मात्राएँ तथा सम (द्वितीय एवं चतुर्थ) चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं, इसके विषम चरणों के अन्त में गुरु-लघु (ऽ, ।) नहीं होना चाहिए।

भूमि जीव संकुल रहे, गए सरद रित पाई।
सद्गुरु मिले जाहिं, संसय भ्रम समुदायी।।

गीतिका छन्द—यह एक मात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 एवं 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं, अंत में क्रमशः लघु-गुरु (।ऽ) होता है।

उदाहरण—हे प्रभो आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।।

प्रश्न 12. नागार्जुन अथवा केदारनाथ अग्रवाल का जीवन परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर कीजिए— 6

(1) रचनाएँ, (2) भावपक्ष, (3) कलापक्ष।

उत्तर— नागार्जुन

रचनाएँ—युगधार, प्यासी पथराई आँखें, भस्मासुर, नवकरिया, वरुण के बेटे।

भावपक्ष—नागार्जुन ने समाज की विषमताओं, गरीबी, दुःखों तथा संकटों का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। यथार्थवादी दृष्टिकोण से उन्होंने जीवन को देखा एवं प्रस्तुत किया। आम आदमी के जीवन से जुड़ी कविताएँ उन्होंने लिखीं।

कलापक्ष—आपने हिन्दी और मैथिली दोनों भाषाओं में अपनी रचनाएँ लिखीं। खड़ी बोली हिन्दी भाषा में तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी के शब्द शामिल हैं।

अथवा

केदारनाथ अग्रवाल

रचनाएँ—जमुन जल तम, युग में गंगा, आग का आइना, पंख और पतवार आदि।

भावपक्ष—शोषण के खिलाफ जंग, नारी के प्रति सम्मान और राष्ट्र चेतना आपकी कविताओं की विशेषता है। प्र ति का मनोहारी चित्रण करने में आप माहिर हैं।

कलापक्ष—सामान्य बोलचाल की भाषा को आप सहजता से प्रयोग करते हैं। भावों की अभिव्य ि में चित्रात्मकता आपकी विशेषता है। गागर में सागर भरना कोई आपसे सीखे।

प्रश्न 13. किसी एक गद्यांश की सन्दर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 6

(क) वह कुछ देर तक खेलता था। उसके बाद वह धीमे-धीमे स्वर में गुनगुनाने लगता था। उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जना में अपने किसी बिछड़े हुए साथी को बुला रहा हो।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पं ि याँ अमरकान्त द्वारा रचित 'बहादुर' कहानी से ली गई हैं।

प्रसंग—बहादुर द्वारा गाये जाने वाले गानों की विशेषता बताई गई है।

व्याख्या—बहादुर नेपाली था, अपना घर छोड़कर चला आया था। कार्य करने के पश्चात् जब भी उसे अपने घर की याद आती थी, तब वह अपनी मातृभाषा में गीत के बोल गुनगुनाने लगता था। वह पहाड़ों का रहने वाला था, अतः उनकी भाषा हम नहीं समझते थे। इसी कारण उसके गीत के बोल कोई नहीं जान पाता, किन्तु उसके घर की याद की मधुर स्मृति पूरे घर में फैल जाती। ऐसा प्रतीत होता था मानो जनशून्य पहाड़ी पर कोई भूले-बिसरे साथी को याद कर रहा हो। अपने संगीत के माध्यम से पुकार रहा हो।

(ख) आजादी के बाद वर्तमान समय में जब शिक्षा और तकनीकी की सुविधाएँ बढ़ी हैं तो महिलाओं में एक बार फिर से अपनी क्षमता, साहस और बुद्धिमता का परिचय देना शुरू कर दिया। आज जब यह कहा जाता है कि महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं तो इसलिए

नहीं कि उनके प्रति दया भावना है, बल्कि उन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पं याँ हमारे पाठ्य पुस्तक के पाठ भारत की ये बहादुर बेटियाँ से ली गई हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पं के माध्यम से वर्तमान में भारत नारी की उन्नति का उल्लेख किया है।

व्याख्या—भारत देश ने आजादी के बाद शिक्षा व तकनीकी में अधिक उन्नति की है जिसमें महिलाओं ने शिक्षा के माध्यम से अपनी क्षमता व साहस का परिचय देते हुए आज की महिला, पुरुषों से कम नहीं, पुरुषों के बराबर ही काम करती हैं, आज की महिला डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, पुलिस, अनेक बड़े-बड़े पदों पर अपने आपको सुशोभित कर रही हैं।

प्रश्न 14. निम्न में से किसी एक पद्यांश की सन्दर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 6

जब-जब भवन विलोकति सूनो।
तब-तब विकल होति कौसिल्या, दिन-दिन प्रति दुख दूनो।।
सुमिरत बाल-विनोद राम के, सुन्दर मुनि-मनहारी।
होत हृदय अति सूल समुझि पद, पंकज अजिर बिहारी।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद के रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग—श्रीराम के वन जाने पर माता कौशल्या के दु:खों का वर्णन।

व्याख्या—माता कौशल्या जब-जब घर की ओर देखती हैं तो वह सूना नजर आता है। इससे इनकी व्याकुलता बढ़ती जाती है और रोज दु:ख दूना हो जाता है। वे श्रीराम की बाल-लीलाओं का स्मरण करती हैं जो सुन्दरता से मुनियों का भी हृदय हर लेती थी। आँगन में पड़े श्रीराम के चरण कमलों का स्मरण आते ही उनके हृदय में काँटा चुभ जाता है।

अथवा

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिरमोर मुकुट मेरो पति सोई।।
तात मात भ्रात बंधु अपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि कहा करिहै कोई।।

सन्दर्भ—प्रस्तु पद मीराबाई का है।

प्रसंग—श्री ष्ण के प्रति प्रेम और भ का वर्णन।

व्याख्या—मीराबाई कहती है कि मेरा गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले ष्ण के सिवा कोई नहीं है, जिनके सिर पर मोर मुकुट है, वही मेरे पति हैं। माता, "ता, भाई, मित्र कोई भी मेरा नहीं है। मैंने वंश की मर्यादा त्याग दी है, कोई मेरा क्या कर लेगा ?

प्रश्न 15. निम्न अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए—

मनुष्य के जीवन में जो आदतें पड़ जाती हैं वे किसी न किसी रूप में जीवन भर बनी रहती हैं। इसलिए बचपन से ही मितव्ययिता और बचत की आदतों का विकास आवश्यक है। कुछ बालक जेब खर्च के लिए मिले धन से ही बचत करते हैं। पैसा बचाकर अपनी-अपनी गुल्लक जल्दी-जल्दी भरने की उनमें होड़ लगी रहती है। कहा भी गया है कि एक-एक बूँद से सागर भरता है और एक-एक पैसा एकत्र करने से धन संचय होता है अत: बालकों को ऐसी प्रेरणा की आवश्यकता है जिससे वे नियमित रूप से बचत करने की आदत डालें और अपने लिए अनुकूल योजना को अपनाकर धन संचय करते रहें।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। **2**

उत्तर—मितव्ययिता।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए। **4**

उत्तर—उ गद्यांश में मनुष्य को अपने जीवन में बचत की आदत डालने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि बचत की आदत से व्यि में आत्मनिर्भरता आती है व दूसरे के पास हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न 16. निम्न में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए— 10

(1) हमारा पर्यावरण

(2) समय का सदुपयोग

(3) शिक्षित बेरोजगारी

(4) छात्र जीवन में अनुशासन

उत्तर— (1) हमारा पर्यावरण

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण क्या है, (3) प्रदूषण के कारण, (4) प्रदूषण रोकने के उपाय।

प्रस्तावना—गंगा मैली हो गई, गलियों से बदबू आ रही है, आकाश विषैली धूलों और ध ुओं से भर उठा है, वायुमण्डल विषा हो गया है। प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल हो गई कि लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

प्रदूषण क्या है ?—जल, वायु व भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में होने वाला कोई भी अवांछनीय परिवर्तन प्रदूषण है। एक ओर दुनिया तेजी से विकास कर रही है, जिन्दगी को सजाने-सँवारने के नये तरीके ढूँढ़ रही है, दूसरी ओर वह तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इस प्रदूषण के कारण जीना दूभर होता जा रहा है। आज आसमान जहरीले धुएँ से भरता जा रहा है। नदियों का पानी गन्दा होता जा रहा है। सारी जलवायु, सारा वातावरण दूषित हो गया है। इसी वातावरण प्रदूषण का वैज्ञानिक नाम है—प्रदूषण या 'पॉल्यूशन'।

प्रदूषण के कारण—आज सारे विश्व के समक्ष जनसंख्या की वृद्धि सबसे बड़ी समस्या है और पर्यावरण प्रदूषण में जनसंख्या की वृद्धि ने भी अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। औद्योगीकरण के कारण, आए दिन नये-नये कारखानों की स्थापना की जा रही है, इनसे निकलने वाले धुएँ के कारण वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है। साथ ही मोटरों, रेलगाड़ियों आदि से निकलने वाले धुएँ से भी पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इनके कारण साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का मिल पाना मुश्किल है।

वायु के साथ-साथ जल भी प्रदूषित हो गया है। नदियों का पानी दूषित करने में बड़े कारखानों का सबसे बड़ा हाथ है। कारखाने का सारा कूड़ा-कचरा नदी के हवाले कर दिया जाता है, बिना यह सोचे कि इनमें से बहुत कुछ पानी में घुल जाएँगे, जिससे मछलियाँ मर जायेंगी और मनुष्य के पीने योग्य नहीं रह जाएगा।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय—वायु प्रदूषण को रोकने के लिए चिमनियों में फिल्टर लगाये जायें, जो प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमण्डल में प्रविष्ट न होने दें। जल-प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है कि जल स्रोतों में गन्दे पानी को न डाला जाये तथा उद्योग-धन्धों से निर्गत पानी को भूमिगत किया जाये। पर्यावरण संरक्षण के लिए वनों की रक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। वृक्ष और वनस्पतियाँ वायुमण्डल से कार्बन-डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं तथा ऑक्स. ीजन छोड़ते हैं। अगर वृक्ष तथा वनस्पतियाँ न हों तो पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाले वाहनों, कारखानों और प्राणी जगत् द्वारा छोड़ी हुई कार्बन-डाइऑक्साइड से सम्पूर्ण वातावरण भर जाएगा। वृक्ष पर्यावरण सन्तुलन के सर्वोत्तम साधन हैं। अत: हम अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण प्रदूषण की हानियों से बच सकते हैं।

यदि चाहते हो देश की सुरक्षा,
तो प्रकृति को सुरक्षित करना होगा।
यदि नहीं करते प्रदूषण से सुरक्षा,

तो कैसे हो पायेगी आत्मरक्षा।।

(2) समय का सदुपयोग

अंग्रेजी में एक प्रसिद्ध कहावत है—**टाइम इज मनी** अर्थात् समय ही धन है, परन्तु वास्तव में देखा जाये तो समय धन की अपेक्षा अधिक कीमती है। नष्ट हुआ धन तो पुनः अर्जित किया जा सकता है, किन्तु बीता हुआ समय वापस नहीं आता। समय तो ईश्वर की अतुलनीय देन है जिसे न बढ़ाया जा सकता है और न कम किया जा सकता है। मानव के जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है। यदि एक क्षण का भी दुरुपयोग होता है मानव सभ्यता का विकास-चक्र शिथिल हो जाता है। एक पल की शिथिलता जीवनभर के पश्चाताप का कारण बन जाती है।

मानव जाति में अन्तरिक्ष के रहस्यों को खोज निकालने की होड़ लगी है। इनमें से वही सफलता प्राप्त करने का अधिकारी होगा जो समय का उचित उपयोग करेगा। जीवन के प्रत्येक पल का उपयोग करने वाला ही सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकता है।

विधाता की ओर से हर प्राणी के जीवन के क्षण निश्चित हैं। जीवन में कार्यों का बोझ इतना होता है कि उसे थोड़े समय में ढो पाना कठिन हो जाता है। समय केवल उसका साथ देता है जो उसके मूल्य को पहचानकर उसका उचित उपयोग करता है।

कहा गया है—**"का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूँकि पुनि का पछताने"** अर्थात् खेती सूख जाने पर वर्षा होने का कोई लाभ नहीं होता। इस उ का अर्थ अत्यन्त व्यापक है। किसी भी कार्य को सम्पन्न करने का कोई निश्चित समय होता है। उस समय के निकल जाने के बाद यदि कार्य हो भी जाये तो उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है।

(3) बेरोजगारी की समस्या

अथवा

शिक्षित बेरोजगारी की समस्या

अथवा

शिक्षित बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना—बेरोजगारी के दुष्परिणाम, परिस्थिति की भयंकरता, (2) बेरोजगारी के रूप, (3) बेरोजगारी के कारण, (4) रोकने के उपाय, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—प्रत्येक व्य सुख और शान्ति का अभिलाषी है। उसकी यह अभिलाषा दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई समृद्धि द्वारा पूरी हो सकती है। सम्प ा के सुख के सभी साधन एकत्र किये जा सकते हैं। समृद्ध व्य ही शान्ति का अनुभव कर सकता है। अपने देश भारत में नाना कारणों से कुछ ऐसा संयोग बना है कि समृद्धि गूलर का फूल हो गई है। अधिकतर लोगों को रोजगार नहीं मिलता। सह ाधिक शिक्षित व्य यों को उपयु कार्य नहीं मिलता। उधर अनेक उद्योगपति कहते हैं कि हमें अपने उद्योगों को चलाने के लिये उपयु व्य उपलब्ध नहीं होते। विचित्र विडम्बना है। रोजगार के अभाव में लाखों व्य 'जीविका दिलाने वाले कार्यालय' पर भीड़ लगाते फिरते हैं। पर इतने बेरोजगारों को ये दफ्तर काम नहीं दे पाते, फलतः अनेक व्य भूख से पीड़ित होकर असामाजिक कार्यों को करने लगते हैं। चोरी, डकैती, राहजनी ही उनके दैनिक त्य बन जाते हैं। सच है मरता क्या न करता 'बुभुक्षित किं न करोति पापम्'। इस भीषण समस्या का निदान प्रत्येक विचारशील व्य का कार्य है। हमारी जन"य सरकार भी इस समस्या के कारणों का पता लगाकर उनके निवारण के लिये त संकल्प है।

(2) बेरोजगारी के रूप—बेरोजगारी के अनेक रूप हैं। पूर्णरूप से बेरोजगारी और आंशिक रूप से बेरोजगारी। कुछ पढ़े-लिखे अथवा बिना पढ़े-लिखे व्य ऐसे हैं, जिन्हें बिल्कुल भी कार्य नहीं मिल रहा है। इसमें कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी योग्यता के अनुसार कार्य न पाकर अय कार्यों को करना नहीं चाहते। दूसरे प्रकार के व्य ऐसे हैं, जिन्हें कुछ दिन काम मिल जाता है।

ग्रामों में कम भूमि वाले षक भी चार-पाँच महीने बेकार बैठे रहते हैं और षि के श्रमिकों को तो फसल की बुवाई, निराई तथा कटाई के समय लगभग चार महीने ही काम मिल पाता है। यह बेरोजगारी की भयावह समस्या नगरों तथा ग्रामों में समान रूप से व्याप्त है।

(3) बेरोजगारी के कारण—(i) अंग्रेजी शासन की गलत नीतियाँ—हमारे देश पर अंग्रेजों ने पर्याप्त समय तक शासन किया। उन्होंने अपने देश को समृद्ध करने के लिये भारत का शोषण किया। अपनी कूटनीति के तहत यहाँ के गृह तथा कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया। हस्त शिल्प के नष्ट होने तथा मशीनों के बढ़ जाने के कारण बेरोजगारी पैदा हुई।

(ii) वर्तमान शिक्षा-पद्धति—लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी शासन की सुगमता के लिये क्लर्कों के निर्माण हेतु अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति चलाई थी। यह शिक्षा-पद्धति वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने में सर्वथा असमर्थ है। आज का हर शिक्षित व्यि नौकरी चाहता है अथवा बेकार घूमता है। इसीलिये तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था—

"शिक्षे तुम्हारा नाश हो, तुम नौकरी के हित बनीं।"

(iii) जनसंख्या में वृद्धि—प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **माल्थस** का कहना है कि जनसंख्या की वृद्धि खाद्य पदार्थों के उत्पादन की तुलना में कहीं अधिक होती है। भारत की जनसंख्या में जिस अनुपात से वृद्धि हो रही है, उस अनुपात से उद्योग-धन्धों की वृद्धि नहीं हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में रोजगारों की स्थिति नगण्य है अत: जनसंख्या का बढ़ना बेकारी का प्रमुख कारण है।

(iv) धर्मान्धता तथा अहिंसा की भावना—कुछ तथाकथित उच्च वर्ग के लोग चमड़े आदि का व्यापार करने में हीनता का अनुभव करते हैं। अहिंसा की भावना के कारण मत्स्यपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन से उद्योगों में प्रवृ ा नहीं होते हैं। जनता के धार्मिक विश्वास का लाभ उठाकर कुछ लोग भिक्षावृत्ति से निर्वाह कर लेते हैं। बेरोजगारी का यह भी एक कारण है।

(v) देश का विभाजन—देश के बँट जाने के कारण कुछ कुशल कारीगर पाकिस्तान चले गये। उनके हस्त-कौशल के अभाव में बहुत से उद्योग-धन्धे चौपट हो गये। वहाँ से आये व्यि उतने कारीगर नहीं थे। उनका भार भी यहाँ की भूमि को वहन करना पड़ा। उससे भी बहुत से व्यि बेकार हो गए।

(vi) नवीन उद्योगों का न चलाया जाना—हमारे देश के व्यापारी और पूँजीपतियों में अनुभव और साहस की कमी है। वे नये उद्योग-धन्धों को शुरू करने में हिचकते हैं। नवीन कल-कारखानों के अभाव में हजारों व्यि बेरोजगार रह जाते हैं।

(vii) बंजर भूमि—देश में बंजर भूमि पर्याप्त मात्रा में है। चम्बल नदी के तट पर लाखों एकड़ भूमि षि के अयोग्य है और भी स्थानों पर पड़ी भूमि को वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा उर्वर बनाया जा सकता है। भूमि अभाव में अनेक व्यि रोजगार नहीं कर सकते।

(4) रोकने के उपाय—जार्ज बर्नार्ड शॉ ने एक बार कहा था कि **निरन्तर बेकारी का ही दूसरा नाम नरक है**। यथार्थ में बेकारी जीवन का सबसे बड़ा दु:ख है, बेरोजगारी के साथ गरीबी, दु:ख, ग्लानि, निराशा और हीनता के भाव मन में उत्पन्न होते हैं। मनुष्य अपना महत्व भूल जाता है और वह जीवन का अन्त तक करने को तत्पर हो जाता है। अत: इसे दूर करना ही चाहिये। इस समस्या के सुलझाने के लिये नीचे लिखे उपाय अपनाये जाएँ—

(i) जनसंख्या की वृद्धि को रोकना—परिवार नियोजन के कार्यत्त म को तीव्र करके सन्तति निग्रह किया जाय। विवाह की आयु को बढ़ाया जाय 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' नारे द्वारा जनता को समझाया जाय।

(ii) कुटीर उद्योगों का विकास—भारत के ग्रामों में सरकार द्वारा कुटीर उद्योगों तथा लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाय। बैंकों द्वारा सरल ढंग से कम ब्याज पर ऋण दिया जाना चाहिये ताकि शिक्षित लोग अनेक उद्योगों का विकास करें जिससे बेकारी कम हो।

(iii) शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन—प्रत्येक विद्यालय में औद्योगिक तथा शिल्प

सम्ब- ाी शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। षि शिक्षण पर भी ध्यान दिया जाय।

(iv) अन्य उपाय—बंजर भूमि को खेती योग्य बनाया जाय। वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता से बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में सैकड़ों भूमिहीनों को काम मिल सकता है।

पूँजीपति वर्ग साबुन बनाने, खिलौने बनाने, ब्लेड बनाने, औषधि बनाने के नये उद्योगों को खोलकर अनेक श्रमजीवियों को जीविका दे सकता है।

(5) उपसंहार—हमारी सरकार इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न तो कर रही है, किन्तु उसकी गति धीमी है। सरकार की योजनाओं में जनता भी अपना सक्रिय योगदान दे, तभी बेकारी की समस्या का अन्त सम्भव है। रोजगार में लगे लोग ही देश को समृद्ध और शान्तिमय बना सकेंगे।

4. छात्र जीवन में अनुशासन का महत्व

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन का महत्व, (3) उपसंहार।

प्रस्तावना—अनुशासन व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र सबको महान् बनाता है। विशेषकर छात्र जीवन तो अनुशासन प्रधान होता है। इसके बिना छात्रों में अच्छे संस्कार नहीं डाले जा सकते। अध्यापन कार्य ठीक से नहीं किया जा सकता। अच्छी पढ़ाई, अच्छे संस्कार एवं गुणों के विकास के लिए अनुशासन आधारशिला का काम करता है।

विद्यार्थी जीवन का महत्व—विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा "ण्ड है, जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह, सौहार्द, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करता था। जहाँ उसे विद्या अध्ययन के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग-तपस्या, धर्म-कर्म, सत्य-निष्ठा, शुद्ध आचार-विचार आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमारे धर्म ग्रन्थों में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पंच लक्षमणम्॥

अर्थात् विद्या-धन चाहने वाले के पास कौए जैसी लगन, बगुले जैसा एकाग्र ध्यान, कु ो जैसी अल्प एवं सचेत निद्रा, घर से दूर रह सकने वाला स्वभाव, आवश्यकता से कम भोजन करने जैसा संयम रहना चाहिए। ये पाँच गुण विद्यार्थी को विद्या अर्जन करने में तो सहायता करते ही हैं बल्कि आगामी स्वर्णिम जीवन के भी आधार हैं। उक्त पाँच लक्षणों से युक्त विद्यार्थी प्राचीनकाल में राजा तक से उचित मान-सम्मान प्राप्त करता था। वह सदाचार का प्रतीक माना जाता था।

जो छात्र अपने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ता, उसका सम्पूण ा जीवन अन्धकारमय हो जाता है। छात्र जिस गम्भीर ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय में आते हैं, उसे पाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार—जिस ध्कार किसी भवन या इमारत की चिरस्थिरता और दृढ़ता उसकी नींव की मजबूती पर अवलम्बित है, उसी ध्कार किसी व्यक्ति के जीवन की सुख-समृद्धि, शक्ति और सफलता उसकी अनुशासित छात्रावस्था पर निर्भर है। **गाँधी जी** ने कहा— अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही कार्य करता है, जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज।"

❑

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—मई-जून, 2011

कक्षा—10वीं

विषय—हिन्दी

सेट—4

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। कुल 16 प्रश्न हैं।

(ii) प्रश्न त्त मांक 1 (अ), 1 (ब), 1 (स) में एक-एक अंक हैं। प्रश्न त्त मांक 2 से 9 तक 4 अंक हैं। प्रश्न त्त मांक 10 से 15 तक 6 अंक आबंटित व प्रश्न त्त मांक 16 में 10 अंक निर्धारित हैं।

प्रश्न 1. (अ) प्रश्न क्रमांक (a) से (e) तक उचित उत्तर चुनकर लिखिए—

(a) सयाना काम क्या है ? **1**

(i) दान (ii) कंजूसी (iii) स्वार्थ (iv) लालच।

उत्तर—(i) दान।

(b) परियोजना लिखी जाती है— **1**

(i) सीमित समय में (ii) अध्ययन केन्द्र पर

(iii) परीक्षा भवन पर (iv) पर्याप्त समय में।

उत्तर—(iv) पर्याप्त समय में।

(c) अखबारों में प्रकाशित किए जाते हैं— **1**

(i) सभी समाचार (ii) परिचितों के समाचार

(iii) राजनैतिक दलों के समाचार (iv) महत्वपूर्ण समाचार।

उत्तर—(iv) महत्वपूर्ण समाचार।

(d) नागार्जुन बीज के माध्यम से किसकी बात कर रहे हैं ? **1**

(i) साधारणजन (ii) अमीर लोग (iii) पेड़ (iv) समाज।

उत्तर—(i) साधारणजन।

(e) आकाश का पर्यायवाची नहीं है— **1**

(i) गगन (ii) व्योम (iii) नभ (iv) उदधि।

उत्तर—(iv) उदधि।

(ब) उचित सम्बन्ध जोड़िए— **5**

1. वीरांगना	—	फागगीत
2. फर्क	—	मैग्सेसे
3. किरण बेदी	—	भोला-भाला
4. बछिया का ताऊ	—	केदारनाथ अग्रवाल
5. होली	—	विष्णु प्रभाकर

उत्तर—1. वीरांगना — केदारनाथ अग्रवाल

2. फर्क — विष्णु प्रभाकर
3. किरण बेदी — मैग्सेसे
4. बछिया का ताऊ — भोला-भाला
5. होली — फाग-गीत

(स) एक वाक्य में उत्तर दीजिए—

(1) तुलसीदास के आराध्य कौन थे ? **1**

उत्तर—तुलसीदास के आराध्य श्रीराम भगवान थे।

(2) मीरा ने किसको अपना पति माना ? **1**

उत्तर—मीरा ने श्री ष्ण को अपना पति माना।

(3) कौन तालाब का पानी पी रहा है ? **1**

उत्तर—तालाब का पानी पत्थर पी रहा है।

(4) रहीम ने धागे की तुलना किससे की है ? **1**

उत्तर—रहीम ने धागे की तुलना प्रेम से की है।

(5) उपमेय में उपमान की संभावना हो वह कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर—उपमेय में उपमान की संभावना हो वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

(6) रस के कितने अंग हैं ? **1**

उत्तर—रस के चार अंग होते हैं।

(7) 'शेर की दाढ़ से गोश्त निकालना' का अर्थ बताइए। **1**

उत्तर—बहुत ही मुश्किल का काम।

(8) प्रवाह चार्ट को और क्या कहते हैं ? **1**

उत्तर—प्रवाह चार्ट को फ्लो चार्ट कहते हैं।

(9) वाक्य किसे कहते हैं ? **1**

उत्तर—शब्द का वह समूह जिससे पूरा-पूरा भाव प्रकट होता है, वाक्य कहलाता है।

(10) कृष्ण गले में क्या पहने हैं ? **1**

उत्तर— ष्ण गले में कठुला (हँसुली) पहने हुए हैं।

(11) साक्षात्कार को अंग्रेजी में क्या कहते हैं ? **1**

उत्तर—साक्षात्कार को अंग्रेजी में इण्टरव्यू कहते हैं।

(12) परियोजना के लिए अंग्रेजी में किस शब्द का प्रयोग होता है ? **1**

उत्तर—परियोजना के लिये अंग्रेजी में प्रोजेक्ट" शब्द का प्रयोग होता है।

नोट—प्रश्न त्त मांक 2 से 9 तक 4 अंक हैं। कम-से-कम 50 या अधिकतम 75 शब्द में उत्तर दीजिए।

प्रश्न 2. कबीर ने गुरु को कुम्हार क्यों माना है ? **4**

उत्तर—कबीर ने गुरु को इसलिए कुम्हार माना है क्योंकि कुम्हार जैसा घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्यों को तैयार करता है। गुरु भी कुम्हार की तरह अपने शिष्यों को अन्दर से सहायता देता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें धेत्साहित करता है। जिस ध्कार कुम्हार घड़े को बाहर से थपकी से चोट करता जाता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को बाहर से डाँटता-डपटता है, उनकी कमजोरियों को बताता है और उन्हें सुधारने का निर्देश देता है।

अथवा

प्रश्न—नाराज स्वजनों को क्या मना लेना चाहिए ?

उत्तर—माला टूटने पर हम उसे पुनः बना लेते हैं; मोती कीमती होते हैं। उन्हें फेंका नहीं जा

सकता। स्वजन भी मोतियों के समान होते हैं। अत: उन्हें नाराज नहीं किया जा सकता। नाराज होने पर इसलिए मना लेना चाहिए।

प्रश्न 3. कवि वृंद के अनुसार नैना क्या बता देते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए। 4

उत्तर—कवि वृंद के अनुसार नयनों के माध्यम से मन के भावों को प्रकट किया जाता है।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।

अथवा

प्रश्न—आदिवासियों की किन्हीं चार प्रथाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आदिवासियों की चार प्रथाओं के नाम—

(1) छ ीसगढ़ की जनजातियाँ गोल गधेड़े,

(2) उ ारांचल के भोटिया समुदाय की अन्तिम संस्कार की प्रथा,

(3) झारखंड के आदिवासियों में जनी शिकार प्रथा, और

(4) थारुओं का ब्रहजर त्यौहार।

प्रश्न 4. 'इसे जगाओ' कविता का मूल निर्देश अपने शब्दों में लिखिए। 4

उत्तर—कवि ने अपनी कल्पना और जीवन-जगत के गहरे अनुभव का प्रयोग करते हुए सोए हुए या समय की गति न पहचानने वाले आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश दिया है। दिशाहीन भटकन की अपेक्षा सोच-समझकर ध्यास करने तथा आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।

अथवा

प्रश्न—शब्द शक्ति किसे कहते हैं और यह कितने प्रकार की होती है ? लिखिए।

उत्तर—शब्द शक्ति की परिभाषा—शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापारों को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के प्रकार—अर्थ बोध पाने की मुख्यत: तीन विधियाँ हो सकती हैं। इन्हीं के आधार पर शब्द शक्ति के तीन भेद माने गये हैं—

1. अभिधा—जो वाच्यार्थ पर आधारित है।

2. लक्षणा—जो लक्ष्यार्थ पर आधारित है।

3. व्यंजना—जो व्यंग्यार्थ पर आधारित है।

1. अभिधा शब्द शक्ति की परिभाषा—''जिस शब्द शक्ति द्वारा मुख्य अर्थ का प्रत्यक्ष बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।'' जैसे—

(1) अपना घर सबको प्यारा होता है।

(2) राम के "ताजी बीमार हैं।

(3) दशरथ अयोध्या के राजा हैं।

2. लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा— मुख्य अर्थ के बाधा होने पर प्रयोजन के आध ाार पर जिस शक्ति के द्वारा अभिधेयार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ का बोध होता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं।"

जैसे—(1) रानी कमलमुखी है। (2) सुरेश तो गधा है। (3) वह शेर है।

3. व्यंजना शब्द शक्ति की परिभाषा—''शब्द के जिस व्यापार से उसके मुख्य अर्थ और लक्ष्य अर्थ से भिन्न किसी अन्य विशेष अर्थ का बोध होता है उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं।'' उदाहरण—

गौरी पूजनि जननि पठाई।
करत प्रकाश किरत फुलवाई।।

प्रश्न 5. 'अच्छा कौन' अथवा 'फर्क' कहानी का सारांश लिखिए। 4

उत्तर—'अच्छा कौन' का निष्कर्ष है कि सभी भाषाएँ अच्छी हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। भारत में जब दो या अधिक भाषा-भाषी मिलते हैं तो हिन्दी में बात करते हैं।

हिन्दी राष्ट्र भाषा के साथ-साथ सम्पर्क भाषा भी है। हिन्दी को भारत का हर भाषा-भाषी रूप समझ सकता है। हिन्दी लगभग भारत के सभी भागों में बोली जाती है।

"फर्क" कथा से निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य, मनुष्य में फर्क करता है, जानवर नहीं। जानवर सब मिल-जुलकर रहते हैं। जानवर रंगभेद, जाति भेद, धर्म भेद भी नहीं जानते। हमें जानवरों से 'फर्क' न करने का गुण सीखना चाहिए।

प्रश्न 6. दोहा अथवा चौपाई को सोदाहरण समझाइए। **4**

दोहा

लक्षण—इसके प्रत्येक चार चरण होते हैं। इसके विषम (प्रथम व तृतीय) चरण में 13-11 मात्राएँ तथा सम (द्वितीय एवं चतुर्थ) चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं, इसके विषम चरणों के अन्त में गुरु-लघु (ऽ, ।) नहीं होना चाहिए।

भूमि जीव संकुल रहे, गए सरद रितु पाई।
सद्गुरु मिले जाहिं, संसय भ्रम समुदाई।।

अथवा

चौपाई (16 मात्रा)

चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं, अन्त में दो गुरु (ऽ, ऽ) होने से गति अथवा लय सुन्दर बन जाती है।

उदाहरण—

ऽ । । । । । । । । । । ऽ ऽ = 16 । । । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

राम भजन बिनु सुनहुँ खगेसा, मिटहि न जीवन केरि कलेसा।

प्रश्न 7. चेतन "ण्ड किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए। **4**

उत्तर—चेतन "ण्ड वे होते हैं जो अपने वातावरण से कुछ ग्रहण करते हैं और कुछ निकालते हैं। ये बाहरी वातावरण से अपने बचाव के लिए भी प्रयत्नशील होते हैं। हमारा शरीर उन्नत प्रकार का चेतन "ण्ड है और वह अनेक स्तरों पर अपनी सुरक्षा का प्रयत्न करता है। जड़ निर्जीव है, चेतन "ण्ड के ये दोनों लक्षण जड़ "ण्डों में नहीं पाए जाते हैं।

अथवा

प्रश्न—'बहुत दिनों बाद' में ग्राम्य-जीवन की झाँकी किस प्रकार प्रस्तुत की है ?

उत्तर—'बहुत दिनों के बाद' कविता में ग्राम की बहुत मनोहर झाँकी ध्स्तुत की गई है। खेतों में सुनहरी फसल पकी खड़ी है। कोकिल कंठी किशोरियाँ धान कूट रही हैं। मौलसिरी से ताजे खिले सुगन्धित फूल झड़ रहे हैं। तालाबों में तालमखाने के पौधे और खेतों में गन्ने के पौ ो बड़े हो गये हैं। गाँव की पगडंडी की चंदनवर्णी धूल सुखदायी है। चंदनवर्णी से तात्पर्य है गाँव की धूल प्रदूषण मुक्त है। इस ध्कार गाँव की निर्मल, अ तिम, आलौकिक और अद्वितीय सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 8. शहरी भाग-दौड़ की जिन्दगी की तुलना ग्राम्य-जीवन से किस प्रकार की गई है ? **4**

उत्तर—शहरी भाग-दौड़ से भरी जिन्दगी की तुलना ग्राम्य जीवन के शान्त और अ त्रिम सौन्दर्य से की गई है। गाँव का वातावरण बहुत ही स्वच्छ और निर्मल होता है। शहर के भीड़-भाड़ भरे वातावरण में कई प्रकार की अशुद्धियाँ घुली रहती हैं। शहर के लोग जब गाँव आते हैं तो गाँव की हर चीज आनन्दायक लगती है। गाँव की सादगी, सरलता, शुद्धता सुखद अनुभूति प्रदान करती है।

अथवा

प्रश्न—विषाणु किसे कहते हैं ? समझाइए।

उत्तर—विषाणु बहुत ही सूक्ष्म जीवाणु होते हैं जो सूक्ष्मदर्शी से भी दिखाई नहीं देते, विषाणु कहलाते हैं और ये हमारे शरीर में प्रवेश कर गम्भीर बीमारियाँ उत्पन्न करते हैं।

प्रश्न 9. 'बहादुर' पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **4**

उत्तर—बहादुर एक गोरा, ठिंगना, गरीब नेपाली लड़का है। वह एक बहादुर बालक है। उसमें बचपन का भोलापन और संवेदनशीलता भी है। वह ईमानदार है। बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। वह स्वाभिमानी व क र्व्यनिष्ठ बालक है।

अथवा

प्रश्न—बहादुर की पारिवारिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—बहादुर का गाँव बिहार और नेपाल की सीमा पर था। उसके "ता युद्ध में मारे गये थे। उसकी माँ ही सारे परिवार का भरण-पोषण करती थी। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसकी माँ चाहती थी कि बहादुर काम में हाथ बँटाए।

प्रश्न 10. जयशंकर प्रसाद अथवा रसखान के साहित्यिक जीवन का परिचय निम्न बिन्दुओं में दीजिए— **2 + 1 + 1 + 1 = 6**

दो रचनाएँ, भावपक्ष एवं कलापक्ष।

उत्तर—

जयशंकर प्रसाद

दो रचनाएँ—कामायनी, आँसू।

भावपक्ष—ध्साद जी छायावाद के आधार स्तम्भ हैं। आपने ध ति का बहुत ही सुन्दर मानवीकरण किया है। ध्सार के साहित्य में भारत के अतीत के दर्शन होते हैं। आपके काव्य में रहस्यमयी सत्ता का आभास मिलता है।

कलापक्ष—जयशंकर ध्साद खड़ी बोली के बहुत ही समर्थ कवि थे। भाषा व्याकरणसम्मत है, किन्तु सरल एवं सुगम है। संस् त के शब्दों का अत्यधिक ध्योग होने पर भी भाषा क्लिष्ट नहीं हुई है। ध्साद जी ने मानवीकरण, उपमा, उत्ध्रेक्षा एवं रूपक आदि अलंकारों का ध्योग अधिक किया है।

अथवा

रसखान

दो रचनाएँ—सुजान रसखान, प्रेमवाटिका।

कलापक्ष—रसखान की कविताओं का मुख्य विषय ष्ण और ब्रज ध्रेम ही है। ष्ण के ध्रति अनन्य भक्ति और तीव्र अनुभूति रसखान की विशेषताएँ हैं।

भावपक्ष—रसखान की भाषा रस की खान है। सरल एवं सरस, ब्रजभाष में काव्य रचना करने वाले रसखान के काव्य में दोहा, सवैया, कवि ा आदि छंदों एवं उपमा, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों की अद्‌भुत छटा देखी जा सकती है।

प्रश्न 11. धर्मवीर भारती अथवा रामदरश मिश्र के साहित्यिक जीवन का परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए— **2 + 3 + 1 = 6**

दो रचनाएँ, भाषा-शैली, साहित्य में स्थान।

उत्तर—

धर्मवीर भारती

दो रचनाएँ—(1) गुनाहों का देवता, (2) अंधायुग।

भाषा-शैली—लेखक ने अपनी भाषा में ध्तीकों एवं बिम्बों का ध्योग बहुत ही सार्थक रूप में किया है। गद्य में भी वे बिम्बों और ध्तीकों की काव्य भाषा का ध्योग सुन्दरतापूर्ण करते हैं। भाषा ध्तीकों के कारण कहीं-कहीं दुरूह लगती है किन्तु भाषा में लयात्मकता दिखाई देती है। इनकी आकर्षण भाषा-शैली आत्मीयता और स्वच्छंदता को स्पष्ट करती है।

अथवा

डॉ. रामदरश मिश्र

लेखक परिचय—'सरकारी मकान' कहानी के लेखक डॉ. रामदरश मिश्र हैं। उनका जन्म 15 अगस्त, 1924 ई. को गोरखपुर जिले के डुमरी गाँव में हुआ था। उन्होंने एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से प्रोफेसर पद से सेवा मुक्त हुए। वे उपन्यासकार, कहानीकार, कवि, ललित निबन्धकार, यात्रा वृत्तान्त लेखक, आत्मकथा लेखक और संस्मरण लेखक हैं। उनकी रचनाओं में उनका सहज, सरल, निश्छल व्यक्तित्व छलक पड़ता है।

रामदरश मिश्र की कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

काव्य-संग्रह—पक गई है धूप, दिन एक नदी बन गया, बारिश में भीगते बच्चे।

उपन्यास—पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ।

कहानी संग्रह—खाली घर, एक वह, दिनचर्या।

ललित निबन्ध संग्रह—कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस।

यात्रा-वर्णन—तना हुआ इन्द्रधनुष, भोर का सपना।

आत्मकथा—सहचर है समय, स्मृतियों के छन्द।

भाषा-शैली—सरल सहज भाषा, समझ में आने वाले शब्द और छोटे-छोटे वाक्य मिश्र जी की भाषा-शैली की विशेषता है। आपने संस् त के मूल शब्द तथा अरबी, फारसी एवं देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से इनके साहित्य में स्वाभाविकता आ गई है।

साहित्य में स्थान—आपने सभी विधाओं पर लेखनी चलाई है। आपका साहित्य उच्चकोटि का है।

प्रश्न 12. निम्न काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

1 + 1 + 3 + 1 = 6

खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह तलिका भी भर लाई
मधु मुकुल नवल रस गागरी,

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'बीती विभावरी जाग री' कविता से लिया गया है।

प्रसंग—धत:काल का ध तिक उपमानों के द्वारा चित्रण।

व्याख्या—पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा है। धीमी-धीमी हवा चलने से कोपलें थिरकने लगी हैं। देखो! यह लता भी अपने अधखिले पूल रूपी गगरी में नया रस भर लाई है।

विशेष—(1) लो यह लतिका भी भर लाई ..... में लता को उषा के ही समान स्त्री रूप में प्रयुक्त किया गया है, अत: यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

(2) 'मधु-मुकुल नवल रस गागरी' में रूपक है, क्योंकि मुकुल में (कलियों में) रस की छोटी-छोटी गगरियों का अभेद आरोप किया गया है।

(3) 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में अनुप्रास के साथ-साथ उपमा का भी सौन्दर्य है।

(4) 'कुल-कुल' से यही तात्पर्य है, जल अथवा मदिरा की भरी हुई सुराही को उड़ेलते हुए निकलने वाला स्वर। सुबह-सुबह कुछ पक्षी ऐसी ही आवाज में बोलते हैं और बहुत सुन्दर लगते हैं।

अथवा

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू, जैसी बनी सिर सुंदर चोरी।

खेलत खात फिरै अंगना, पग पैंजनी बाजत कटि पीरी कछोटी।
या छवि को रसखान विलोकत, वारत कामकला निधि कोटी,
काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सौ ले गयौ माखन रोटी।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ रसखान कवि द्वारा रचित सवैया पाठ से उद्धृत हैं।

प्रसंग—ध्स्तुत छंद में कवि ने भगवान श्री ष्ण के बाल स्वरूप और बाल त्रि याओं का मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या—बालक ष्ण धूल में सने हुए घूम रहे हैं। पैरों में पैजनियाँ बज रही हैं और वे पीले रंग का वस्त्र पहने हुए हैं। बालक ष्ण के उस रूप सौन्दर्य की मनोहारी मुप्रा को देखकर कामदेव अपनी करोड़ों कलाओं को न्यौछावर कर रहे हैं। हे सखी वह कौआ बड़ा ही भाग्यशाली है जो बालक ष्ण के हाथ से माखन-रोटी छीनकर ले गया।

विशेष—श्लेष अलंकारों की छटा, वर्णन में सजीवता व चित्रोपमता है।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
1 + 1 + 3 + 1 = 6

बनवारी की चिट्ठी आई तो सुमित्रा के साथ लाजो भी खिल उठी। उसने सुना कि सुमित्रा लोगों को सुना-सुनाकर कह रही थी मेरा अफसर बेटा मुझे लेने आ रहा है। मैं कहती थी न वह किसी लाचारी में फँसा होगा। आज तुम लोगों को परतीति हुई कि नहीं ? अरे, अपने बेटे को माँ ही पहचान सकती है दूसरे लोग क्या पहचानेंगे।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के कहानी 'सरकारी मकान' से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. रामदरश मिश्रजी हैं।

प्रसंग—शहर से अपने बेटे की चिट्ठी आने पर सुमित्रा की प्रतिक्रिया।

व्याख्या—सुमित्रा, लाजो की पक्की सहेली है। सुमित्रा का बेटा शहर में रहता है। वह शहर में नौकरी करता है, बड़ा अफसर है, वह शहर से लाजो को ले जाने के लिए आता है, जिससे सुमित्रा के साथ-साथ लाजो भी बहुत खुश होती है, सुमित्रा लोगों को बताती है कि वह मेरा बेटा है। वह अपने आपको नहीं जानता है कि वह सुमित्रा का बेटा है।

अथवा

पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया है या शायद सबको कुछ मिल गया हो, जिसे अन्दर ही अन्दर सहेजने में सब आत्मलीन हैं या अपने में डूब गए हों।

व्याख्या—पर्वतीय प्रदेश के सौन्दर्य का अवलोकन करने लेखक अपने मित्र के साथ गए। उस नैसर्गिक सुन्दरता को देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये। सूर्यास्त हो गया। संध्याकाल होने पर धीरे-धीरे अन्धकार होने लगा। अँधेरे की कालिमा ने नेत्रों से ओझल होते सौन्दर्य को जाते देखकर सभी चुपचाप हो गए। उनकी चुप्पी से ऐसा अनुभव होने लगा मानो उनका सबकुछ छिन गया हो। वे सौन्दर्य के रस को अपनी आत्मा में केन्द्रित करने में लगे हुए हैं अर्थात् वे सौन्दर्य को अपनी आत्मा में समा लेना चाहते हैं।

प्रश्न 14. छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल के सचिव की अपनी अंक सूची की त्रुटि-सुधार हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए। **6**

उत्तर—

प्रति,

सचिव,

छ ीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल

रायपुर (छ. ग.)

विषय—अंकसूची की त्रुटि सुधार हेतु।

निवेदन है कि मेरी कक्षा दसवीं की अंकसूची में भूलवश मेरे "ताजी का नाम श्री रमेश शर्मा से मुकेश शर्म हो गया है। मैंने यह परीक्षा सन् 2011 में दी थी। मुझे अंकसूची में जो त्रुटि है उसे सुधारकर नयी अंकसूची भेजने की पा करेंगे। इसके लिये निर्धारित शुल्क ₹ 70 रु. बैंक ड्राफ्ट चालान नं. 37701 आपके नाम से भेज रहा हूँ।

मुझसे सम्बन्धित जानकारी निम्नानुसार है—

1. नाम	—	सूरज शर्मा
2. "ता का नाम	—	श्री रमेश शर्मा
3. परीक्षा	—	राज्य ओपन स्कूल कक्षा दसवीं 2011
4. परीक्षा केन्द्र क्र.	—	7523
4. परीक्षा केन्द्र	—	शा. उ. मा. वि. रायपुर
5. पूरा पता	—	सूरज शर्मा S/o. श्री रमेश शर्मा, पो.—माना बस्ती, जिला-रायपुर (छ. ग.)
7. संलग्न बैंक चालान	—	₹ 70

विनीत

सूरज शर्मा

अथवा

प्रश्न—अपने मित्र को जन्मदिवस पर एक बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 के उत्तर क्रमांक 12 देखें।

प्रश्न 15. निम्न अपठित अंश को पढ़कर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

नारी नर की शक्ति है। वह माता, बहन, पत्नी, पुत्री आदि रूपों में पुरुषों में कर्त्तव्य की भावना जगाती है। वह ममतामयी है। अतः पुष्प के समान कोमल है, किन्तु चोट खाकर वह अत्याचार के विरुद्ध जब खड़ी होती है तब वह वज्र के समान कठोर हो जाती है। तब उसका एक ही रूप होता है और वह है दुर्गा का। वास्तव में नारी शक्ति का ही रूप है जिसमें सभी शक्तियाँ समाहित हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए। **2**

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए। **4**

उत्तर—(क) शीर्षक—नारी का स्वरूप।

(ख) सारांश—नारी सर्वशक्ति है, वह विविध स्वरूपा है। जहाँ नारी पुरुष में कर्तव्यबो ा जाग्रत कराने वाली ममतामयी है, वहीं अत्याचार के विरुद्ध वज्र सी कठोर साक्षात दुर्गा है।

प्रश्न 16. किसी एक विषय पर 250 शब्दों में एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए— **10**

(1) पर्यावरण

(2) छात्र जीवन में अनुशासन

(3) कम्प्यूटर आज की आवश्यकता

(4) दूरदर्शन

उत्तर—

1. पर्यावरण

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण क्या है, (3) प्रदूषण के कारण, (4) प्रदूषण रोकने के उपाय।

प्रस्तावना—गंगा मैली हो गई, गलियों से बदबू आ रही है, आकाश विषैली धूलों और ध ुओं से भर उठा है, वायुमण्डल विषा हो गया है। प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल हो गई कि लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

प्रदूषण क्या है ?—जल, वायु व भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में होने वाला कोई भी अवांछनीय परिवर्तन प्रदूषण है। एक ओर दुनिया तेजी से विकास कर रही है, जिन्दगी को सजाने-सँवारने के नये तरीके ढूँढ़ रही है, दूसरी ओर वह तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इस प्रदूषण के कारण जीना दूभर होता जा रहा है। आज आसमान जहरीले धुएँ से भरता जा रहा है। नदियों का पानी गन्दा होता जा रहा है। सारी जलवायु, सारा वातावरण दूषित हो गया है। इसी वातावरण प्रदूषण का वैज्ञानिक नाम है—प्रदूषण या 'पॉल्यूशन'।

प्रदूषण के कारण—आज सारे विश्व के समक्ष जनसंख्या की वृद्धि सबसे बड़ी समस्या है और पर्यावरण प्रदूषण में जनसंख्या की वृद्धि ने भी अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। औद्योगीकरण के कारण, आए दिन नये-नये कारखानों की स्थापना की जा रही है, इनसे निकलने वाले धुएँ के कारण वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है। साथ ही मोटरों, रेलगाड़ियों आदि से निकलने वाले धुएँ से भी पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इनके कारण साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का मिल पाना मुश्किल है।

वायु के साथ-साथ जल भी प्रदूषित हो गया है। नदियों का पानी दूषित करने में बड़े कारखानों का सबसे बड़ा हाथ है। कारखाने का सारा कूड़ा-कचरा नदी के हवाले कर दिया जाता है, बिना यह सोचे कि इनमें से बहुत कुछ पानी में घुल जाएँगे, जिससे मछलियाँ मर जायेंगी और मनुष्य के पीने योग्य नहीं रह जाएगा।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय—वायु प्रदूषण को रोकने के लिए चिमनियों में फिल्टर लगाये जायें, जो प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमण्डल में प्रविष्ट न होने दें। जल-प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है कि जल स्रोतों में गन्दे पानी को न डाला जाये तथा उद्योग-धन्धों से निर्गत पानी को भूमिगत किया जाये। पर्यावरण संरक्षण के लिए वनों की रक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। वृक्ष और वनस्पतियाँ वायुमण्डल से कार्बन-डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं तथा ऑक्स. ीजन छोड़ते हैं। अगर वृक्ष तथा वनस्पतियाँ न हों तो पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाले वाहनों, कारखानों और प्राणी जगत् द्वारा छोड़ी हुई कार्बन-डाइऑक्साइड से सम्पूर्ण वातावरण भर जाएगा। वृक्ष पर्यावरण सन्तुलन के सर्वोत्तम साधन हैं। अत: हम अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण प्रदूषण की हानियों से बच सकते हैं।

यदि चाहते हो देश की सुरक्षा,
तो प्रकृति को सुरक्षित करना होगा।
यदि नहीं करते प्रदूषण से सुरक्षा,
तो कैसे हो पायेगी आत्मरक्षा।।

2. छात्र जीवन में अनुशासन

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन का महत्व, (3) उपसंहार।

प्रस्तावना—अनुशासन व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र सबको महान् बनाता है। विशेषकर छात्र जीवन तो अनुशासन प्रधान होता है। इसके बिना छात्रों में अच्छे संस्कार नहीं डाले जा सकते। अध्यापन कार्य ठीक से नहीं किया जा सकता। अच्छी पढ़ाई, अच्छे संस्कार एवं गुणों के विकास के लिए अनुशासन आधारशिला का काम करता है।

विद्यार्थी जीवन का महत्व—विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा "ण्ड है, जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह, सौहार्द, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करता था। जहाँ उसे विद्या अध्ययन के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग-तपस्या, धर्म-कर्म, सत्य-निष्ठा, शुद्ध आचार-विचार आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमारे धर्म ग्रन्थों में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पंच लक्षमणम्॥

अर्थात् विद्या-धन चाहने वाले के पास कौए जैसी लगन, बगुले जैसा एकाग्र ध्यान, कु ो जैसी अल्प एवं सचेत निद्रा, घर से दूर रह सकने वाला स्वभाव, आवश्यकता से कम भोजन करने जैसा संयम रहना चाहिए। ये पाँच गुण विद्यार्थी को विद्या अर्जन करने में तो सहायता करते ही हैं बल्कि आगामी स्वर्णिम जीवन के भी आधार हैं। उक्त पाँच लक्षणों से युक्त विद्यार्थी प्राचीनकाल में राजा तक से उचित मान-सम्मान प्राप्त करता था। वह सदाचार का प्रतीक माना जाता था।

जो छात्र अपने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ता, उसका सम्पूण ा जीवन अन्धकारमय हो जाता है। छात्र जिस गम्भीर ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय में आते हैं, उसे पाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार—जिस ध्कार किसी भवन या इमारत की चिरस्थिरता और दृढ़ता उसकी नींव की मजबूती पर अवलम्बित है, उसी ध्कार किसी व्यक्ति के जीवन की सुख-समृद्धि, शक्ति और सफलता उसकी अनुशासित छात्रावस्था पर निर्भर है। **गाँधी जी** ने कहा— अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही कार्य करता है, जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज।"

3. कम्प्यूटर की उपयोगिता

रूपरेखा—प्रस्तावना, 2. दैनिक जीवन में कम्प्यूटर, 3. कम्प्यूटर के भाग, 4. कम्प्यूटर की विशेषताएँ, 5. उपसंहार।

प्रस्तावना—मानव की व्यस्तता एवं विज्ञान की ध्गति के कारण आज विश्व में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। ज्ञान, विज्ञान, रक्षा, चिकित्सा एवं ज्ञान का भण्डार सुरक्षित रखने के लिए कम्प्यूटर का ध्योग अनिवार्य हो रहा है। कार्य में शीघ्रता, स्मृति में लाखों सूचनाएँ रखना एवं बटन दबाते ही वांछित जानकारी प्रदान करना कम्प्यूटर की कुछ महान विशेषताएँ हैं।

दैनिक जीवन में कम्प्यूटर—व्यवसाय का विस्तार एवं आधुनिक विज्ञान की ध्गति के साथ दैनिक जीवन में कम्प्यूटर का ध्योग बढ़ गया है। पलक झपकते ही संख्याओं का गुणा, भाग, जोड़, बाकी, वर्गमूल, घनमूल आदि कार्य कर कम्प्यूटर विद्यार्थी का श्रमहरण करता है। सामाजिक जीवन में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में गिनतियाँ, जटिल और विस्तृत होती गई हैं। शस्त्रों की गति एवं निशाने पर नियन्त्रण भी एक अहम् प्रश्न था, जो कम्प्यूटर ने हल कर दिया है। अब सैनिक छिपकर भी बमों का विस्फोट रिमोट कन्ट्रोल से कर सकता है। बिना गलती के संख्याओं को मनमानी दिशा में मोड़ा जा सकता है।

कम्प्यूटर के भाग—कम्प्यूटर के पाँच भाग होते हैं—(1) स्मरण तन्त्र, (ii) नियन्त्रण कक्ष, (iii) अंकगणित का अंग, (iv) इनपुट यन्त्र, (v) आउटपुट यन्त्र।

स्मरण तन्त्र में सूचनाएँ भर दी जाती हैं, जो समय पर बटन दबाते ही प्राप्त की जा सकती हैं। नियन्त्रण कक्ष का कार्य कम्प्यूटर कार्य पर नियन्त्रण करना है। गणित विभाग में विभिन्न गणनाओं का जटिल संयन्त्र होता है। इनपुट विभाग सामग्री ग्रहण करता है। आउटपुट विभाग वांछित सामग्री को पटल पर रखता है या लिखित में बाहर निकालता है।

कम्प्यूटर की कुछ विशेषताएँ—इलेक्ट्रॉनिक्स की प्रगति में एवं गणना को गति देने में कम्प्यूटर 10 लाख तक की गणना सरलता से कर देता है। अविराम गणना और शुद्ध गणना ही कम्प्यूटर की विशेषता है। कम्प्यूटर के कारण उद्योग के क्षेत्र में प्रगति गति 10 गुणा से लेकर हजार गुणा बढ़ गई है। डिजाइन के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर ने त्र ंति ला दी है। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में शोध एवं उपचार क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह असम्भव को सम्भव बनाने में जुटा हुआ है। यह प्रगति का अचूक हथियार है, जो मानव की लापरवाही से चूक कर सकता है।

कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क की अभूतपूर्वक देन है।

4. दूरदर्शन की उपयोगिता
अथवा
दूरदर्शन से लाभ और हानियाँ
अथवा
दूरदर्शन और मनोरंजन

रूपरेखा—1. प्रस्तावना, 2. दूरदर्शन का इतिहास और सिद्धान्त, 3. भारत में दूरदर्शन, 4. दूरदर्शन की उपयोगिता, 5. दूरदर्शन से हानियाँ, 6. उपसंहार—दूरदर्शन का भविष्य।

आज विश्व के हर मानव के जीवन के हर पल में विज्ञान समाया हुआ है। आज विज्ञान के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। विज्ञान के सम्बन्ध में निम्न कथन सत्य है—

"जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है।
न तेरी सी खुशबू, न तेरी सी बू है।"

विज्ञान के द्वारा आज दूरतम स्थान भी समीप हो गये हैं। रेल, वायुयान, मोटर साइकिल आदि साधनों के द्वारा कोई भी स्थान दूर नहीं है। विज्ञान की ही देन—'दूरदर्शन' के द्वारा हजारों मील के दृश्यों, घटनाओं आदि को हूबहू हमारी आँखें देख सकती हैं। टेलीविजन के आविष्कारों ने दूरस्थ स्थानों, वस्तुओं और व्य ि यों के चित्र सुलभ कर दिये हैं। टेलीविजन विज्ञान का एक महत्वपूर्ण एवं चमत्कारिक आविष्कार है।

दूरदर्शन का आविष्कार अमेरिका के वैज्ञानिक जॉन लॉगी वैयर्ड ने किया था। इसके आविष्कार के थोड़े समय बाद ही संसार के विकसित देशों में इसका प्रसार इतना अधिक हो गया है कि प्रत्येक परिवार में इसका उपयोग शैन:-शनै: होने लगा। आज संसार के प्रत्येक देश में दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र है।

टेलीविजन का सिद्धान्त रेडियो के सिद्धान्त से बहुत मिलता है। रेडियो प्रसारण में वक्ता या गायक को ही आवाज सुनायी पड़ती है, किन्तु टेलीविजन में व ा या गायक की आवाज के साथ-साथ उसका चित्र भी प्रस्तुत हो जाता है।

टेलीविजन का सिद्धान्त रेडियो प्रणाली द्वारा भेजे गये चल व अचल वस्तुओं के भेजे गये चित्रों को प्राप्त करने वाला उपकरण है। इसमें चित्र विद्युत-प्रभाव के द्वारा बिम्बों को विद्युत चुम्बकीय

तरंगों में बदल दिया जाता है और फिर उन्हें सुदूर स्थानों तक प्रसारित किया जाता है। ये विद्युत् तरंगें टेलीविजन सैट पर पुनः चित्रों में बदल जाती हैं और ध्वनि तरंगें भी इसी के साथ-साथ कर्म करती हैं।

भारत में दूरदर्शन का सूत्रपात 15 सितम्बर, 1959 को दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थ॰ापना के साथ हुआ जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने किया। इसके बाद मुम्बई, श्रीनगर, अमृतसर, कोलकाता, चैन्नई और लखनऊ में दूरदर्शन केन्द्रों की स्थापना हुई। इसके अलावा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को अनुसारित (रिले) करने के लिए पूना, मंसूरी, लखनऊ, कानपुर तथा बंगलौर से रिले उपकेन्द्रों की स्थापना हुई। इसके बाद भी लघु शृ के दूरदर्शन रिले उपकेन्द्रों की स्थापना विभिन्न नगरों में हुई है और कुछ नगरों में हो रही है। इससे स्पष्ट है कि भारत में दूरदर्शन सेवाओं का विस्तार बहुत ही द्रुतगति से हुआ है और जनता के द्वारा इसका हार्दिक स्वागत किया गया है। यही कारण है कि आज भारत के छोटे-बड़े परिवारों में टेलीविजन सेट देखने को मिलते हैं।

दूरदर्शन की उपयोगिता सार्वभौमिक है। हमारे जीवन के विभिन्न पक्ष इसके द्वारा विभिन्न प्रकार से लाभान्वित होते हैं। नाटक, संगीत, खेलकूद आदि के दृश्यों को टेलीविजन के पर्दे पर रखकर हम मनोरंजन करते हैं। राजनीतिक नेता दूरदर्शन के द्वारा अपना सन्देश अधिक शक्तिशाली ढंग से जनता तक पहुँचा सकने में समर्थ होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविजन का प्रयोग सफलता के साथ किया जा रहा है। प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के विचार से शिक्षा मन्त्रालय ने टी॰ वी॰ सैटों की व्यवस्था स्कूलों के लिए की है। इसी प्रकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उच्चस्तरीय शिक्षा पाने वाले छात्रों के हितार्थ प्रसारित किया जाता है। विज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ प्रयोग दिखाने आवश्यक होते हैं, वहाँ टेलीविजन बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। किसानों के लिए खेती की नयी-नयी विधियाँ प्रसारित की जाती हैं। समुद्र के अन्दर खोज करने के लिए टेलीविजन का प्रयोग किया जाता है। रूसी उपग्रह में देखे गये कैमरे ने चन्द्रमा की सतह के चित्र ढाई मील से पृथ्वी तल पर भेजकर सभी को चमत॰ त कर दिया। प्रथम भारतीय अन्तरिक्ष यात्री श्री राकेश शर्मा ने अन्तरिक्ष से दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी से बातचीत की, जिसका टेलीविजन पर प्रसारण देखकर सभी भारतीय बहुत रोमांचित हुए। अतः टेलीविजन के द्वारा हम उन दृश्यों, घटनाओं और व्यृ यों आदि को अपनी आँखों से देख सकते हैं जिनके हमने जीवन में देखने की कल्पना भी न की हो तथा इसके सम्बन्॰ा में महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त होती है। अतः दूरदर्शन बहुत उपयोगी साधन है।

प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं—लाभकर व हानिकर। टेलीविजन भी इससे अछूता नहीं रहा। इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि इसका उपयोग जनसाधारण नहीं कर सकता, क्योंकि इसका मूल्य बहुत अधिक है। दूरदर्शन पर कुछ ऐसे कार्यत्त म प्रस्तुत किये जाते हैं जिसे लोगों की कुंठाओं, नग्नता और हिंसा के भाव जाग्रत हो जाते हैं।

लाभ-हानि की समीक्षा से यह स्पष्ट है कि दूरदर्शन आज के युग का एक महत्वपूर्ण मनोरंजन का साधन है। इसका उचित उपयोग करके देश को प्रगति के पथ पर अग्रसरित किया जा सकता है। हमें आशा करनी चाहिए कि भारत में दूरदर्शन के द्वारा लोगों के ज्ञान में अभिवृद्धि हो, उनका चरित्र बल बढ़े, राष्ट्रीय एकता मजबूत हो और भारत के सन्तुलित आर्थिक विकास में सहायता मिले। अतः भारत में दूरदर्शन का भविष्य देदीप्यमान है।

❑

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—2010

कक्षा—10वीं

विषय—हिन्दी

सेट—5

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश— (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न त्र मांक 1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं विकल्पीय है एवं इस प्रश्न पर 22 अंक आबंटित हैं जिसके अन्तर्गत खाली स्थान, सही-गलत, उचित सम्बन्ध आदि लिए गए हैं। प्रत्येक में 1 अंक आबंटित है।

(2) प्रश्न त्र मांक 2 से 9 तक लघु उ ारीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 4 अंक आबंटित हैं।

(3) प्रश्न त्र मांक 10 से 15 तक दीर्घ उ ारीय प्रश्न हैं। प्रत्येक में 6 अंक आबंटित हैं एवं प्रश्न त्र मांक 16 पर 10 अंक आबंटित हैं।

(4) प्रश्न त्र मांक 2 से 16 तक प्रत्येक प्रश्न के साथ अथवा के प्रश्न दिए गए हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (प्रत्येक पर 1 अंक)

प्रश्न 1. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प लिखिए—

(i) भयानक रस का स्थायी भाव है— **1**

(क) हास (ख) प्रेम (ग) भय (घ) निर्वेद

उत्तर—(ग) भय।

(ii) बीज यहाँ छिपा रहता है— **1**

(क) धरती में (ख) पानी में (ग) रेत में (घ) अंखुए के नीचे

उत्तर—(क) धरती में।

(iii) ऐंग्लो इण्डियन के अनुसार अंग्रेजी भाषा अच्छी है, क्योंकि उसे— **1**

(क) अंग्रेज और अमेरिकन बोलते हैं

(ख) कई देशों में पढ़ाई जाती है

(ग) ऐंग्लो इण्डियन बोलते हैं

(घ) विश्व के अधिकतर देशों में बोली जाती है

उत्तर—(घ) विश्व के अधिकतर देशों में बोली जाती है।

(iv) डिप्थीरिया रोग इस अंग में होता है— **1**

(क) कान (ख) नाक (ग) आँख (घ) गला

उत्तर—(घ) गला।

(v) किरण बेदी को पुरस्कार से सम्मानित किया गया— **1**

(क) मैग्सेसे पुरस्कार (ख) वीरता पुरस्कार

(ग) नोबेल पुरस्कार (घ) ज्ञानपीठ पुरस्कार

उत्तर—(क) मैग्सेसे पुरस्कार।

(vi) 'मेघ आए' कविता में इसका वर्णन किया गया है— **1**

(क) पाहुन का (ख) वर्षा ऋतु का (ग) आँधी का (घ) नदी का

उत्तर—(ख) वर्षा ऋतु का।

(vii) किसने कहा था—"स्विट्जरलैण्ड का आभास कौसानी में होता है।" **1**

(क) शुक्ल (ख) लेखक (ग) सेन (घ) गाँधीजी

उत्तर—(घ) गाँधीजी।

(viii)मीरा के पदों में यह भावना है— **1**

(क) निवेदन की (ख) आदेश की

(ग) समर्पण की (घ) पश्चाताप की

उत्तर—समर्पण की।

(ix) कहानी का आरम्भ इस घटना से होता है— **1**

(क) बनवारी के शहर जाने से (ख) सुमित्रा द्वारा चि ी पढ़वाने से

(ग) सरकारी मकान मिलने से (घ) बनवारी की शादी से

उत्तर—(ख) सुमित्रा द्वारा चि ी पढ़वाने से।

(x) अखबारों में प्रकाशित किये जाते हैं— **1**

(क) सभी समाचार (ख) परिचितों के समाचार

(ग) राजनीतिक दलों के समाचार (घ) महत्वपूर्ण समाचार

उत्तर—(घ) महत्वपूर्ण समाचार।

खाली स्थान की पूर्ति कीजिए—

(xi) कबीर ने आँगन में कुटी छबाकर ····· को बसाने के लिए कहा है। **1**

उत्तर—निंदक।

(xii) किशोरियाँ ····· कूटती हैं। **1**

उत्तर—धान।

(xiii) मनुष्य का शरीर ····· है। **1**

उत्तर—चेतन "ण्ड।

(xiv) किरण बेदी ने ····· की स्थापना की। **1**

उत्तर—बीट बॉक्स।

निम्नलिखित कथनों में सही कथन में (✓) तथा गलत कथन में (×) का चि लगाइए—

(xv) बीज को उगने के लिए केवल मिट्टी की जरूरत होती है। **1**

उत्तर—×

(xvi) वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं, क्षितिज कहलाता है। **1**

उत्तर—✓

(xvii)उल्लाला सममात्रिक छन्द है। **1**

उत्तर—✓

(xviii) गीतिका छन्द में 26 मात्राएँ होती हैं। **1**

उत्तर—✓

उचित सम्बन्ध जोड़िए—

(xix) हो	—	राम-रावण युद्ध	**1**
(xx) लंका	—	झारखंड	**1**
(xxi) सूरज	—	गतिशील	**1**
(xxii)पवन	—	ऊर्जा	**1**

उत्तर—(xix) हो — झारखंड

(xx) लंका — राम-रावण युद्ध

(xxi) सूरज — ऊर्जा

(xxii) पवन — गतिशील।

प्रश्न 2. छत्तीसगढ़ की जनजातियों की वैवाहिक प्रथा के बारे में संक्षेप में लिखिए। **4**

उत्तर—छ ीसगढ़ की जनजातियों में विवाह के लिए 'गोल गधेड़े' प्रथा प्रचलित है। इसमें बाड़े के बीचों-बीच एक स्तम्भ गाड़कर उस पर नारियल टाँग दिया जाता है। युवतियाँ बाड़े के भीतर और युवक बाड़े के बाहर रहते हैं। संकेत मिलते ही युवक स्तम्भ पर टँगे नारियल को तोड़ने जाता है। युवतियाँ उसे नारियल तोड़ने से रोकने की भरपूर चेष्टा करती हैं। यदि युवक कामयाब हो जाता है तो उसे मनपसन्द युवती चुनने का अधिकार मिल जाता है।

अथवा

प्रश्न—आदिवासी जन-समुदायों के प्रमुख व्यवसाय कौन-कौन से हैं ? सरकार इनके जीवन-यापन को सुधारने के लिए क्या-क्या कदम उठा रही है ?

उत्तर—आदिवासी जनसमुदाय के प्रमुख व्यवसाय खेती, पशुपालन, लकड़ी काटना, रस्सी बुनना आदि हैं। सरकार इनके जीवन स्तर को सुधारने के लिये इनके बीच मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन तथा कुटीर उद्योगों से सम्बन्धित अनेक योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर रही है।

प्रश्न 3. जब मेंढक बोलने लगते हैं तब कोयल क्यों मौन हो जाती है ? **4**

उत्तर—जब मेंढक बोलने लगते हैं तब कोयल की मीठी तान को कौन सुनेगा अर्थात् अज्ञानी लोग बढ़-चढ़कर बातें करने लगते हैं तो ज्ञानी की बात को कौन सुनता है ?

अथवा

प्रश्न—कबीर ने गुरु को कुम्हार क्यों कहा है ?

उत्तर—कबीर ने गुरु को इसलिए कुम्हार माना है क्योंकि कुम्हार जैसा घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्यों को तैयार करता है। गुरु भी कुम्हार की तरह अपने शिष्यों को अन्दर से सहायता देता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें धेत्साहित करता है। जिस ध्कार कुम्हार घड़े को बाहर से थपकी से चोट करता जाता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को बाहर से डाँटता-डपटता है, उनकी कमजोरियों को बताता है और उन्हें सुधारने का निर्देश देता है।

प्रश्न 4. 'इसे जगाओ' कविता का मूल संदेश लिखिए। **4**

उत्तर—कवि ने अपनी कल्पना और जीवन-जगत के गहरे अनुभव का प्रयोग करते हुए सोए हुए या समय की गति न पहचानने वाले आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश दिया है। दिशाहीन भटकन की अपेक्षा सोच-समझकर ध्यास करने तथा आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।

अथवा

प्रश्न—कविता में आई 'जो सच से बेखबर सपनों में, खोया पड़ा है' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सोया हुआ आदमी वक्त को ठीक से नहीं पहचान रहा, दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है इससे वह अनजान है। दुनिया और समाज का आज का सच क्या है ? उसे पता नहीं है। वह इन सबसे बेखबर सपनों में खोया हुआ है। जो आदमी सपनों में खोया रहता है वह सपने के सच को पाने के लिए प्रयास करने की समझ खो देता है, निद्रा टूटने पर स्वयं को वहीं का वहीं खड़ा पाता है।

प्रश्न 5. चतुर चिड़िया के लिए काला और सफेद दोनों रंगों के विशेषणों का प्रयोग क्यों हुआ है ? **4**

उत्तर—समाज में रहने वाले कुछ धनी लोग ऊपर से दिखने में, बात करने में अच्छे होते हैं—उनका यह रूप सफेद रंग का प्रतीक है। उनका आचरण धूर्तता, कपट, चालाकी और शोषण से पूर्ण होता है—यह काले रंग का प्रतीक है। चतुर चिड़िया के लिए काला और सफेद दोनों रंगों

के विशेषणों का इसलिए प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रश्न—व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?

उत्तर—ग्राम्य अंचल में जाने पर वहाँ सच्चा और वास्तविक प्रेम अनुभव होता है, जबकि व्यापारिक नगरों का प्रेम झूठा और काल्पनिक होता है। इसलिए ग्राम्यांचल को प्रेम के लिए उर्वर कहा गया है। वहाँ की मिट्टी जैसी उर्वर होती है, वैसे ही वहाँ लोगों के बीच रहने पर प्रेम बढ़ता है।

प्रश्न 6. किशोर, बहादुर से जो व्यवहार करता था, उससे किशोर के चरित्र की किन विशेषताओं का पता चलता है ? लिखिए। 4

उत्तर—किशोर बहादुर से जो व्यवहार करता था, उससे किशोर के चरित्र की निम्न विशेषताओं का पता चलता है—(1) स्वार्थी स्वयं का लाभ सोचने वाला। (2) परजीवी रहकर शान-शौकत और रोब-दाब का जीवन बिताने वाला। (3) निर्दयी व कठोर। (4) अमानवीय व्यवहार वाला।

अथवा

प्रश्न—किशोर के स्थान पर आप होते तो बहादुर से कैसा व्यवहार करते और क्यों ? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—किशोर के स्थान पर मैं होता तो बहादुर से पराये जैसा व्यवहार कभी नहीं करता। उसे अपना मानता और अपने जैसा व्यवहार करता, क्योंकि सब इन्सान बराबर हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं है। कोई पराया नहीं है। ईश्वर ने सबकी एक समान रचना की है तो आपस में भेदभाव क्यों हो ? सब मिल-जुलकर प्रेम से रहें और अपना काम ईमानदारी से करें।

प्रश्न 7. नीबू के व्यापारी और कंडक्टर के बीच के विवाद को कैसे सुलझाया गया ? समझाइए। 4

उत्तर—नीबू के व्यापारी और कण्डक्टर के बीच नीबू की ढुलाई को लेकर विवाद हुआ। व्यापारी ने समझौते के अन्तर्गत कण्डक्टर की नगद राशि के अतिरि तीस नीबू भी दिये।

अथवा

प्रश्न—बस और सरकारी तंत्र की किन्हीं दो समानताओं को लिखिए।

उत्तर—रोडवेज की बस अपनी शान में, चाल में सरकार के समान थी। बिल्कुल सरकारी स्वभाव। पहले लेट हुई फिर ओवरलोड।

एक आदमी को बस से उतारना,

सरकार में सूबाई मन्त्री की कैबिनेट से ड्रॉप करना,

बस का इंजन किसी अफसर के दिमाग की तरह गर्म हो गया था। उसे शान्त करने के लिए ठण्डा पानी डाला गया, जैसे—किसी नब्बे वर्ष के मन्त्री को ऑक्सीजन दी जा रही हो।

प्रश्न 8. कौसानी आ जाने पर भी बर्फ दिखाई न देने पर लेखक की मनोदशा कैसी हो गई थी ? 4

उत्तर—लेखक बर्फ देखने के लिए कौसानी गया और उसे बर्फ दिखाई नहीं दी तो वह गुस्सा हो गये और उनके गुस्से से बेचैनी उनके चेहरे पर दिखने लगी।

अथवा

प्रश्न—'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'मेघ आए' कविता सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा रचित है। कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान के आने का रोचक वर्णन किया है।

कविता में कुछ रीति-रिवाजों का भी मार्मिक चित्रण हुआ है। कवि की भाषा बहुत सरल और सहज है। कुछ ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग हुआ है; जैसे—बयार, पाहुन, घाघरा, फुहार, सुधि लीन्हीं, परात, अटारी आदि तथा बन-ठनकर आना, खुशी से आँसू बहाना जैसे मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 9. परियोजना की कोई चार विशेषताएँ लिखिए। 4

उत्तर—परियोजना की विशेषताएँ—(1) परियोजना तथ्यों तथा आँकड़ों पर आधारित होती है। (2) परियोजना किसी समस्या के निदान या विषय की व्यवस्थित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती है। (3) शैक्षिक परियोजना खेल-खेल में बहुत सारी बातें सीख जाने का अवसर प्रदान करती है। (4) इसमें अपनी भावनाओं को व्य करने की कम गुंजाइश रहती है।

अथवा

प्रश्न—इस कविता में 'जाग री' किसके लिए आया है ? कवि उसे क्यों जगाना चाहता है ?

उत्तर—इस कविता में 'जाग री' सखी के लिए आया है। कवि उसे इसलिए जगाना चाहता है क्योंकि सुबह हो गई है, पक्षियों के चहचहाने का स्वर सुनाई दे रहा है और धीमी-धीमी हवा से कोपलें थिरकने लगी हैं। सब उठकर अपने-अपने काम में लग गए हैं, उसे भी उठकर कोई काम करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक पर 6 अंक)

प्रश्न 10. वीरांगना की तुलना लोहे से क्यों की गई है ? **6**

उत्तर—नारी की तुलना लोहे से की गई है, क्योंकि जैसे लोहा बर्तन, औजार, हथियार आदि अनेक रूपों में ढलता है, वैसे ही नारी भी दु:ख, तकलीफ और पीड़ा सहकर अनेक रूपों में ढलती है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए, अपने सम्मान के लिए लक्ष्मीबाई की तरह वीरांगना बन जाती है, तो कभी दीन-दु:खियों के दु:ख कम करने के लिए मदर टेरेसा बन जाती है।

अथवा

प्रश्न—'दोहा छन्द' और 'गीतिका छन्द' को उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर—1. दोहा छन्द—दोहा छन्द में चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में अर्थात् विषम चरणों में 13-13 मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे चरण अर्थात् सम चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में लघु होना आवश्यक है। **उदाहरण**—

कारज धीरे होत हैं, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै, केतक सींचो नीर।।

2. गीतिका—यह एक मात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 एवं 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। अन्त में क्रमश: लघु-गुरु (।ऽ) होता है। **उदाहरण—**

हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीरव्रतधारी बनें।

प्रश्न 11. नागार्जुन अथवा जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए— **6**

जीवन-परिचय, रचनाएँ, भावपक्ष, कलापक्ष, साहित्य में स्थान।

उत्तर— **नागार्जुन**

जीवन-परिचय—प्रयोगवादी कविता के सश हस्ताक्षर कविवर नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के तरौनी गाँव में सन् 1911 में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा संस् त पाठशाला में हुई। इन्हें म. प्र. एवं उ ार प्रदेश हिन्दी अकादमी के द्वारा पुरस् त किया जा चुका है। आप घुमक्कड़ एवं फक्कड़ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

रचनाएँ—युगधार, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, भस्मासुर, नवतुरिया, डाक मोचन, वरुण के बेटे।

भावपक्ष—नागार्जुन ने समाज की विषमताओं, गरीबी, दु:खों तथा संकटों का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। यथार्थवादी दृष्टिकोण से उन्होंने जीवन को देखा एवं प्रस्तुत किया। नए ढंग की मौलिक रचनाओं में उन्होंने कम शब्दों में अधिक अर्थ को व्य किया है। उन्होंने दबे

हुए इन्सानों की पीड़ा को अपनी कविता में ढाला है। आम आदमी के जीवन से जुड़ी कविताएँ उन्होंने लिखीं।

कलापक्ष—उन्होंने हिन्दी तथा मैथिली दोनों भाषाओं में अपनी रचनाएँ लिखीं। खड़ी बोली हिन्दी भाषा में तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी के शब्द भी शामिल हैं। नागार्जुन की भाषा समृद्ध है। सरल एवं छोटी रचनाओं में लयबद्धता है। मु छन्द का प्रयोग है।

साहित्य में स्थान—आधुनिक कवियों में नागार्जुन का स्थान अद्वितीय है। आप किसी वाद या खेमे के साहित्यकार न होकर कबीर और निराला की परम्परा के कवि हैं। आपको नई कविता का पुराना कवि कहा जाता है।

अथवा

जयशंकर प्रसाद

जीवन-परिचय—जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 काशी में वाराणसी के एक प्रसिद्ध 'सूघनी साहू' परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में ही आपके माता-"ता का स्वर्गवास हो गया था। स्वा याय से ही आपने हिन्दी, अंग्रेजी, संस् त, बंगला, उर्दू-फारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मात्र 48 वर्ष की आयु में सन् 1937 को अपने गृहनगर काशी में ही आपका निधन हो गया।

रचनाएँ—झरना, आँसू, लहर, कामायनी (महाकाव्य), कानन कुसुम, करुणालय, प्रेम पथिक आदि हैं। प्रसाद जी ने नाटक और उपन्यास भी लिखे हैं।

भावपक्ष एवं कलापक्ष—दिसम्बर 2012 के हल क्रमांक 10 देखें।

साहित्य में स्थान—प्रसाद जी का कामायनी महाकाव्य विश्व काव्य ृंगार है। प्रसाद जी छायावाद के एक श्रेष्ठ कवि के साथ ही एक महान नाटककार और कहानीकार भी थे। हिन्दी साहित्य सदा ही आपका ऋणी रहेगा।

प्रश्न 12. निम्नलिखित पद्यांश की सन्दर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 6

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि कहा करिहै कोई।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद मीराबाई के पद से उद्धृत है। इसकी रचयिता मीराबाई हैं।

प्रसंग—मीराबाई का श्री ष्ण के प्रेम और भि का वर्णन किया है।

व्याख्या—मीराबाई कहती हैं कि मेरे तो सबकुछ ष्ण हैं और कोई दूसरा नहीं। जिसके सिर पर मोर पंख लगे हुए मुकुट है वही मेरे पति हैं। मैं अपने वंश की मर्यादा को खोकर भाई, बंधु, माता, "ता कोई नहीं है। कोई मुझे क्या रोकेगा मैं तो अपनी लोकलाज खोकर चुनरी की जगह लोई ओढ़ती हूँ। मैंने अपने गले में मूँगे मोती की माला की जगह पर वनमाला को धारण कर लिया है।

अथवा

सोभित कर नवनीत लिए ।
घुटुरनि चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।।
चारु कपोल लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मन मत्त मधुपगन, मादक मधुहि लिए।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सूरदास के पद नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता धर्मवीर भारती जी हैं।

प्रसंग—इस पद में कवि ने ष्ण के बाल सौन्दर्य का प्रभावशाली चित्रण किया है।

व्याख्या—सूरदास जी कहते हैं कि श्री ष्ण का शरीर धूल से सना हुआ है। उनके मुख

पर मक्खन का लेप लगा हुआ है। उनका सुन्दर रूप शोभायमान है। वह घुटने के बल चल रहे हैं। उनके बाल बड़े सुन्दर और आँखें चंचल, माथे पर तिलक लगाये हुए हैं, उनके बालों में लटें बिखरे हुई जैसे भँवरा नशे में मुग्ध होकर नशे में मस्त है। उनका चेहरा फूल के समान खिला हुआ है। लटें ऐसी लग रही हैं कि भँवरें मँडरा रहे हैं। ष्ण गले में कंठ माला पहने हैं, उसमें शेर के नाखून लगे हुए हैं जो हृदय की शोभा बढ़ा रहे हैं। वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली है जिसने ष्ण के इस मनमोहक रूप को देखा हो, उस मनुष्य का जीवन सफल हो जाता है।

विशेष—माधुर्यगुना उत्प्रेक्षा अलंकार आदि।

प्रश्न 13. फोटो और ग्राफिक में क्या अन्तर है ? लिखिए। 6

उत्तर—अखबारों में प्रकाशित होने वाले फोटो भी एक प्रकार के समाचार का काम करते हैं। ये अपने आप में सम्पूर्ण समाचार भी होते हैं और समाचारों के पूरक भी। एक घटना पर प्रकाशित अनेक फोटो फोटो-फीचर कहलाते हैं। इनके माध्यम से घटना के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया जाता है। फोटो अखबार का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

ग्राफिक सूचनाओं और चित्रों का एक मिला-जुला रूप है। इसके चित्र हाथ से या कम्प्यूटर से बनाए जाते हैं। इसमें आँकड़े व सूचनाएँ चित्रों अथवा चित्रों के साथ दी जाती हैं। बड़ी घटनाओं के साथ ग्राफिक अवश्य दिया जाता है।

अथवा

प्रश्न—हमारे जीवन में समाचारों की क्या उपयोगिता है ?

उत्तर—समाज के हर व्यि के लिए समाचारों की उपयोगिता होती है, चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो, व्यापारी हो, राजनेता हो, किसान हो या कोई कर्मचारी हो, चाहे देश-विदेश की राजनीति के बारे में जानना हो, राज्य अथवा जिले की सूचनाएँ प्राप्त करनी हों, सरकारी नीतियों की जानकारी प्राप्त करनी हो या रोजगार के अवसर तलाशने हों, खेती-किसानी से जुड़े मामले जानने हों या व्यापार- कारोबार के समाचार, खेलों की हलचल जाननी हो या फैशन और फिल्मों की खबरें सब कुछ समाचारों के दायरे में आता है।

समाचार लोगों को न केवल जानकारियाँ देकर शिक्षित करते हैं, बल्कि जनता की समस्याओं को भी उठाते हैं और उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं।

प्रश्न 14. नीचे लिखे अपठित अंश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 6

तैराकी आनन्द की वस्तु होने के साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आस-पास के गाँवों के लोग सड़क मार्ग न होने पर भी एक-दूसरे से तभी मिल सकते हैं जब उन्हें तैरना आता हो, अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीन काल में नावें कहाँ थीं ? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किन्तु तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं है। जल में मछली आदि जल जीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे-धीरे उसने इस कार्य में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

(क) प्राचीन काल में तैराकी मनुष्य की आवश्यकता क्यों थी ?

उत्तर—प्राचीन काल में सड़कें न होने के कारण मनुष्य तैरकर आस-पास के गाँवों में आया-जाया करते थे। वे एक-दूसरे से मिलते थे इसलिए तैराकी की आवश्यकता थी।

(ख) आज तैराकी को एक कला क्यों मानते हैं ?

उत्तर—आज विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है। तैराकी में जल जीवों की तरह मनुष्य भी स्वच्छंद विचरण कर सकते हैं। इसलिए यह एक कला के रूप में जानी जाने लगी है।

(ग) तैराकी व्यायाम है या खेल अथवा दोनों ? सही तर्क देते हुए लिखिए।

उत्तर—तैराकी मनुष्य को स्वस्थ बनाती है, इस दृष्टि से तैराकी एक व्यायाम है। तैराकी का खेलों में प्रमुख स्थान है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं उनमें तैराकी अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है इसे एक कला के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार तैराकी कला और व्यायाम दोनों है।

(घ) इस अनुच्छेद का एक तिहाई शब्दों में सार लिखिए।

उत्तर—तैराकी एक मनोरंजन व हमारी आवश्यकता है। प्राचीन काल में गाँवों के लोग सड़क मार्ग नहीं होने से एक-दूसरे से मिलने तैरकर ही आते-जाते थे। तैरने से मनुष्य को परिश्रम करना पड़ता है। क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की तरह जन्मजात तैरने की क्षमता नहीं होती है। जल जीवों को स्वच्छन्द विचरण करते देख मनुष्य भी तैरना सीख गया। आज विश्व में तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

(ङ) अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर—मनुष्य के जीवन में तैराकी का महत्व।

प्रश्न 15. अपने "ताजी को एक पत्र लिखिए जिसमें अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी का उल्लेख हो। **6**

रायपुर
न्यू शान्ति नगर, रायपुर
15 दिसम्बर, 2013

पूज्य "ताजी,

प्रणाम !

आपका पत्र आलोक द्वारा प्राप्त हुआ। मैं इन दिनों अपनी अर्द्ध-वार्षिक परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हूँ। मैं प्रात:काल शीघ्र उठ जाता हूँ और मनोयोग से अध्ययन में व्यस्त हूँ। मैं प्राय: 9-10 घण्टे प्रतिदिन अध्ययन कर रहा हूँ। मैंने सभी विषयों की सन्तोषजनक तैयारी कर ली है, परन्तु गणित में कठिनाई आ रही है। इसके लिए मैं कोचिंग की व्यवस्था करना चाहता हूँ। मुझे कुछ उपयोगी पुस्तकों की आवश्यकता है, अत: आप ₹ 500 मनीऑर्डर से भेजने की पा करें।

पूजनीय माताजी को चरण-स्पर्श एवं बबलू और नन्हीं को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
देवेश साहू

अथवा

प्रश्न—अपनी शाला के प्राचार्य को एक आवेदन-पत्र लिखिए जिसमें स्वास्थ्य खराब होने के कारण तीन दिन की छुट्टी देने हेतु निवेदन किया गया हो।

सेवा में,

प्राचार्य महोदय,
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दुर्ग

विषय—अस्वस्थता हेतु आवेदन-पत्र।

मान्यवर विनम्र निवेदन है कि अचानक ज्वर से ग्रस्त हो जाने के कारण मैं विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। बुखार के कारण बहुत कमजोरी आ गई है तथा चिकित्सक ने आठ दिन तक विश्राम करने की सलाह दी है। अत: दिनांक 4.9.2010 से 11.9.10 तक का अवकाश प्रदान करने की पा करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुशील

दिनांक 4.9.2010

प्रश्न 26. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए— **10**

(1) विज्ञान वरदान या अभिशाप

(2) राष्ट्रीय पर्व

(3) पर्यावरण प्रदूषण
(4) छात्र जीवन में अनुशासन का महत्व
(5) भारतीय विज्ञान।

1. विज्ञान वरदान या अभिशाप

रूपरेखा—1. प्रस्तावना, 2. विज्ञान के आविष्कार, 3. विज्ञान के चमत्कार, 4. विज्ञान से हानि, 5. उपसंहार।

उत्तर—वर्तमान युग विज्ञान का युग है। हम आज जिस ओर भी देखते हैं उधर ही विज्ञान का बोलबाला नजर आता है। ऐसा लगता है जैसे विज्ञान के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। पग-पग पर उसे विज्ञान की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। वास्तव में विज्ञान ने जो चमत्कार किया है, उसे देख आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। जिन बातों की हम कल्पना नहीं कर सकते, विज्ञान ने उन्हें सम्भव बना दिया है। आज विज्ञान के आविष्कारों का प्रभाव हमें जीवन के चारों ओर दिखाई देता है। विज्ञान ने अन्धों की आँखें, बहरों को सुनने की शि तथा लंगड़ों को टाँगें दी हैं। इस प्रकार विज्ञान का प्रभाव सभी ओर दिखाई पड़ता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित असंख्य आविष्कारों को विज्ञान ने जन्म दिया है। यदि उन सबकी गणना की जाये तो एक मोटी पुस्तक बन जाये। दूरस्थ स्थान सम्बन्धी आविष्कार को ही लीजिए। पहले यात्रा करने में कितनी कठिनाई होती थी। समय, शक्ति और धन तीनों ही अधिक लगते थे, परन्तु अब रेल में बैठकर चाहे जहाँ जाया जा सकता है। वायुयान में बैठकर पक्षियों की भाँति आकाश में उड़ा जा सकता है। जलयानों में बैठकर दूर-दूर देशों का भ्रमण किया जा सकता है।

आधुनिक युग में विद्युत विज्ञान का सबसे आश्चर्यजनक आविष्कार है। यह तो अलादीन का चिराग है। हल्के से स्विच दबाओ, लीजिए हो गया सारा घर प्रकाशमान। इतना ही नहीं विद्युत के द्वारा पंखे, रेडियो, हीटर, टेलीविजन आदि अनेक वस्तुएँ चलती हैं। विद्युत के द्वारा हम गर्मियों में ठण्डक पाते हैं और सर्दियों में ऊष्मा। विद्युत् द्वारा हम अपना भोजन पका सकते हैं। आधुनिक युग में विद्युत के इतने आविष्कार हैं कि उन्हें गिनाया नहीं जा सकता।

विज्ञान ने आज मनोरंजन के रूप को बदल दिया है। आज ऐसा कौन है जिसने सिनेमा द्व ारा अपना मनोरंजन न किया हो। रेडियो द्वारा तो हम घर बैठे ही सुन्दर संगीत, ज्ञान-विज्ञान की बातें और अपने नेताओं के सुन्दर भाषण सुन सकते हैं और टेलीविजन द्वारा उन सभी को आँखों देख सकते हैं। यही नहीं विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में परम उपयोगी है। बिजली के आविष्कार ने हमारे दैनिक कार्यों को इतना सुगम बनाया है कि देखकर दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ती है।

विज्ञान द्वारा तो समाचार और भी शीघ्रता से भेजे जा सकते हैं। फोन द्वारा हम सैकड़ों मील दूर बैठे अपने मित्र से उसी प्रकार बातचीत कर सकते हैं जैसे वह हमारे सामने बैठा हो। तार द्व ारा हम कुछ ही मिनटों में अपना संदेश दूसरी जगह भेज सकते हैं। बेतार के तार से तो अमेरिका के समाचार भी हम अपने घर में बैठकर जान सकते हैं। समाचार भेजने के इन सुगम साधनों ने आज व्यापारिक जगत में त्र ान्ति कर दी है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अद्‌भुत चमत्कार किये हैं। एक्सरे द्वारा शरीर के समस्त भीतरी अंगों की छानबीन की जा सकती है। इसके अतिरिक्त विज्ञान ने कठिन से कठिन रोगों को दूर करने की औषधियों का निर्माण किया है। विभिन्न प्रकार की दवाइयाँ; जैसे—पैनिसलीन, क्विनेन इत्यादि ने रोगों को दूर कर दिया है। कुष्ठ रोग तथा कैंसर अब असाध्य नहीं हैं। विज्ञान के कारण मनुष्यों का जीवन दीर्घ हो गया है।

घरेलू जीवन में भी विज्ञान का चमत्कार दिखाई देता है। आज विज्ञान का लक्ष्य मानव को प्रत्येक साधन सुलभ कराकर उसके जीवन को सुखी बनाया है। आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्त

करना अत्यन्त सुलभ है। विज्ञान के आविष्कारों के कारण प्रत्येक नगर व गाँव में कॉलेज स्था"त हो गये हैं। विभिन्न प्रकार के फाउण्टैन पेन पुस्तकें आदि विज्ञान के आविष्कार हैं। इसके अतिरि विज्ञान के दैनिक जीवन के अनेक प्रयोग देखे जा सकते हैं। इसके द्वारा बाढ़ के विनाशकारी प्रकोप से बच जा सकता है। भूकम्पों का पहले से ही पता लगाया जा सकता है। विज्ञान के द्वारा आँधी, तूफान, गर्मी, शीत आदि से रक्षा की जा सकती है। इस प्रकार विज्ञान का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगत है।

विज्ञान ने जहाँ मनुष्य के लिए उपयोगी आविष्कारों को जन्म दिया है वहाँ उसने युद्ध सम्बन्धी अनेक विनाश के साधनों को हमारे सामने रखा है। टैंक, तोप, मशीनगनों का तो आज के युद्ध के अवसरों पर खुलकर प्रयोग होता है। परमाणु बम द्वारा तो क्षण में ही लाखों व्य ियों का संहार किया जा सकता है। इस प्रकार विज्ञान ने जहाँ मानव के कल्याण के लिए अद्‌भुत कार्य किये हैं, वहाँ उसने विनाश का मार्ग भी तैयार किया है। अणु बम व परमाणु बमों के विध्वंसक प्रभाव का दृश्य हिरोशिमा व नागासाकी में देखा जा चुका है।

अत: एक ओर विज्ञान के अनेक लाभ हैं तो दूसरी ओर इससे कुछ हानियाँ भी हैं। विज्ञान ने मानव को अकर्मण्य तथा विलासी बना दिया है। सब भौतिक सुख प्राप्त होते हुए भी वह प्रसन्न व चिन्तारहित नहीं है। विज्ञान के युद्धकालीन आविष्कार तो मनुष्य जाति के लिए अत्यन्त घातक हैं। आज सारा विश्व बारूद के ढेर पर टिका हुआ है। एक दियासलाई की तिल्ली दिखाने की जरूरत है, सारा संसार धू-धू करके जल उठेगा। शायद आधुनिक युग में प्रलय का कारण विज्ञान के वे ही अस्त्र होंगे जिन्हें मानव ने अपनी रक्षा के लिए बनाया है।

यही नहीं विज्ञान ने आज हमें परावलम्बी बना दिया है। बिना विज्ञान के आज हम कुछ नहीं कर सकते। पग-पग पर हमें उसकी सहायता की आवश्यकता होती है। फिर भी विज्ञान की उपयोगिता को भुलाया नहीं जा सकता। नित्य प्रति नये आविष्कारों में वह संलग्न है। हमें चाहिए कि हम विज्ञान युग में खोजी हुई वस्तुओं का उपयोग मानव जाति के कल्याण के लिए करें। युद्ध सम्बन्धी वैज्ञानिक आविष्कारों पर रोक लगायें तभी विज्ञान मानव जाति के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है।

2. राष्ट्रीय पर्व

रूपरेखा—1. प्रस्तावना—स्वतन्त्रता का महत्व, 2. 15 अगस्त का महत्व, 3. मनाने की तैयारी, 4. मनाने की विधि, 5. उपसंहार—हमारा कर्तव्य।

स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई भी परतन्त्र होकर उन्नति नहीं कर सकता। परतन्त्रता में उसे अपने स्वामी की उचित और अनुचित आज्ञाओं का पालन करना पड़ता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि स्वतन्त्रता से मिलने वाली सूखी रोटी परतन्त्रता के पकवानों से हजार गुनी अच्छी होती है। इसीलिए सभी लोग स्वतन्त्रता चाहते हैं। कहा है—**'पराधीन सपनेहु सुख नाहिं'**। इसलिए स्वतन्त्रता हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

हमारा देश सैकड़ों वर्षों की परतन्त्रता के बाद 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतन्त्र हुआ। यह दिन हमारे देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। तभी से 15 अगस्त का दिन हमारे देश का पुनीत राष्ट्रीय पर्व बन गया है और हम प्रति वर्ष बड़े उल्लास और उमंग के साथ इसको मनाते हैं। 15 अगस्त का यह स्वतन्त्रता उत्सव उन शहीदों की स्मृति का दिवस है जिन्होंने उसी दिन को पाने के लिए अपने जीवन का सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

स्वतन्त्रता दिवस को मनाने के लिए हमारे विद्यालय में जोर-शोर से तैयारी होने लगी। छात्रों ने अनेक कार्यक्रम तैयार किये। राष्ट्रीय झण्डे को सँभालकर ठीक किया। हमारे विद्यालय के प्र ाानाचार्य ने स्वतन्त्रता दिवस की अध्यक्षता के लिए नगर के एक वयोवृद्ध सेनानी को आमन्त्रित किया। इसके साथ ही कई नेताओं को भी आमन्त्रित किया गया। दो दिन पहले सारे विद्यालय की सफाई की गयी। स्वतन्त्रता दिवस को मनाने की पूरी तैयारी में छात्रों का सहयोग भी लिया गया।

15 अगस्त का यह राष्ट्रीय पर्व सारे देश में बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रात:काल छोटे-बड़े सभी नगरों में प्रभात फेरियाँ निकलती हैं। सरकारी कार्यालयों तथा विद्यालयों में तिरंगा झण्डा फहराया जाता है। बड़े-बड़े नेताओं के भाषण होते हैं जिसमें स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदों के प्रति राष्ट्र की ओर से सभी अपनी तज्ञता प्रकट करते हैं तथा भविष्य में राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए शपथ लेते हैं। हमारे विद्यालय में लगभग 9 बजे झण्डा फहराया गया और राष्ट्रीय गान 'जन-मन-गन अधिनायक' को सस्वर गाया गया। अध्यापकों तथा नेताओं के भाषण होने के बाद बालकों को मिटाई बाँटी गयी। दोपहर को खेलकूद के आयोजन किये गये। अन्य स्थानों की भाँति हमारे विद्यालय में भी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि के समय विद्यालय में प्रकाश किया गया। इस प्रकार सुबह से शाम तक सारा दिन बड़े आनन्द और उल्लास से व्यतीत हुआ।

15 अगस्त हमारे देश का पुनीत दिवस है। जिस स्वतन्त्रता को अपने सैकड़ों शहीदों की कीमत पर प्राप्त किया है उसे सहज ही नष्ट न होने दें, बल्कि उसकी रक्षा तन-मन और धन से करें। देश के बच्चे-बच्चे को इसके लिए सचेष्ट रहना चाहिए। इस दिन हमको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि देश की रक्षा के लिए हम अपना सब कुछ न्यौछावर कर देंगे।

"जिये तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।"

3. पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण क्या है, (3) प्रदूषण के कारण, (4) प्रदूषण रोकने के उपाय।

प्रस्तावना—गंगा मैली हो गई, गलियों से बदबू आ रही है, आकाश विषैली धूलों और ध ुओं से भर उठा है, वायुमण्डल विषा हो गया है। प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल हो गई कि लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

प्रदूषण क्या है ?—जल, वायु व भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में होने वाला कोई भी अवांछनीय परिवर्तन प्रदूषण है। एक ओर दुनिया तेजी से विकास कर रही है, जिन्दगी को सजाने-सँवारने के नये तरीके ढूँढ़ रही है, दूसरी ओर वह तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इस प्रदूषण के कारण जीना दूभर होता जा रहा है। आज आसमान जहरीले धुएँ से भरता जा रहा है। नदियों का पानी गन्दा होता जा रहा है। सारी जलवायु, सारा वातावरण दूषित हो गया है। इसी वातावरण प्रदूषण का वैज्ञानिक नाम है—प्रदूषण या 'पॉल्यूशन'।

प्रदूषण के कारण—आज सारे विश्व के समक्ष जनसंख्या की वृद्धि सबसे बड़ी समस्या है और पर्यावरण प्रदूषण में जनसंख्या की वृद्धि ने भी अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। औद्योगीकरण के कारण, आए दिन नये-नये कारखानों की स्थापना की जा रही है, इनसे निकलने वाले धुएँ के कारण वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है। साथ ही मोटरों, रेलगाड़ियों आदि से निकलने वाले धुएँ से भी पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इनके कारण साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का मिल पाना मुश्किल है।

वायु के साथ-साथ जल भी प्रदूषित हो गया है। नदियों का पानी दूषित करने में बड़े कारखानों का सबसे बड़ा हाथ है। कारखाने का सारा कूड़ा-कचरा नदी के हवाले कर दिया जाता है, बिना यह सोचे कि इनमें से बहुत कुछ पानी में घुल जाएँगे, जिससे मछलियाँ मर जायेंगी और मनुष्य के पीने योग्य नहीं रह जाएगा।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय—वायु प्रदूषण को रोकने के लिए चिमनियों में फिल्टर लगाये जायें, जो प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमण्डल में प्रविष्ट न होने दें। जल-प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है कि जल स्रोतों में गन्दे पानी को न डाला जाये तथा उद्योग-धन्धों से निर्गत पानी को भूमिगत किया जाये। पर्यावरण संरक्षण के लिए वनों की रक्षा पर विशेष बल दिया जाना

चाहिए। वृक्ष और वनस्पतियाँ वायुमण्डल से कार्बन-डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं तथा ऑक्स. ीजन छोड़ते हैं। अगर वृक्ष तथा वनस्पतियाँ न हों तो पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाले वाहनों, कारखानों और प्राणी जगत् द्वारा छोड़ी हुई कार्बन-डाइऑक्साइड से सम्पूर्ण वातावरण भर जाएगा। वृक्ष पर्यावरण सन्तुलन के सर्वोत्तम साधन हैं। अत: हम अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण प्रदूषण की हानियों से बच सकते हैं।

यदि चाहते हो देश की सुरक्षा,
तो प्रकृति को सुरक्षित करना होगा।
यदि नहीं करते प्रदूषण से सुरक्षा,
तो कैसे हो पायेगी आत्मरक्षा।।

4. छात्र जीवन में अनुशासन का महत्व

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन का महत्व, (3) उपसंहार।

प्रस्तावना—अनुशासन व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र सबको महान् बनाता है। विशेषकर छात्र जीवन तो अनुशासन प्रधान होता है। इसके बिना छात्रों में अच्छे संस्कार नहीं डाले जा सकते। अध्यापन कार्य ठीक से नहीं किया जा सकता। अच्छी पढ़ाई, अच्छे संस्कार एवं गुणों के विकास के लिए अनुशासन आधारशिला का काम करता है।

विद्यार्थी जीवन का महत्व—विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा "ण्ड है, जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह, सौहार्द, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करता था। जहाँ उसे विद्या अध्ययन के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग-तपस्या, धर्म-कर्म, सत्य-निष्ठा, शुद्ध आचार-विचार आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमारे धर्म ग्रन्थों में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिन: पंच लक्षमणम्॥

अर्थात् विद्या-धन चाहने वाले के पास कौए जैसी लगन, बगुले जैसा एकाग्र ध्यान, कु ो जैसी अल्प एवं सचेत निद्रा, घर से दूर रह सकने वाला स्वभाव, आवश्यकता से कम भोजन करने जैसा संयम रहना चाहिए। ये पाँच गुण विद्यार्थी को विद्या अर्जन करने में तो सहायता करते ही हैं बल्कि आगामी स्वर्णिम जीवन के भी आधार हैं। उक्त पाँच लक्षणों से युक्त विद्यार्थी प्राचीनकाल में राजा तक से उचित मान-सम्मान प्राप्त करता था। वह सदाचार का प्रतीक माना जाता था।

जो छात्र अपने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ता, उसका सम्पूण ॅ जीवन अन्धकारमय हो जाता है। छात्र जिस गम्भीर ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय में आते हैं, उसे पाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार—जिस ध्कार किसी भवन या इमारत की चिरस्थिरता और दृढ़ता उसकी नींव की मजबूती पर अवलम्बित है, उसी ध्कार किसी व्यक्ति के जीवन की सुख-समृद्धि, शक्ति और सफलता उसकी अनुशासित छात्रावस्था पर निर्भर है। **गाँधी जी** ने कहा— अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही कार्य करता है, जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज।"

5. भारतीय किसान

रूपरेखा—1. प्रस्तावना, 2. षक की स्थिति, 3. षक की दिनचर्या, 4. षक की दशा, 5. शासकीय प्रयास, 6. उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—

नभ तल के नीचे दूर तक, सुन्दर खेतों के बीच घिरा।

है दूर बसा टूटा सा जो, वहीं है अपना गाँव मेरा।।
कृषकाय सी टूटी खटिया पर, मानो कोई संन्यासी है,
हुक्के की गुड़-गुड़ जो करता, वह मेरे गाँव का वासी है।

जेठ का महीना है। चिलचिलाती धूप पड़ रही है। भगवान अंशुमाली अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुके हैं। गर्म लू चल रही है, पशु-पक्षी भी प्यास से व्याकुल होकर इधर-उधर आश्रय प्राप्त करने के लिए भाग रहे हैं। परन्तु ऐसी भीषण दोपहरी में भी किसान को आराम कहाँ ? वह तो हल-बैल लेकर अपने खेत की जुताई में व्यस्त है। वह तो त्याग और परोपकार की मूर्ति है। **डॉ. रामकुमार वर्मा** ने तो किसान को ग्राम देवता की उपाधि दी है—

हे ग्राम देवता नमस्कार !
सोने चाँदी से नहीं किन्तु मिट्टी से किया तुमने प्यार।
हे ग्राम देवता नमस्कार !

(2) कृषक की स्थिति—खेत की मिट्टी ही किसान के लिये सोना है, हल-बैल ही उसकी पूँजी है। भारत एक षि प्रधान देश है। यहाँ की 75% जनता किसान है। रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की तीन पहली आवश्यकताएँ हैं। इनमें रोटी सर्वप्रमुख है। उदरपूर्ति के पश्चात् ही अन्य किसी आवश्यकता के विषय में सोचा जा सकता है। किसान राष्ट्र को जीवन देता है। अतः सबसे बड़ा देशभ भी वही है। वही सबको रोटी देता है, परन्तु खुद अधभरे पेट ही सो जाता है।

"हे घास-फूँस की झोंपड़ियाँ, इनमें जीवन चलता है।
दिन रात परिश्रम में "सता है, टुकड़ों में कृषक पलता है।।"

(3) कृषक की दिनचर्या—लेकिन अपना खून-पसीना एक कर देने पर भी क्या मिलता है षक को ? देश का कैसा दुर्भाग्य है कि राष्ट्र के भाग्य विधता को भी समाज में ज्यादा सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। कड़कड़ाती ठंड हो या सुहावना बसन्त, ब्रक्तमुर्हूत में उठकर किसान खेत पर जाता है। एक तपस्वी के समान अपने कार्य में संलग्न हो जाता है, और घर ? घर का तो बस नाम ही है। एक मड़ैया पड़ी हुई है, उसी के नीचे राष्ट्र का निर्माता जीवन-यापन कर रहा है। न उसे बंगलों के बनाने की लालसा है और न ही धनवान होने की। ये सब बातें उसके छोटे से मन में कैसे समाएँ ? क्योंकि वह चैन से गुजारा भी नहीं कर पाता है। फसल पककर तैयार हुई कि महाजन, साहूकार सीधे दरवाजा खटखटाते हैं। बेचारा दाने-दाने को मोहताज हो जाता है, तो वह रो पड़ता है—

"दिन रात किया श्रम है हमने,
पल एक भी चैन न पाया प्रभो।
ढँकने को शरीर न वस्त्र मिले,
भरपेट कभी न खाया प्रभो।"

(4) कृषक की दशा—हमारी सरकार किसानों की दशा सुधारने के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ; जैसे—ट्रैक्टर, रासायनिक खाद सभी कुछ तो उपलब्ध करा रही है। परन्तु जमींदार, प्रधान, साहूकार व बड़े-बड़े किसान ही इन सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। बेचारा गरीब किसान तो "सकर ही रह जाता है। गरीब लोगों को शिक्षा भी नसीब नहीं होती है। इसलिये वह बाहरी दुनिया से अपरिचित रह जाते हैं। उनकी दुनिया केवल उनके गाँव या कस्बे तक ही सिमटकर रह जाती है।

(5) शासकीय प्रयास—हमारी सरकार ने तो बहुत ही उपाय किये हैं। उन्नत खाद, ट्रैक्टर, ट्यूबबैल, बीज सभी की व्यवस्था की है। ग्रामीण बैंकों की व्यवस्था की है, लेकिन आवश्यकता है इन्हें प्रत्येक किसान तक पहुँचाने की। किसान का भारत की उन्नति में प्रमुख योगदान है। किसान ही भारत का भाग्य विधाता है। किसान हमें रोटी देता है। भारत सरकार किसानों के विकास के लिये आवश्यक प्रयास कर रही है। शिक्षा का प्रसार हो रहा है। आशा है भारत सरकार की योजनाएँ कारगर हो सकेंगी और भारत इक्कीसवीं सदी में पहुँच सकेगा।

(6) उपसंहार—किसान की अपनी समस्याएँ हैं। कभी अतिवृष्टि से उसकी फसल चा. पट हो जाती है तो कभी अनावृष्टि के कारण फसल सूख जाती है। खाद, बीज के मूल्य इतने बढ़े गये हैं कि किसान को अपनी लागत मूल्य भी नहीं मिल पाता है। इस कारण कुछ सम्पन्न षकों को छोड़कर सभी अभावों में जीते हैं। इसके लिये शासन को मध्यम कोटि के किसानों के लिए कुछ करना होगा ताकि भारत का किसान स्वयं को असहाय न समझे और भली-भाँति